
महाराष्ट्र की स्वयंसेवी संस्था/ संगठनों का विकास कार्य में योगदान

(पिछले 50 वर्षों का संक्षिप्त आकलन
और विकास कार्यों का लेखा-जोखा)



- लेखन/संकलन -
गौरी शास्त्री-देशपांडे
सचिव, महावन



प्रमुख मार्गदर्शक



सीमंतिनी खोत
महावन सल्लागार

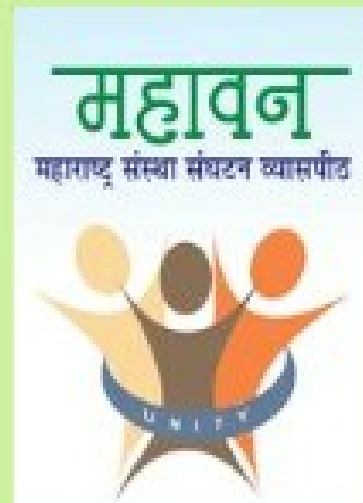


मिनी बेदी
महावन सल्लागार



दत्ता पाटील
महावन राज्य निमंत्रक

और



अमूल्य मार्गदर्शन के लिये विशेष आभार !

अनुक्रमणिका

अमूल्य मार्गदर्शन के लिये विशेष आभार	2
प्रस्तावना	5
महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र को प्रभावित करनेवाली विशिष्ट परिस्थितियाँ	8
पारिस्थितिकी संक्रमण	9
आज की तारीख में सामाजिक क्षेत्र की चुनौतियाँ	13
महाराष्ट्र के सामाजिक संस्थाएँ और विकास की सद्यस्थिति:	14
कृषि क्षेत्र :	15
महिला सशक्तीकरण	19
ग्रामीण विकास.....	20
ग्रामीण रोजगार :	21
बालहक्क में योगदान.....	22
आरोग्य.....	25
शिक्षा.....	27
आपदा प्रबंधन.....	32
कौशल विकास	35
धर्मार्थ कार्य और व्यक्तिसहाय कार्य	37
परिशिष्ट १ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक आंदोलन	40
परिशिष्ट २ : पंचवर्षीय योजनाओं में महाराष्ट्र का योगदान	42

परिशिष्ट ३ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक नेता और कार्यकर्ता	45
आंतरराष्ट्रीय मॅगसेसे अवॉर्ड से सन्मानित महाराष्ट्र के जेष्ठ समाजसेवी	47
परिशिष्ट ३ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक नेता और कार्यकर्ता	47
कार्यकर्ता दाम्पत्य का महाराष्ट्र के स्वयंसेवी क्षेत्र में योगदान	75
इस विशेष अध्ययन के लिए महाराष्ट्र के सामाजिक संगठन संगठनों से गूगल फॉर्म के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। तदनुसार, हम महाराष्ट्र से प्राप्त प्रतिक्रिया के अनुसार प्राप्त सूचनाओं का संग्रह संलग्न कर रहे हैं। इसके अलावा, दर्पण पोर्टल के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं का संग्रह भी संलग्न किया जा रहा है।	83
Podcast लिंक	84
परिशिष्ट ४ : संदर्भ सामग्री / दस्तावेज	85
सामाजिक संस्था संगठनों के कार्यकर्ताओं के अभ्यास लिए विविध विषयों पर विशेष लेख	86
Ms. Anjali Kanitkar.....	87
Mr. Datta Patil.....	107
Mr. Mohan Surve.....	112
Dr. Swati Dharmadhikari.....	125

प्रस्तावना

‘वाणी’ (Voluntary Action Network India) अलग अलग राज्यों के Civil Society Organizations (CSOs) सामाजिक संस्थाओं और संघटनाओं का राष्ट्रीय स्तर का नेटवर्क है। ‘वाणी’ सामाजिक क्षेत्र के विविध विषयों पर अध्ययन, विश्लेषण और समाधान प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण कार्य करता आ रहा है। वाणी का उद्देश्य न केवल सामाजिक क्षेत्र की उपलब्धियों और नवाचारों को सामने लाना है, बल्कि इन क्षेत्रों की समस्याओं और उनके संभावित समाधानों पर भी ध्यान केंद्रित करना है।

इसी विचार को मध्य नजर रखते हुए, वाणी ने भारत के तीन राज्यों—(झारखंड, छत्तीसगढ़, और महाराष्ट्र)— के सामाजिक संस्था और उनके योगदान का दस्तावेज़ उपक्रम उपक्रम किया है।

महाराष्ट्र में सामाजिक क्षेत्र का समाज के प्रति क्या योगदान रहा है, नयी परिस्थितियों का सामना करने के लिये क्या पहल की जा रही है? कौनसे नये मानदंड स्थापित किए हैं, और आने वाले दिनों में इस क्षेत्र को किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, इन सभी पहलुओं का गहराई से अध्ययन करना वाणी के इस प्रयास का एक अहम हिस्सा है। वाणीने यह अभ्यास महाराष्ट्र में करने हेतु ‘महावन’ (Maharashtra Voluntary Action Network) की भागीदारी ले ली है।

महावन, महाराष्ट्र की लगभग 1500 स्वयंसेवी / विकास संस्थाओं का संगठन (network) है। वाणी, से जुड़े हुए राज्यस्तरीय नेटवर्क में, महावन शायद सबसे बड़ा और सक्रिय संघटन है। महावन, विकास क्षेत्र में काम करनेवाले स्वैच्छिक संस्थाओं के हित में वकालत (advocacy) करता है, और विकास कार्यों को बढ़ावा देना, क्षमतावृद्धि, सूचना साझाकरण और विचारों का आदान-प्रदान करना आदि काम करता है। महावन ने आज तक विशेष रूप से लोकतांत्रिक सिद्धांतों के लिए बढ़ती चुनौतियों का सामना करने और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर शाश्वत विकास के लिये एकजुटता और सहयोग बढ़ावा देने का कार्य

किया है। लोकहित सामूहिक कार्रवाई करने हेतु नेताओं और विषयगत विशेषज्ञों के लिए महावन विशेष मंच बनाता है।

अध्ययन प्रक्रिया (प्रोसेस) और दायरा (स्कोप)

महावनने इस अध्ययन को एक समयोचित अवसर समझ कर, सामाजिक क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता और विचारवंत मार्गदर्शकों साथ प्रत्यक्ष संवाद / विचार-विमर्श गया। सद्य परिस्थिति, चुनौतियां और परिणामकारक प्रयास इनकी अनुभवजन्य (empirical) तथा अद्यतन जानकारी ली। इसके इलावा, विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध जानकारी का भी परामर्श लिया। परंतु, ध्यान गुणात्मक डेटा पर केंद्रित था। हमारा नमूना (sample) संस्थाओं की संख्या के तुलना में अल्पसंख्यक था, परंतु हमने इस बात का ध्यान रखा कि यह अध्ययन के उद्देश्य के लीये पर्याप्त और प्रतिशोधोदात्मक होगा।

अध्ययन शुरूवात मे ही ये तथ्य सामने आया कि महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र का कोई भी संपूर्ण और व्यापक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है। इंटरनेट और अन्य सोशल प्लेटफॉर्म पर प्राप्त जानकारी (देखिये परिशिष्ट 1) के साथ-साथ कार्यकर्ताओं के अनुभवों और विविध स्रोतों से मिली जानकारी को संयोजित कर यह दस्तावेज तैयार किया गया है।

जिन विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्र की, उनकी लिस्ट परिशिष्ट में है।

- महाराष्ट्र की 35,000 से जादा स्वयंसेवी संस्थाओं और संगठनों की (<https://ngodarpan.gov.in/>) उपलब्ध जानकारी प्राप्त की और उसका विश्लेषण किया, (२०१८ तक की जानकारी के अनुसार) । 'दर्पण' प्लॅटफॉर्म पर संस्थाए कबसे, कहा और क्या काम कर रही है - इसकी जानकारी मिलती है।
- महावन के 663 सदस्य संस्थाओं का डेटा बेस (जीन्होने गुगल फॉर्म भरा है) जिसमे इन संस्थाओं के इतिहास, वर्तमान और भविष्य की योजनाओं का अध्ययन किया गया।

- वाणी के अभ्यास के लिये एक विशेष गूगल फॉर्म बनाकर ऑनलाइन डेटा संग्रहित किया गया। महावन के 91 सदस्यों ने यह डेटा भरा। उनके प्रेरणा स्रोत, कार्यक्षेत्र, काम का परिणाम और योगदान - इसकी जानकारी हासिल दी।
- साथ ही, पिछले 40 -50 वर्षों से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय 50 से जादा सामाजिक नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया।

केवल काम नहीं योगदान

इस संवाद में सामाजिक क्षेत्र में पिछले चार दशकों में हुए बदलाव, चुनौतियों, कार्यशैली, योगदान और अन्य विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने का प्रयास किया गया।

हमने खासतौर पर इस बात पर जोर दिया कि महाराष्ट्र की परिस्थिति, नीती और सामाजिक संस्थाओंके काम में क्या खासियत रही, जिसे राज्य के बाहर भी मान्यता मिल रही है या मिलनी चाहिए। सरकारने कौन से गतिविधियोंको बड़े पैमाने पर कार्यान्वित करने हेतु GR निकाला अथवा विकास योजनाओं शामिल किया।

अध्ययन की सीमाएं (Disclaimer)

महावन यह दावा नहीं करता कि यह अध्ययन पूर्णतः परिपूर्ण है। यह दस्तावेज उपलब्ध संसाधनों, कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत अनुभवों, दृष्टिकोण और समझ के आधार पर तैयार किया गया है। चूंकि महाराष्ट्र के स्वयंसेवी क्षेत्र का कोई पूर्ण अध्ययन उपलब्ध नहीं था और लेखन के लिए समयसीमा सीमित थी, इसलिए इस दस्तावेज के 100% परिपूर्ण संभव नहीं था।

इस अध्ययन में उपलब्ध संसाधनों, व्यक्तियों और संपर्कों का प्रभावी और प्रमाणिक उपयोग करने का प्रयास किया गया है। परंतु, यह दस्तावेज महाराष्ट्र के सामाजिक संस्था/ संगठनों का प्रतिनिधित्व सारांश है। इस गहन विषय के और भी अनेक आयाम, दिशा-निर्देश, घटनाएँ, व्यक्ति, संस्थाएँ और मील के पत्थर हो सकते हैं जो संभवतः इस दस्तावेज में शामिल नहीं हो पाए हों।

महावन इस अधूरेपन को पूरा करने की दिशा में तत्पर है और सभी विद्वानों, विशेषज्ञों और अनुभवी व्यक्तियों से आग्रह करता है कि वे इस प्रक्रिया में शामिल होकर इसे भविष्य में और भी अधिक समृद्ध और पूर्ण बनाने में सहयोग करें। ताकी यह दस्तावेज महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र के लिए एक प्रेरक और उपयोगी आधार बनेगा।

महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र को प्रभावित करनेवाली विशिष्ट परिस्थितियाँ

धरोहर संपदा:

महाराष्ट्र में सामाजिक सुधार और स्वैच्छिक कार्य का एक लंबा इतिहास रहा है, यह जादातार जो स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार आंदोलनों में निहित हैं।

- सन 1896 में महर्षि कर्वे ने स्त्री शिक्षण संस्था / MKSSS की नींव डाली: महिला शिक्षा, विधवा विवाह, समानता और सादगी का प्रचार, जिसने पुरे महाराष्ट्र का ताना बाना बदलना शुरू किया।
- सन 1905 में गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा 'सर्वेट्स ऑफ इंडियन सोसाइटी'
- सन 1926 में मुंबई के नागपाड़ा में 'नेबरहुड हाउस' की स्थापना हुई। इसे अमेरिकी मराठी मिशन और क्लिफोर्ड मैनशार्ड जैसे अग्रणी व्यक्तियों का योगदान प्राप्त हुआ।
- सन 1936 में सर दोराबजी टाटा ग्रेजुएट स्कूल ऑफ सोशल वर्क (TISS) की स्थापना। सामाजिक कार्य के लिए व्यावसायिक पाठ्यक्रम आरंभ, जिसने भारत में व्यावसायिक सामाजिक कार्य के क्षेत्र को

नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। गूगल सर्च से प्राप्त जानकारी के अनुसार, महाराष्ट्र में 100 से भी अधिक महाविद्यालय हैं, जिनमें निर्मला निकेतन मुंबई, मातृसेवा संघ इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशलवर्क नागपूर, कर्वे इन्स्टिट्यूट, पुणे, CSRD अहमदनगर आदि मशहूर हैं।

पारिस्थितिकी संक्रमण

महाराष्ट्र के जिन सामाजिक आर्थिक राजकीय, भौगोलिक परिस्थिति ने सामाजिक क्षेत्र की विचारधारा और कामकाज को प्रभावित किया, उनका यह संक्षिप्त ब्योरा।

1. 1970 के पहले, सामाजिक संस्था / संगठनों की स्थापना मुख्य रूप से स्वतंत्रता आंदोलन से प्रभावित थी, देश भर में और इसलिए महाराष्ट्र में भी इस दरम्यान कई संस्थाएँ विकसित हुयीं। जो अपने संस्थापक नेताओं पर अधिक निर्भर थी, वह धीरे धीरे धीमे और निष्क्रिय हो गए, पर कुछ अभी भी सक्रिय हैं।
 - a. इनमें जादातर गांधीवादी संगठन थे - जैसे BAIF, मगन संग्रहालय, सर्व सेवा संघ, सेवाग्राम ..
 - b. कुछ संगठन वामपंथी विचारधाराओं के थे - जिनसे लाल सलाम संगठनों और ट्रेड यूनियनों का उदय हुआ। मुंबई मजदूर संघ और कामगार महासंघ जैसी संस्थाएँ श्रमिकों अधिकार के लिए संघर्ष करती थीं, उनका कार्यक्षेत्र फैक्ट्री और उद्योगों तक फैला हुआ था।
 - c. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े सामाजिक संगठन भी तबसे कार्यरत हैं - जैसे वनवासी कल्याण आश्रम ... लोककल्याण, जिनका मुख्यालय नागपुर है।
 - d. साथ साथ कई आध्यात्मिक गुरु / संप्रदाय सुधारवादी विचार लेकर समानता, सहकार, आपसी मिलजोल, सादगी, परोपकार जैसे मूल्यों को बढ़ावा देते आये हैं। - जैसे 700 वर्षों से वारकरी संप्रदाय, पिछले 100 साल से संत गाडगे महाराज, संत तुकडोजी महाराज, संत साईबाबा और स्वाध्याय परिवार आदी विचारप्रवाह कार्य कर रहे हैं।

- e. यह उल्लेख करना अजीब लग सकता है, की विदर्भ में मौजूद नक्सली आंदोलन, 'वंचितों' के पक्ष में यथास्थिति को चुनौती देता आया है। उनके कार्यपद्धती पर अलग राय हो सकती है, उन्होंने खास करके आदिवासी अस्मिता को बढ़ावा दिया।
- f. सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक सुधारों के लिए कई आंदोलनों की भी निर्मित हुयी - जिनका राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रसार हुआ। समस्याओं को उजागर करके, समाधान के लिए GR, ठोस कानून और सरकारी प्रस्ताव बनाए गये। (परिशिष्ट 3)
2. 1970 के दशक में महाराष्ट्र की प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक आपदाएँ और राजनीतिक उथल-पुथल का सामाजिक / विकास कार्यों पर भारी परिणाम हुआ!
- a. 1972 का गंभीर सूखा: भूख, कुपोषण, गरीबी और पलायन का कारण बन गया। रोजगार की आवश्यकता और मांग देखकर अनेक सामाजिक संगठनोंने मजदूरी देने हेतु सार्वजनिक काम (परकोलेशन टैंक, गाव की सड़के आदि) निर्माण करने के लिए सरकार पर दबाव डाला; मजदूरोंको भोजन, बच्चों के लीये क्रेश / डे केयर सुविधा, महिलाओं को मातृत्व अवकाश, उचित मजदूरी, भ्रष्टाचार पर काबू - इसलीये ग्रामायन, अफार्म, जैसी संस्थाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। महाराष्ट्र में शुरू हुई रोजगार हमी योजना का 2006 SE राष्ट्रीय स्तर पर रोजगार गारंटी योजना (MREGS) में रूपांतर हो गया। जो महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र की प्रमुख रूप से देन थी।
- b. 1972 का नामांतर आंदोलन: दलितों द्वारा औरंगाबाद में एक विश्वविद्यालय का नाम बदलकर डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर विश्वविद्यालय करने के लीये 1972 से भरकस प्रयास हुए, और 1994 में नामांतर हो गया। आंदोलन में दलितों पर हिंसा और हर तरह से दबाव डाला गया। इससे दलितों में आपसी एकता और आत्मसम्मान में वृद्धि हुई थी। इस आंदोलन ने बहुत सारे युवा दलित नेताओं को तैयार किया जिन्होंने शिक्षा और गरीब तबको के दलित परिवारोंका सशक्तिकरण और आरक्षण का काम किया। दलित पेंथर जैसी संगठना इसी दौरान मजबूत हुयी (१९७२-१९८०),

c. 1976 की Emergency/ आपातकाल की स्थिति: मे अपने मौलिक अधिकारों का दावा करने के लिए नागरिकों का उत्थान हुआ और जनता दल लोकतांत्रिक राजनीतिक मोर्चे के रूप में उभरा, जिसने जनता के वास्तविक विकास का दावा किया THAA

3. 1980 का दशक: आंदोलनोंसे भरा था

a. 1979 कापड मिल हड़ताल: मुंबई में हुई कपड़ मिल की बहुत बड़े तादाद में वृद्धिके लिए महाराष्ट्र के अलग-अलग विभागों से लोगों ने गांव छोड़कर पलायन किया था। यह पलायन खास करके कुटुंब की आमदनी बढ़ाना इसी उद्देश्य किया हुआ था। लेकिन कुछ ही सालों में कारखाने / मिल्स बंद होने के कारण श्रमिक और उनकी अगली पीढ़ी दोनों बहुत प्रभावित हुए। इसमें सेबहुत जन महाराष्ट्र के विभिन्न गैर सरकारी संगठनों में जुड़ गए।

b. शेतकरी संगठन आंदोलन (१९८० के दशक): इससे निकलने वाली सकारात्मक चीजों में से एक शायद एपीएमसी है, जो खुले बाजार में किसानों की लूट न हो जो इसलिए थी। शुरु में उन्हें खुले बाजारों में किसानों की सुरक्षा के लिए इष्टतम दर देने के लिए थी, लेकिन गत कुछ वर्षों से यह तो सही मायने में लूट करने के अड्डे बन गए क्यो की, इसमें एक दूरदर्शी नेता नहीं था।

4. 1991 वैश्वीकरण और प्राकृतिक संकट : गंभीर आर्थिक संकट, बढ़ती मुद्रास्थिती को काबू मे लाने के लीये वैश्वीकरण विकल्प था। जिसमें विनियमन, निजीकरण और अर्थव्यवस्था को विदेशी व्यापार और निवेश के लिए खोला गया। इससे अंतर्राष्ट्रीय संसाधनों तक पहुंच बढी, और विकास कार्यों के लिए वित्त पोषण का स्रोत भी बढने लगा । वाणिज्यिक राजधानी होने के कारण, मुंबई सहित पुरे राज्य मे सामाजिक काम प्रभावित हुआ। इसमें विदेशी सहायता पर निर्भरता भी बढी और धिरे धिरे सरकार सख्त नियमों के अनुपालन का आग्रह करने लगी। यह एक टर्निंग पॉइंट था। विकास परियोजनाओं के लिए विदेशी धन में इतनी वृद्धि हो गयी की सामाजिक संस्थाओं की संख्या मे भी

बढत हुयी । बहुपक्षीय एजेंसियों (जैसे, विश्व बैंक, यूएनडीपी) और अंतर्राष्ट्रीय दाता संगठनों (जैसे, यूएसएआईडी, डीएफआईडी) ने शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में विभिन्न पेहलू का समर्थन करना शुरू किया। परिणामतः कुछ पारंपरिक धन स्रोत, परोपकारी अनुदान (individual Charitable donations) कम होने लगे, जो छोटे जमीनी संगठनों से, बड़े पैमाने पर परियोजनाओं या सरकारी सहयोग की ओर स्थानांतरित हो गए।

a. **1990 एनरॉनः** पर्यावरणीय अस्थिरता की प्राप्ति और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और सुरक्षा की आवश्यकता रेखांकित हो गई। आजीविका की निरंतरता को प्राथमिकता देना आवश्यक है इसपर जनजागृती हुई।

b. **1993 लातूर भूकंप** : मराठवाड़ा के विनाशकारी भूकंप ने सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को उजागर किया और आपदा प्रबंधन सुधारों को प्रेरित किया। सकारात्मक परिणाम यह हुआ की संगठन बढे, उनके लीये पैसा आया, और उनके अससेट्स भी बढे। और नकारात्मक प्रभाव यह पडा की संस्थाओं को funding की अडत होने लगी।

c. **1990 नर्मदा बचाओ आंदोलनः** इन आंदोलनों दौरान जिस प्रकार से कार्यकर्ता निर्माण हुआ इस तरह बड़े पैमाने पर विविध विशिष्ट प्रश्नों के लिए कार्य करने वाली संस्था संघटनाएं भी निर्माण हुई, जो आज भी सामाजिक दायित्व निभा रहे हैं

5. 2020 : वैश्विक विकास लक्ष्यों पर ध्यान (MDG/ SDG)

वैश्वीकरण के बाद, भारत में विकास कार्य सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों (एमडीजी)) और बाद में सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) जैसे वैश्विक एजेंडा के साथ अधिक निकटता से जुड़े।

इस दशक के दौरान विकास वित्त पोषण पैटर्न बदल गया।

- २००२ शाश्वत शेती / कोन्त्रेचकत फार्मिर्मग विरोध/ वादा न तोडो/ sdg प्रक्रिया/ WE कॅन/

- **2011: अण्णा हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन:** ने यह प्रदर्शित किया कि लोक सहभाग और अहिंसक अभियान कैसे जनसमर्थक नीतियों को सुविधाजनक बना सकते हैं। लोकतांत्रिक तरीकों से व्यापक विकास के रातेगण सिद्धि मॉडल को सरकार “आदर्श ग्राम विकास योजना” में स्वीकृत किया और आर्थिक प्रावधान दिया।
- **2013 CSR / कॉर्पोरेट सेक्टर के सामाजिक उत्तरदायित्व:** सीएसआर जनादेश से लिए सेक्टर को सकारात्मक शक्ति और धन प्राप्त होने लगा है. सामाजिक संस्थाए अपने प्रभाव को बढ़ाने में सक्षम हो रही हैं, लेकिन कॉर्पोरेट प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करने और अपने स्वयं के मिशन फोकस को बनाए रखने से संबंधित संभावित चुनौतियों को नेविगेट करने के लिए सावधानीपूर्वक प्रबंधन आवश्यक है
- **2020 के बाद** बाजार संचालित विकास मॉडल ने जोर पकड़ा। वैश्वीकरण ने विकास निधि में दक्षता, जवाबदेही और प्रभाव माप पर ध्यान केंद्रित किया। इसने माइक्रोफाइनेंस, प्रभाव निवेश और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) जैसे अभिनव वित्तपोषण मॉडल को अपनाने का नेतृत्व किया। वैश्वीकरण ने विकास निधि में दक्षता, जवाबदेही और प्रभाव माप पर ध्यान केंद्रित किया। इसने माइक्रोफाइनेंस, प्रभाव निवेश और सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) जैसे अभिनव वित्तपोषण मॉडल को अपनाने का नेतृत्व किया।

आज की तारीख में सामाजिक क्षेत्र की चुनौतिया

- निर्भरता और पश्चिमी एजेंडा
- विशिष्ट परियोजनाओं के लिए बाहरी सहायता पर निर्भरता।
- दाता-संचालित एजेंडा के आरोप जो हमेशा स्थानीय प्राथमिकताओं के साथ संरेखित नहीं होते थे।

- विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) जैसे कानूनों के तहत विदेशी वित्त पोषित गैर सरकारी संगठनों की व्यापक जांच और विनियमन।

ईसी तरह से राष्ट्रीय स्तर के अनेक आंदोलन मे महाराष्ट्र की अहम भूमिका रही है, जैसे की महिला सशक्तिकरण आंदोलन ("We Can" और me too अभियान, २०१८), , किसान विरोध आंदोलन (२०२०-२०२१),

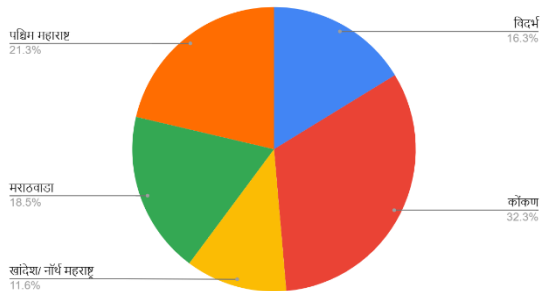
महाराष्ट्र के सामाजिक संस्थाए और विकास की सद्यस्थिति:

महाराष्ट्र मे 35,000 से जादा पंजीकृत सामाजिक संस्थाए सक्रिय है (रेफ. दर्पण) . 1970 से 2024 तक सामाजिक संस्था की स्थापना मे बढत होती आई है , वैश्विकरण और कुछ जन आंदोलनो मे उनकी संख्या मे वृद्धी हुयी है ।

महाराष्ट्र की सामाजिक संस्थाओं मे लगातर वृद्धी



महाराष्ट्र के हर विभाग मे सामाजिक संस्था

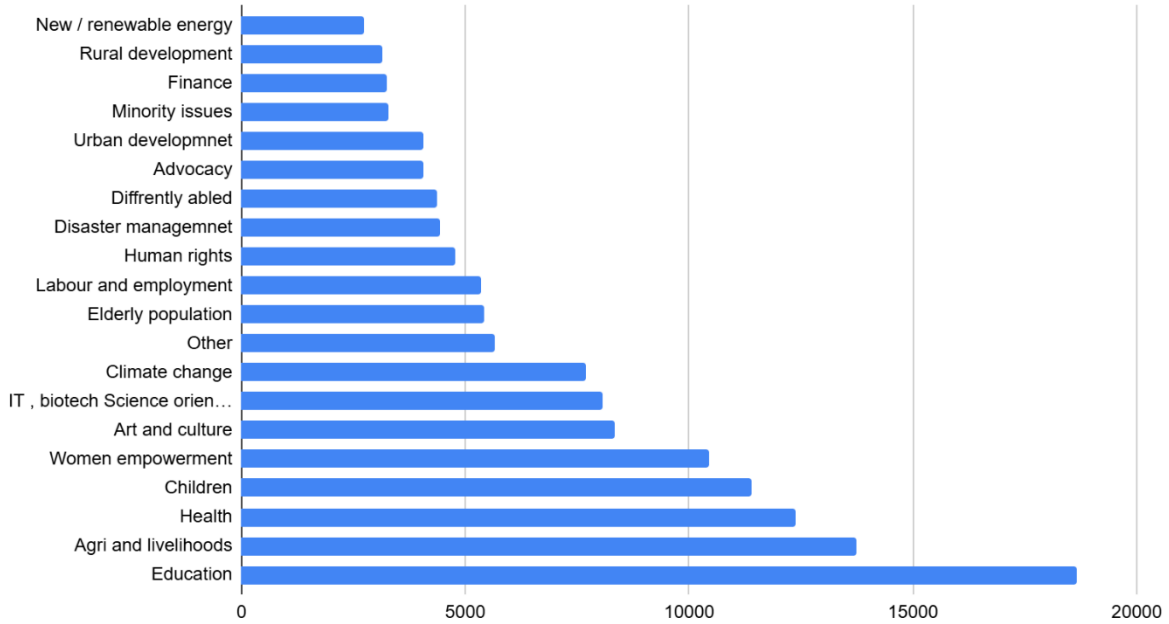


महाराष्ट्र के सब विभागोमे सामाजिक संस्थाए मौजूद है। मुंबई, पुणे, और नागपूर मे ।

सामाजिक संस्था अलग अलग प्रश्नोंपर / विषय पर काम करती है । उनमे शिक्षा (53% संस्था) और खेती

/ आजीविका (39% संस्था) का काम अहम है।

सामाजिक संस्था के विषय



कृषि क्षेत्र :

महाराष्ट्र, भारत के अग्रणी राज्यों में से एक है, जिसने कृषि क्षेत्र में प्रभावशाली नीतियों और सामाजिक पहलों के माध्यम से न केवल राज्य, बल्कि पूरे देश के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया है। राज्य के सामाजिक क्षेत्र ने कृषि विकास और किसानों के सशक्तिकरण में अहम योगदान दिया है, जो राष्ट्रीय स्तर पर कृषि और ग्रामीण उत्थान के लिए प्रेरणास्त्रोत बना है।

1. सहकारी आंदोलन

- चीनी मिल : महाराष्ट्र की चीनी सहकारी समितियों ने गन्ना उत्पादन को संगठित किया, जिससे उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और अन्य राज्यों में सहकारी चीनी मिलों की स्थापना को प्रेरणा मिली।
- डेयरी उद्योग: अमूल की तर्ज पर महाराष्ट्र की दूध सहकारी संस्थाओं ने डेयरी उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसका लाभ देशभर को हुआ।

2. जल संरक्षण:

- पानी फाउंडेशन: महाराष्ट्र के जल प्रबंधन मॉडल, जो समुदाय आधारित है, राष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया और कई राज्यों में इसे अपनाने की सिफारिश की गई।
- जलयुक्त शिवार योजना: यह योजना जल पुनर्भरण और सूखा नियंत्रण में प्रभावी साबित हुई, जो अन्य राज्यों के लिए आदर्श बनी। पानी संचय के लिए बंधारा प्रणाली को देश-विदेश में सराहा गया।

3. किसान आंदोलनों का राष्ट्रीय प्रभाव:

- महाराष्ट्र के किसान आंदोलनों ने किसानों की समस्याओं को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया, विशेष रूप से विदर्भ और मराठवाड़ा में किसानों की आत्महत्या की समस्या को लेकर।
- फसल बीमा योजना: महाराष्ट्र में सामाजिक संगठनों के प्रयासों ने फसल बीमा और राहत कार्यों को बढ़ावा दिया, जिससे केंद्र सरकार को नीतिगत बदलाव करने के लिए प्रेरित किया।

4. जैविक खेती और शिक्षा का प्रसार:

- महाराष्ट्र ने जैविक खेती और आधुनिक कृषि तकनीकों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके मॉडल ने अन्य राज्यों जैसे राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश को प्रेरित किया।
- महाराष्ट्र के कृषि विज्ञान केंद्रों (KVKs) ने किसानों को प्रशिक्षण देकर कृषि उत्पादकता बढ़ाने का सफल मॉडल प्रस्तुत किया, जिसे अन्य राज्यों ने अपनाया

५. जलसंधारन :

महाराष्ट्र में सिंचाई और प्रौद्योगिकी का बहुत प्रभाव दिखाई देता है। सूक्ष्म सिंचाई (ड्रिप और स्प्रिंकलर) और कृषि में तकनीकी नवाचारों को बढ़ावा देने से देशभर में इस प्रौद्योगिकी का प्रसार हुआ। राष्ट्रीय कृषि

मिशन में योगदान देते हुए महाराष्ट्र के किसानों और संगठनों ने इन प्रौद्योगिकियों के महत्व को उजागर किया और इसे अन्य राज्यों तक पहुंचाने में मदद की।

कृषि क्षेत्र में योगदान देने वाली राष्ट्रव्यापी प्रमुख संस्थाएँ:

BAIF विकास अनुसंधान फाउंडेशन इसकी स्थापना संस्थापक: डॉ. मणिभाई देसाई इन्होंने सन 1967 में की। BAIF, ग्रामीण परिवारों, विशेष रूप से वंचित वर्गों, के लिए स्व-रोजगार के अवसर प्रदान करने पर कार्य करता है, जिससे सतत आजीविका, समृद्ध पर्यावरण, जीवन की गुणवत्ता में सुधार और मानव मूल्यों को मजबूत बनाया जा सके। गाय की नस्ल सुधार के लिये कृत्रिम गर्भादान / संकरीकरण यह बाईफ की देन है। एक एकड़ जमीन में वाडी मॉडल, जो 5 लोगों की परिवार के लिये अण्णा, चार, लकड़ी, आदि की सवायमपूर्णता ला सकता है। विकास अनुसंधान, कौशल उन्नयन, स्थानीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से इन उद्देश्यों को पूरा करता है, ताकि एक आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज का निर्माण हो सके। उसी तरह **एक्शन फॉर एग्रीकल्चरल रिन्युअल इन महाराष्ट्र (AFARM) इसकी स्थापना** संस्थापक के रूप में डॉ. धारे इन्होंने वर्ष: 1969 में की। सिविल सोसाइटी संगठनों की क्षमता को मजबूत करने के लिए कार्रवाई अनुसंधान, वकालत, क्षेत्रीय क्रियान्वयन और परामर्श के माध्यम से काम करता है, जिससे वंचित समुदायों का विकास हो सके। इसके उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देना, सतत कृषि आजीविका को प्रोत्साहित करना और स्वास्थ्य सुधार के लिए स्वच्छता, साफ-सफाई और स्वच्छ पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना शामिल हैं।

इसी तरह **सेंटर ऑफ साइंस फॉर विलेजेस की स्थापना** संस्थापक: देवेंद्र कुमार इन्होंने सन 1976 इस दौरान की। कार्य देखा जाये तो, "साइंस फॉर विलेजेस" संगठन ग्रामीण अर्थव्यवस्था को विकेन्द्रीकृत और आत्मनिर्भर बनाने के लिए पर्यावरण अनुकूल, आर्थिक रूप से व्यवहार्य और सामाजिक रूप से न्यायसंगत ग्रामीण तकनीकों का विकास और प्रदर्शन करता है। यह विज्ञान और पारंपरिक ग्रामीण ज्ञान

के बीच सेतु का कार्य करता है, पारंपरिक विज्ञान को संरक्षित करता है और नवाचार तकनीकों को लागू करता है। संगठन शोध, फील्ड परीक्षण, प्रशिक्षण और प्रकाशनों के माध्यम से टिकाऊ ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करता है और कारीगरों, स्वयं सहायता समूहों और सूक्ष्म उद्यमियों को वैकल्पिक तकनीकों पर प्रशिक्षण प्रदान करता है।

इस क्षेत्र में, डॉ. आंबेडकर शेती विकास व संशोधन संस्था जिसके संस्थापक ललित बाबर हैं। उन्होंने वर्ष 1984 में इस संस्था की स्थापना की। यह संगठन पिछले 32 वर्षों से सोलापुर जिले के सूखा प्रभावित क्षेत्रों में काम कर रहा है, जिसका मुख्य ध्यान गरीब और बहिष्कृत समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों और किशोरों के जीवनस्तर के सुधार पर है। संगठन का उद्देश्य वंचित और हाशिए पर रहने वाले लोगों की जीवन स्थितियों को बेहतर बनाना और शासकीय जवाबदेही सुनिश्चित करना है। एएसवीएसएस ने क्षेत्र में सूखा और बाढ़ जैसी आपदाओं के दौरान भी राहत कार्य किए हैं। इसका दृष्टिकोण समाज में समानता, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय पर आधारित विकास प्रक्रिया के जरिए लोगों में जागरूकता पैदा करना है, और इसका मिशन दलितों और वंचित वर्गों के लिए न्याय स्थापित करना है। पाणी पंचायत, युवा मित्र Aquadem, गोमुख, सोशल सेंटर आदी संस्थाने भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

ईसी के साथ महाराष्ट्र में निम्नलिखित संस्थायें भी कार्य कर रही हैं. -Agriculture data from Mahavan database - [NGO-AGRICULTURE-MAHA](#) और दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार कृषि क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थायें 3242 हैं ,।

महिला सशक्तीकरण

महाराष्ट्र की स्वयंसेवी संस्थाओं ने महिला सशक्तीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संस्थाओं ने महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा दिया, उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाया, और उनके खिलाफ हिंसा तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं।

इनकी पहल से राज्य और देशभर में महिला अधिकारों के लिए एक मजबूत आंदोलन चला है, और महाराष्ट्र की स्वयंसेवी संस्थाएँ महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में राष्ट्रीय प्रेरणा का स्रोत बन चुकी हैं।

मुख्य योगदान

1. शिक्षा और जागरूकता - स्वयंसेवी संस्थाएँ महिलाओं को न केवल बुनियादी शिक्षा देती हैं, बल्कि उन्हें उनके अधिकारों, कानूनों और सामाजिक मुद्दों के प्रति जागरूक भी करती हैं।
2. स्वास्थ्य और पोषण - कई संस्थाएँ महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती हैं और उनकी पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने का काम करती हैं।
3. आर्थिक सशक्तीकरण - कई संस्थाएँ महिला उद्यमिता और कौशल विकास पर ध्यान केंद्रित करती हैं, जिससे महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता मिलती है।
4. महिला हिंसा और उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष - महाराष्ट्र में संस्थाएँ महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान और कानूनी सहायता प्रदान करती हैं, साथ ही महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों पर जागरूकता फैलाती हैं।
5. राजनीतिक भागीदारी - कई संस्थाएँ महिलाओं को राजनीति में भाग लेने के लिए प्रेरित करती हैं, ताकि वे चुनावी प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें और सत्ता में अपनी आवाज़ उठा सकें।

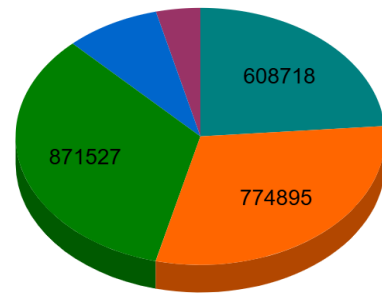
ग्रामीण विकास

महाराष्ट्र में महिलाओं की भागीदारी ने कृषि और ग्रामीण विकास में नई ऊर्जा का संचार किया है।

1. महिला किसान सहकारी समितियाँ और SHGs- महाराष्ट्र की महिला किसान सहकारी समितियाँ और स्वयं सहायता समूह (SHGs) ने ग्रामीण महिलाओं को प्रेरित किया और कृषि क्षेत्र में योगदान बढ़ाया।

2. SHG-बैंक लिंकेज- महाराष्ट्र का SHG और बैंक लिंकेज कार्यक्रम ने ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस मॉडल ने वित्तीय समावेशन और सामाजिक सुधार को बढ़ावा दिया और देशभर में प्रेरणा का स्रोत बना।

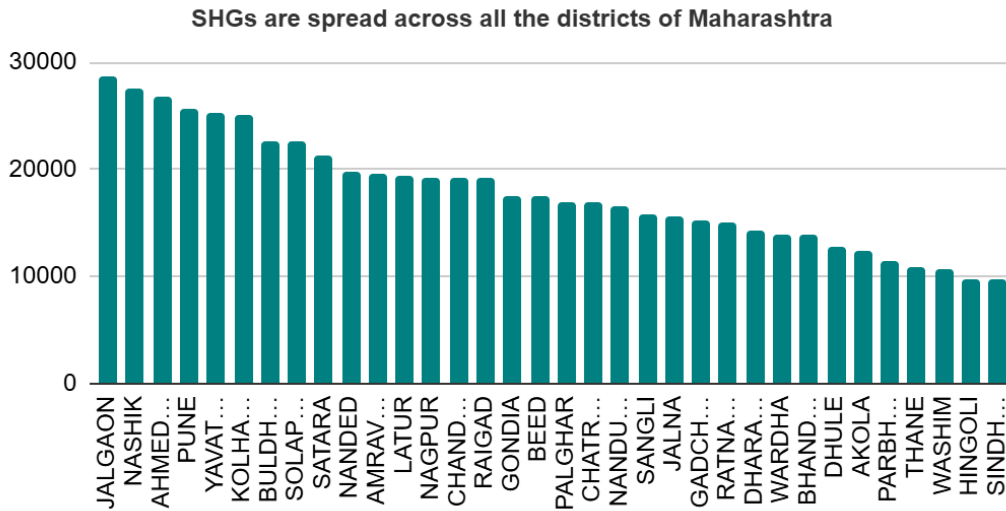
SHGs reach out to the most disadvantaged



यशस्विता और राष्ट्रीय योगदान

- आर्थिक सशक्तिकरण - महाराष्ट्र के SHG मॉडल ने लाखों महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्रदान की है।
- वित्तीय समावेशन - SHG बैंक लिंकेज ने अन्य राज्यों में SHG नेटवर्क को मजबूत किया।
- राष्ट्रीय स्तर पर नीतिगत प्रभाव - महाराष्ट्र के अनुभव ने MGNREGA और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) जैसे कार्यक्रमों को बेहतर बनाने में मदद की।
- स्थायी ग्रामीण विकास - SHGs ने जल संरक्षण, जैविक खेती और ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा दिया, जिसे अन्य राज्यों ने अपनाया।

- महिला नेतृत्व - SHGs ने महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक नेतृत्व का मंच प्रदान किया, जो महिला सशक्तिकरण का आधार बना।



महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था - ईसी के साथ महाराष्ट्र में निम्नलिखित संस्थाये भी कार्य कर रही है. -Agriculture data from Mahavan database - [NGO-EGS-MAHA](#)

ग्रामीण रोजगार :

महाराष्ट्र की रोजगार गारंटी योजना (EGS) ने राज्य के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसका प्रभाव निम्नलिखित क्षेत्रों में देखा जा सकता है:

- गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, विस्थापन में कमी (ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध करके शहरी विस्थापन को नियंत्रित किया), स्थायी संसाधन प्रबंधन

EGS की सफलता ने देश में MGNREGA जैसी योजनाओं के लिए आधार तैयार किया। इस कदर EGS ने महाराष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने को मजबूत करते हुए ग्रामीण जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। यह योजना सामाजिक न्याय और समावेशिता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

महावन के डाटा अनुसार इस क्षेत्र में कार्यरत संस्था - [NGO-EGS-MAHA](#)

बालहक्क में योगदान

बाल हक्क कायदा निर्माण

महाराष्ट्र में स्वयंसेवी संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बाल अधिकारों (बालहक्क) को संरक्षित करने और उन्हें कानूनी रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संगठनों ने न केवल कानून निर्माण में मदद की, बल्कि बच्चों की समस्याओं को समझने, जागरूकता फैलाने और सरकार पर नीतिगत कदम उठाने का दबाव बनाने में भी योगदान दिया।

इन संगठनों ने बाल श्रम, बाल विवाह और बाल तस्करी के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए और बच्चों के अधिकारों की रक्षा की मांग की। इसके अलावा, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण से जुड़े मुद्दों को उजागर किया और सरकार को सशक्त नीतियाँ बनाने के लिए प्रेरित किया।

महाराष्ट्र के स्वयंसेवी संगठनों ने बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए सरकार के समक्ष सशक्त तर्क प्रस्तुत किए और सरकारी नीतियों को लागू करने और सुधारने में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (NCPCR) और राज्य बाल संरक्षण नीति के निर्माण में भी योगदान दिया।

चाइल्डलाइन - इस परियोजना का उद्देश्य चाइल्डलाइन सेवा के लिए एक टोल-फ्री नंबर बनाना था। इसका उद्देश्य संकट में बच्चों तक पहुंचना और बच्चों और वयस्कों से दुर्व्यवहार और बाल श्रम जैसे मुद्दों पर हस्तक्षेप के लिए आने वाली कॉल का जवाब देना है। संस्थापक जेरू बिलिमोरियाने वर्ष: 1996 स्थापना की थी। पुरे भारत भर यह कार्य महाराष्ट्र से शुरू हुवा, इस संकल्पना को राष्ट्रीय स्तर को मान्यता मिली, और महिला बाल कल्याण मंत्रालय द्वारा स्वीकृती मिली, और केंद्र सरकारने इस उपक्रम को साथ दिया एक प्रकार से यह सामाजिक विचार को मिली एक मान्यता है।

प्रमुख कानूनी योगदान

1. बाल श्रम निषेध और विनियमन अधिनियम: इस कानून के निर्माण में महाराष्ट्र के संगठनों ने बाल मजदूरी की वास्तविकता पर शोध और आंकड़े उपलब्ध कराए।
2. जुवेनाइल जस्टिस एक्ट: महाराष्ट्र के NGOs ने बाल अपराधियों के पुनर्वास के लिए कानूनी प्रक्रियाओं को सुधारने में सहयोग किया।
3. पाँक्सो एक्ट: बाल यौन शोषण के खिलाफ कानून बनाने में महाराष्ट्र के संगठनों ने पीड़ितों की मदद और उनके अनुभवों को सरकार तक पहुँचाया।

बाल संरक्षण और पुनर्वास

महाराष्ट्र के कई स्वयंसेवी संगठनों ने बाल संरक्षण और पुनर्वास के लिए अनाथ बच्चों, बाल श्रमिकों और यौन शोषण के शिकार बच्चों के लिए पुनर्वास केंद्र और सहायता प्रणाली स्थापित की। अनाथ बच्चों को संरक्षकता दिलाने के लिए दत्तक ग्रहण का कार्य और उसका प्रचार-प्रसार भी किया गया। महाराष्ट्र के स्वयंसेवी संगठनों ने यूनिसेफ और अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों के साथ मिलकर बच्चों के अधिकारों पर आधारित कई परियोजनाएं चलाईं।

शिक्षा के अधिकार में योगदान

महाराष्ट्र के संगठनों ने शिक्षा के अधिकार (RTE) अधिनियम के कार्यान्वयन में सक्रिय भूमिका निभाई, जिससे वंचित बच्चों को स्कूलों में प्रवेश दिलाने और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने में मदद मिली। इसने बच्चों की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए एक मजबूत (?)

क्षेत्र में योगदान देने वाली प्रमुख संस्थाएँ

सोलस ARC ने 2003 में केंद्र-आधारित मॉडल के माध्यम से अपनी यात्रा शुरू की। यह विशेष शिक्षा और मनो-सामाजिक जरूरतों वाले बच्चों और युवाओं के साथ सीधे काम करता है। यह समावेशी शिक्षा, ऐप-आधारित समाधान और कौशल प्रशिक्षण एवं रोजगार के क्षेत्र में भी कार्यरत है। **स्नेहालय** के संस्थापक: गिरीश कुलकर्णी द्वारा वर्ष: 1989 में स्थापना हुई, महिलाओं और बच्चों के कल्याण, जरूरतमंद बच्चों को आश्रय, हाशिए पर रहने वाली महिलाओं को सशक्त बनाना, और यौनकर्मियों और उनके बच्चों के पुनर्वास के लिए काम करता है। डॉ. अनुराधा सहस्रबुद्धेजीने **जानादेवी संस्था की** 1992 में स्थापना की। जानादेवी वंचित समुदायों के विकास, विशेष रूप से बच्चों पर केंद्रित है। इसके कार्यक्रम 1983 में शुरू किए गए थे और 1992 में जानादेवी को पंजीकृत किया गया। जानादेवी का मानना है कि शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण संभव है, जो मनुष्य में पूर्णता के प्रकट होने को सुनिश्चित करती है।

इसी के साथ महिला बालकल्याण विभाग के साथ राज्य की काफी संस्थाएँ कार्यरत हैं, जो बालविकास के लिये विविध क्षेत्र में कार्यरत हैं।

दर्पण पोर्टल द्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली 12367 संस्थाएँ हैं। महावन के डाटा अनुसार इस क्षेत्र में कार्यरत संस्था -- [NGO-CHILD-RIGHTS-MAHA](#)

आरोग्य

पिछले पाँच दशकों में सामाजिक संस्थाओं ने भारत, विशेषकर महाराष्ट्र में, आरोग्य क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। इन संस्थाओं ने स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, चिकित्सा जागरूकता बढ़ाने, और समाज के वंचित वर्गों तक स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाने के लिए सतत कार्य किया है। उन्होंने सरकारी प्रयासों को मजबूत किया, जरूरतमंदों की मदद की, और स्वास्थ्य सेवाओं को समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंगणवाडी कार्य का उदय महाराष्ट्र राज्य के सामाजिक संस्था द्वारा हुआ है, यह कहते हुवे बहुत अभिमान सामाजिक संघटनाद्वारा व्यक्त होता है।

1. प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार- 1970 के दशक में, जब ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की अत्यधिक कमी थी, सामाजिक संस्थाओं ने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना शुरू की। ने गाँवों में निःशुल्क चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया और स्वच्छता, कुपोषण, तथा प्रजनन स्वास्थ्य पर जागरूकता फैलाई।
2. पोलियो और अन्य संक्रामक रोगों का उन्मूलन- 1980 और 1990 के दशकों में पोलियो उन्मूलन अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई। नियमित टीकाकरण कार्यक्रम और घर-घर जाकर टीके लगाने की व्यवस्था ने 2014 में भारत को पोलियो मुक्त बनाने में मदद की।
3. एचआईवी/एड्स जागरूकता और उपचार - 1990 के दशक में जब एचआईवी/एड्स का प्रसार तेजी से हो रहा था, एड्स पीड़ितों के पुनर्वास, मुफ्त एंटी-रेट्रोवायरल दवाओं के वितरण, और जागरूकता अभियानों के माध्यम से लाखों लोगों की मदद की।
4. मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य पर ध्यान- 2000 के दशक में, सामाजिक संस्थाओं ने मातृत्व और शिशु मृत्यु दर को कम करने पर विशेष ध्यान दिया। गर्भवती महिलाओं को पोषण संबंधी सलाह, प्रसव पूर्व देखभाल, और नवजात शिशुओं की देखभाल के लिए प्रशिक्षण देती रहीं।

5. आपदा राहत और चिकित्सा सेवाएँ- प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी सामाजिक संस्थाएँ सक्रिय रहीं। 1993 के लातूर भूकंप और 2005 के मुंबई बाढ़ के दौरान मेडिकल कैंप लगाए और प्रभावित परिवारों को त्वरित स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान कीं।
6. मानसिक स्वास्थ्य का प्रचार-प्रसार- 2010 के बाद, मानसिक स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के चलते डिप्रेशन, एंगजायटी और मानसिक स्वास्थ्य संबंधी अन्य मुद्दों पर काम किया। स्कूलों, कॉलेजों, और ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यशालाएँ आयोजित कर मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा को मुख्यधारा में लाया गया।
7. आयुष और पारंपरिक चिकित्सा का प्रचार** पिछले पाँच दशकों में आयुर्वेद, योग और होम्योपैथी जैसी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को पुनर्जीवित करने में सामाजिक संस्थाओं ने योगदान दिया है। न केवल चिकित्सा सेवाएँ प्रदान कीं बल्कि समाज में स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित किया।
8. कोविड-19 महामारी में योगदान** हाल के वर्षों में, कोविड-19 महामारी के दौरान सामाजिक संस्थाएँ मेडिकल उपकरण, ऑक्सीजन, और भोजन वितरित कर महामारी प्रबंधन में सरकार का सहयोग किया। ग्रामीण क्षेत्रों में वैक्सीन ड्राइव और चिकित्सा सहायता में इनका योगदान सराहनीय रहा।

राज्य में आरोग्य विषय पे कार्यरत प्रमुख संस्थाओ में सर्च (SEARCH) संस्था का नाम सन्मान के साथ लिया जाता है। संस्थापक: डॉ. अभय बंग और डॉ. रानी बंग इन्होंने 1986 में सर्च की स्थापना की। सर्च का कार्य स्वास्थ्य समस्याओं को रोकने और उनका इलाज करने, स्वास्थ्य से संबंधित ज्ञान प्रदान करने, मौलिक शोध के माध्यम से नए ज्ञान को आगे बढ़ाने और विधियों के प्रचार-प्रसार में शामिल है।

ग्रामीण स्वास्थ्य समस्याओं को हल करने के लिए उस्मानाबाद जिले, महाराष्ट्र में ग्राम स्वास्थ्य कार्यकर्ता कार्यक्रम शुरू किया गया। यह कार्यक्रम स्थानीय ग्रामीण महिलाओं को उनके गांवों में बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित कर एक स्थायी स्वास्थ्य सेवा मॉडल बनाने के उद्देश्य से शुरू किया गया। संस्थापक: डॉ. शशिकांत अहंकारी इन्होंने हेलो मेडिकल फाउंडेशन 1992 इसकी स्थापना की।

लोक बिरादरी प्रकल्प जो बाबा आमटे द्वारा 1973 द्वारा स्थापित किया गया, इसका उल्लेख करना आवश्यक होगा। लोक बिरादरी प्रकल्प का दृष्टिकोण स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण जागरूकता के माध्यम से समुदाय में स्थायी परिवर्तन लाना है। विशेष रूप से कुष्ठरोग से पिडीत रुग्णों का पुनर्वसन यह उनका विशेष कार्य है।

डॉ. दादासाहेब गुजरजी की महाराष्ट्र आरोग्य मंडल, के साथ आरोग्य के विषय में कार्यरत साथी सेहत, लोकआरोग्य जैसी संस्था भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली 12367 संस्थायें हैं। महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था - [NGO-HELATH-MAHA](#)

शिक्षा

महाराष्ट्र राज्य ने साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर कई महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। राज्य का सामाजिक क्षेत्र विशेष रूप से शिक्षा के प्रचार-प्रसार, साक्षरता दर में सुधार, और बच्चों, महिलाओं तथा कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने में सक्रिय रहा है। इसमें शिक्षा यह अधिकार है और वह सर्वस्तर पर मिलना चाहिये इसके लिये महाराष्ट्र में कई स्वयंसेवी संगठन, समाजसेवी और शिक्षा कार्यकर्ता शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं। इन संगठनों ने न केवल साक्षरता

दर को बढ़ाने का कार्य किया है, बल्कि शिक्षा के लिए समाज में जागरूकता भी पैदा की है। इसके प्रयासों ने शिक्षा की गुणवत्ता और उपलब्धता में सुधार किया है, खासकर ग्रामीण, आदिवासी और कमजोर वर्गों के बीच। राज्य ने समाज के विभिन्न वर्गों तक शिक्षा पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं, जिससे भारत में साक्षरता दर और शिक्षा का स्तर बढ़ा है।

शिक्षा का विस्तार और गुणवत्ता में सुधार, शिक्षा के क्षेत्र में योजनाएँ, समाज के विभिन्न वर्गों के लिए शिक्षा विशेष रूप से आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ाना, महिला शिक्षा का प्रोत्साहन, महाराष्ट्र में महिला शिक्षा के क्षेत्र में कई सुधार और प्रयास किए गए हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी रहे हैं। महिलाओं के लिए विशेष स्कूल, छात्रवृत्तियाँ और जागरूकता अभियान चलाए गए हैं, जिससे महिलाओं की शिक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। Right to Education द्वारा आंदोलन स्वरूप निम्न आर्थिक वर्गों के विद्यार्थियों को उच्च दर्जा शिक्षा देने में हुआ। उसी तरह आरक्षित वर्गों के लिए शिक्षा योजनाएँ भी निर्माण हुईं।

माधव चव्हाण और फरिदा लांबे द्वारा 1995 में संस्थापित **प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन** बच्चों के सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। यह अभिनव शिक्षण पद्धतियों, बड़े पैमाने पर शिक्षा मूल्यांकन (जैसे ASER), और शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता और गणितीय कौशल को बढ़ावा देने वाले शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से काम करता है।

इसीके साथ डॉ. प्रकाश गांधी द्वारा संचालित **अभुदय ग्लोबल विलेज स्कूल (AGVS)** ग्रामीण शिक्षा का एक अनूठा मॉडल है। किसान के बच्चों को शालेय शिक्षा के साथ पारंपारिक शैली शास्त्र और आधुनिक विकसित क्षेत्र की भी **विज्ञान आश्रम या संस्था** विज्ञान आश्रम शिक्षा और ग्रामीण विकास पर केंद्रित है। इसके कार्यक्रमों में बेसिक टेक्नोलॉजी (IBT), फैंब लैब और डू-इट-योरसेल्फ लैब शामिल हैं। **जिसके संस्थापक:** डॉ. एस.एस. कलबाग है, इस संस्था का **स्थापना वर्ष:** 1983 रहा है। भारत की समस्याएं संगठनात्मक दृष्टिकोण की कमी से उत्पन्न होती हैं। संगठन के संस्थापक डॉ. अप्पा

पेंडसे का मानना था कि लोगों, विशेष रूप से युवाओं के लिए, संगठनात्मक दृष्टिकोण में कठोर शिक्षा और प्रशिक्षण आवश्यक है। इस विचार से 1962 में डॉ. अप्पा पेंडसेजीने **ज्ञान प्रबोधिनी संस्था की स्थापना की**। पुना में शुरू हुवे इस संस्था की आज संपूर्ण महाराष्ट्र में शाखाए हैं।

महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था -

NGO-EDUCATION-MAHA

दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थायें - 18665

जलवायु परिवर्तन

महाराष्ट्र में जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए कई सामाजिक संस्थाएं और क्षेत्र सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। ये संस्थाएं पर्यावरण संरक्षण, जनजागरूकता और स्थायी विकास के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करके इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

1. वन संरक्षण और वृक्षारोपण अभियान - स्थानीय समुदायों को पर्यावरण के महत्व के प्रति जागरूक करना है और उन्हें वृक्षारोपण के साथ जोड़ती है।
2. जल संरक्षण प्रयास - महाराष्ट्र में जल संरक्षण के लिए उल्लेखनीय कार्य है। ग्रामीण क्षेत्रों में जल प्रबंधन तकनीकों को सिखाने और पानी की बचत के लिए *वाटर कप प्रतियोगिता* जैसी पहल शुरू की है, जिसने हजारों गांवों को जल संकट से उबरने में मदद की है।
3. नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा - सौर ऊर्जा और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन दिया है। स्कूलों, गांवों और औद्योगिक क्षेत्रों में सौर ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित कर रहे हैं।

4. शहरी कचरा प्रबंधन - पुणे और मुंबई जैसे महानगरों में कचरे के प्रबंधन और पुनर्चक्रण पर ध्यान केंद्रित किया है। अनेक संस्थाएं कचरे को रिसायकल करने और इसे पर्यावरण के अनुकूल बनाने के लिए जागरूकता अभियान चलाते हैं।
5. शैक्षिक और जागरूकता कार्यक्रम - समूह स्कूलों और कॉलेजों में जलवायु परिवर्तन से संबंधित कार्यशालाओं और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन। युवाओं को स्थायी जीवनशैली अपनाने और जलवायु के प्रति जिम्मेदार बनने के लिए प्रेरित करते हैं।
6. कृषि क्षेत्र में नवाचार- किसानों को जैविक खेती और जलवायु के अनुकूल कृषि तकनीकों को अपनाने में मदद की है। इस पहल से पर्यावरणीय क्षति को कम करने और किसानों की आजीविका को सुरक्षित बनाने में सहायता मिली है।

इन प्रयासों ने महाराष्ट्र को जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में एक उदाहरण बनने में मदद क्षेत्र द्वारा हो रही है। सरकार और सामाजिक संस्थाओं के बीच साझेदारीसे भी इस दिशा में और अधिक प्रभावी कदम उठाने में सहायक हो रहा है।

वर्ष: 1974 में विलासराव सालुंखेजीने पानी पंचायत का मॉडल किसानों के समूह को एक साथ लाकर, सहमति आधारित जल वितरण सिद्धांतों पर आधारित सिंचाई परियोजनाओं को विकसित और लागू करने में की, जिसका उद्देश्य गांव में जल सुरक्षा सुनिश्चित करना, जल संसाधनों की रक्षा करना, और समुदाय के जीवन की गुणवत्ता को सुधारना था।

वनराई यह संघटन संस्थापक: डॉ. मोहन धारियाजीने वर्ष: 1986 में स्थापन किया। वनराईने सतत ग्रामीण विकास और जलवायु संकट से निपटने के लिए "हरित भारत" के लिए जन आंदोलन को बढ़ावा दिया। इसके प्रयासों में मृदा और जल संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करना, सतत कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को बढ़ाना, महिलाओं को सशक्त बनाना और वैकल्पिक आजीविका के साधन तैयार करना शामिल हैं।

सेंटर फॉर सोशल एक्शन (CSA) जो 1997 में निर्माण हुआ। CSA "सशक्तिकरण और समुदाय-नेतृत्वित विकास" दृष्टिकोण अपनाता है, जिसका उद्देश्य लोगों और समुदायों को कमजोर बच्चों की देखभाल, विकास, और शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनाना है।

संस्थापक: डॉ. हिमांशु कुलकर्णीजी ने 1998 **एसीडम (ACWADAM)**

की स्थापना की है। एसीडम का मिशन भारत में भूजल प्रबंधन एजेंडा स्थापित करना है। संगठन का कार्य भूजल पर ज्ञान विकसित करना और साझा करना, शोध कार्यक्रमों, प्रशिक्षण और नीति समर्थन के माध्यम से भूजल प्रबंधन को सुगम बनाना, और समुदायों को उनके जलभृतों (aquifers) के करीब लाना है।

महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था - महावन

NGO-CLIMATE-CHANGE-MAHA

दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार कार्य करने वाली संस्थायें 7689

आपदा प्रबंधन

महाराष्ट्र की सामाजिक संस्थाओं ने न केवल राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्रयासों में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन संस्थाओं के कार्यों ने देशभर में आपदा प्रबंधन की नीतियों और रणनीतियों को आकार दिया है। चाहे वह जल संरक्षण हो, बाढ़ राहत हो या भूकंप पुनर्वास, महाराष्ट्र का सामाजिक क्षेत्र राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन ढांचे का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

महाराष्ट्र के सामाजिक संगठनों का यह योगदान न केवल तात्कालिक राहत तक सीमित है, बल्कि दीर्घकालिक पुनर्निर्माण और सामुदायिक सशक्तिकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसने राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन को एक नई दिशा दी है और अन्य राज्यों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत है। इस समय संघटनात्मक सामाजिक संस्था, वैचारिक दृष्टि से कार्य करने वाली सामाजिक संगठन तथा तात्कालिक आपदा को राहत देने हेतु निर्माण समाज तात्कालिक संगठन भी इस कार्य में अग्रेसर रहा, जिससे कुछ नवनीत सामाजिक संस्थाओं का भी उदय हुआ, जो आज भी समाज में महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

पिछले 50 वर्षों में महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र ने राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस अवधि के दौरान, कई महत्वपूर्ण आपदाओं का सामना करते हुए महाराष्ट्र की सामाजिक संस्थाओं ने न केवल राज्य में बल्कि पूरे भारत में राहत और पुनर्वास कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ हम इस कालखंड के प्रमुख घटनाओं और वर्तमान में सक्रिय संस्थाओं पर एक दृष्टि डालते हैं:

- 1972 का सूखा:

1972 में महाराष्ट्र को भीषण सूखे का सामना करना पड़ा, जिसने लाखों लोगों को प्रभावित किया। इस दौरान कई सामाजिक संगठनों ने सूखा राहत कार्यों में योगदान दिया। मराठवाड़ा क्षेत्र सबसे अधिक प्रभावित था, और यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने पीने के पानी और खाद्य सामग्री की व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- 1993 लातूर भूकंप:

महाराष्ट्र में 30 सितंबर 1993 को आए इस भूकंप में हजारों लोग मारे गए और लाखों लोग बेघर हो गए। इस समय सामाजिक संगठनों और स्थानीय एनजीओ ने बड़े पैमाने पर राहत और पुनर्वास कार्यों में हिस्सा लिया। कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठन भी इसमें शामिल हुए, लेकिन महाराष्ट्र की स्थानीय संस्थाओं ने विशेष रूप से पीड़ितों के पुनर्निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई। युवा, युवा मित्र, बचपन बचाओ आंदोलन, और रोटरी क्लब जैसी संस्थाएँ सक्रिय रूप से इस कार्य में जुटी रहीं।

- 2005 मुंबई बाढ़:

26 जुलाई 2005 को मुंबई में आई बाढ़ के दौरान कई गैर-सरकारी संगठनों ने राहत कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। 'गुंज' ने राहत सामग्री और पुनर्वास कार्य किए, जबकि अक्षय पात्र फाउंडेशन ने प्रभावित लोगों को भोजन वितरित किया। Save the Children India ने विशेष रूप से बच्चों के लिए राहत कार्य किया। Mumbai First और BMC ने पुनर्निर्माण और चिकित्सा सहायता प्रदान की। इसके अलावा, The Banyan ने मानसिक स्वास्थ्य सहायता और पुनर्वास कार्यों में मदद की। इन संगठनों ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में आवश्यक सामग्री और सेवाओं का वितरण किया।

- 2019 महाराष्ट्र का सूखा:

2018 और 2019 में महाराष्ट्र के कई हिस्सों, विशेषकर मराठवाड़ा और विदर्भ, में सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई। इस दौरान पानी फाउंडेशन ने जल संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर कार्य किया। इस संगठन द्वारा

चलाया गया सत्यमेव जयते वाटर कप अभियान एक राष्ट्रीय मॉडल बना, जिसे सूखा प्रभावित अन्य राज्यों में भी अपनाया गया।

- २०२० से २०२२ कोविड-19

महामारी के दौरान, महाराष्ट्र की सामाजिक संस्थाओं ने बड़े पैमाने पर राहत कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जब महामारी की वजह से लाखों लोग प्रभावित हुए, विशेष रूप से प्रवासी श्रमिक, गरीब, और हाशिए पर खड़े समुदाय, तब महाराष्ट्र की कई सामाजिक और धर्मार्थ संस्थाएँ आगे आईं और सरकार के साथ मिलकर लोगों की मदद की। इन संस्थाओं ने स्वास्थ्य सेवाओं, भोजन वितरण, प्रवासी श्रमिकों की सहायता और जागरूकता फैलाने के लिए बड़े पैमाने पर कार्य किया। जिसमें भोजन और राशन वितरण, स्वास्थ्य सेवाएँ, प्रवासी श्रमिकों की सहायता, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ, जागरूकता अभियान आदी उपक्रमों द्वारा ठोस मदत सामाजिक संस्थाओं की, जिसका शासनद्वारा भी उल्लेख किया गया।

इस विषय पर महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले कुछ संघटन या उपक्रम जो राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हुए हैं, हैं निम्नलिखित हैं।

टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (TISS): मुंबई स्थित TISS एक प्रमुख शिक्षण और अनुसंधान संस्थान है, जो आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके आपदा प्रबंधन कार्यक्रम ने राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन विशेषज्ञों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की है, जो विभिन्न आपदाओं के समय सरकार और सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना): एनएसएस महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों से जुड़े छात्रों के माध्यम से आपदा प्रबंधन में योगदान करता है। बाढ़, भूकंप, और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय ये स्वयंसेवक राहत शिविरों में काम करते हैं और पुनर्वास कार्यों में सक्रिय रहते हैं।

स्नेहालय (अहमदनगर): यह संस्था प्राकृतिक आपदाओं के दौरान बच्चों और महिलाओं के पुनर्वास के लिए काम करती है। कोविड-19 के दौरान भी इस संस्था ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रवासी मजदूरों और गरीबों की सहायता की। इस दरम्यान महाराष्ट्र के विभिन्न विभाग और ग्रामीण क्षेत्र के संस्थानों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। जिसका उल्लेख नीति आयोग ने भी किया। सामाजिक संस्थाओं का बड़ी तादाद में शासन के साथ और शासन के बगैर भी बड़ा और दीक्षा दिखाई देने वाला योगदान इस दौरान अधोरेखित हुआ।

सत्यमेव जयते वाटर कप (पानी फाउंडेशन): यह फाउंडेशन अभिनेता आमिर खान द्वारा स्थापित किया गया था और महाराष्ट्र में सूखा प्रभावित क्षेत्रों में जल संरक्षण और सूखा प्रबंधन के लिए काम करता है। इस संस्था ने सूखा राहत के प्रयासों में व्यापक योगदान दिया है, जिससे अन्य राज्यों को भी प्रेरणा मिली है।

महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था -

महावन [NGO-DISASTER-MANAGEMENT-MAHA](#)

दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाये 4432

कौशल विकास

पिछले 50 वर्षों में कौशल विकास के क्षेत्र में महाराष्ट्र के सामाजिक संगठनों का राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस अवधि में, महाराष्ट्र के कई गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) और सामाजिक संस्थाओं ने शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण, और रोजगार पुरक कौशल विकास के कार्यक्रम चलाए हैं, जिनका प्रभाव न केवल महाराष्ट्र में बल्कि पूरे देश में महसूस किया गया है। इन संगठनों ने विभिन्न समुदायों और विशेष रूप से वंचित वर्गों के लोगों को सशक्त बनाया है, ताकि वे आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

महाराष्ट्र के सामाजिक संगठनों ने कौशल विकास के क्षेत्र में जो कार्यक्रम और पहल की हैं, उनका प्रभाव पूरे भारत में देखा गया है। इन संस्थाओं ने केवल प्रशिक्षण और शिक्षा पर ही ध्यान नहीं दिया, बल्कि समाज के लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए, उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया, और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में मदद की।

विशेष रूप से, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, उद्यमिता, और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्रों में महाराष्ट्र के सामाजिक संगठनों ने राष्ट्रीय स्तर पर एक मिसाल कायम की है। इनके कार्यक्रमों ने भारत की कौशल विकास नीतियों को भी प्रभावित किया है, और देशभर में इन्हें लागू किया जा रहा है।

महाराष्ट्र के सामाजिक संगठनों की इस सेवा भावना और समर्पण ने न केवल राज्य को बल्कि पूरे भारत को सामाजिक और आर्थिक विकास की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद की है।

- 1970 और 1980 के दशक में महाराष्ट्र के कई सामाजिक संगठनों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत राज्य में कई ऐसे कार्यक्रम शुरू हुए, जिनका उद्देश्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को सबके लिए सुलभ बनाना था। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रेरित संस्थाएँ भी इसमें काफी मार्गदर्शक रही।
- 1991 में भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद, महाराष्ट्र में सामाजिक संगठनों और निजी क्षेत्र के बीच सहयोग बढ़ा। इस दौर में कई औद्योगिक घरानों ने भी कौशल विकास के क्षेत्र में CSR (कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी) के तहत बड़े पैमाने पर निवेश करना शुरू किया। टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (TISS) और टाटा ट्रस्ट ने ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी गरीबों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए।
- 2000 के दशक में, महाराष्ट्र सरकारी तथा गैरसरकारी संगठनों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए गए। रालेगण सिद्धि और हिवरे बाजार जैसे गाँवों में सामाजिक कार्यकर्ताओं, विशेष रूप से अन्ना हजारे और पोपटराव पवार, ने ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के लिए

कृषि, पशुपालन, और कुटीर उद्योगों में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए। इन पहलों को राष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली और अन्य राज्यों ने भी इनका अनुकरण किया।

महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था -

[NGO-SKILL-DEVELOPMENT-MAHA](#)

दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थायें - 5150

धर्मार्थ कार्य और व्यक्तीसहाय कार्य

महाराष्ट्र का सामाजिक क्षेत्र धर्मार्थ कार्यों में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अद्वितीय पहचान बना चुका है। पिछले 50 वर्षों में, महाराष्ट्र की सामाजिक संस्थाओं और धर्मार्थ संगठनों ने न केवल राज्य में बल्कि पूरे भारत में जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संगठनों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, और गरीबों के उत्थान के लिए काम किया है, जिससे उनका प्रभाव राष्ट्रीय स्तर पर देखा गया है।

महाराष्ट्र राज्य में व्यक्ती सहाय कार्य करने वाली संस्थाएँ विभिन्न प्रकार के कार्य करती हैं, जैसे कि समाज के विभिन्न वर्गों की मदद करना, स्वास्थ्य, शिक्षा, महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा, और विकलांगता के मामलों में सहायता प्रदान करना। महिला कल्याण संस्थाएँ (Women's Welfare Organizations) द्वारा महिलाओं के लिए सुरक्षा, शिक्षा, कानूनी सहायता, और रोजगार अवसर प्रदान करना, गरीबों और असहायों को चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध कराना, अस्पतालों में उपचार, और स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने के उद्देश से स्वास्थ्य और चिकित्सा सहायता संस्थाएँ (Health and Medical Assistance Organizations), शिक्षा संस्थाएँ (Educational Institutions) जो कमजोर वर्ग के बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा प्रदान करना, विशेष रूप से गरीब और पिछड़े क्षेत्रों में कार्य करती हैं।

दिव्यांग सहायता संस्थाएँ (differently abled Assistance Organizations) दिव्यांग व्यक्तियों के लिए विशेष शिक्षा, चिकित्सा देखभाल, और रोजगार के अवसर प्रदान करना। वृद्धों, अनाथों, और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्तियों के लिए आश्रय, भोजन, और अन्य जीवनोपयोगी सेवाएं प्रदान करना इस हेतु से सामाजिक कल्याण और मदद संस्थाएँ (Social Welfare and Assistance Organizations) कार्य करती हैं। मानवाधिकारों की रक्षा करना, न्यायिक प्रक्रिया में सहायता प्रदान करना, और कानूनी सलाह देना यह कार्य मानवाधिकार और न्यायिक सहायता संस्थाएँ (Human Rights and Legal Assistance Organizations) द्वारा सामाजिक योगदान होता है।

इन सभी प्रकार के संस्थाओं का उद्देश्य समाज के कमजोर और असहाय वर्गों की मदद करना है और उन्हें बेहतर जीवन जीने के लिए सहायभूत होना यह होता है

महाराष्ट्र का धर्मार्थ कार्यों में योगदान संतों और समाज सुधारकों की समृद्ध परंपरा से प्रेरित है। संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर, और संत रामदास के उपदेशों ने समाज में धर्मार्थ कार्यों को बढ़ावा दिया। 20वीं सदी में, **महात्मा फुले** और **डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर** जैसे समाज सुधारकों ने सामाजिक न्याय और सेवा के कार्यों की नींव रखी, जिससे समाज के वंचित वर्गों को मुख्यधारा में शामिल किया जा सके। यही परंपरा सामाजिक क्षेत्र द्वारा आज भी महाराष्ट्र में निभाई जा रही है।

महावन के आवाहन को प्रतिसाद देते हुवे में महत्वपूर्ण कार्य करने का दावा करने वाली संस्था -

[NGO-CHARITABLE-HUMANITARIAN-MAHA](#)

दर्पण पोर्टलद्वारा प्राप्त जानकारी अनुसार क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थायें - 4782

महावन इस दस्तावेज को एक सकारात्मक पहल मानता है और इसे 21वीं सदी के रजत जयंती वर्ष में सामाजिक क्षेत्र की दस्तावेजीकरण प्रक्रिया की आवश्यकता को रेखांकित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास

मानता है। यह अपेक्षा की जाती है कि इस दस्तावेज के माध्यम से नियमित रूप से सामाजिक क्षेत्र का गहन अध्ययन और डॉक्यूमेंटेशन करने की मानसिकता का निर्माण होगा।

परिशिष्ट १ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक आंदोलन

यह आंदोलन राज्य के प्रश्नों को राष्ट्रीय स्तर पर ले गये। बड़े पैमाने पर विविध विशिष्टप्रश्नों के लिए कार्य करने वाली संस्था संघटनाएँ सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को केवल उजागर नहीं किया, बल्कि उनके समाधान के लिए ठोस कानून और सरकारी प्रस्ताव बनाए। जिनसे राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कुछ GR , कानून और विकास परियोजनाएँ भी निर्माण हुए। इन आंदोलनों प्रेरित हो के आज भी सामाजिक दायित्व निभा रहे हैं।

- 1960 संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन
- 1972 दलित पैंथर आंदोलन
- 1980 शेतकरी संगठन आंदोलन
- 1982 कॉटन मिल स्ट्राइक्स
- 1990 एनरॉन विरोध आंदोलन
- 1993 लातूर भूकंप राहत आंदोलन
- 1990 नर्मदा बचाओ आंदोलन
- 2005 सहस्रत्रक विकास ध्येय के लिये “वादा न तोड़ो” आंदोलन
- 2011 अन्ना हजारे का भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन
- 2016 मराठा आरक्षण आंदोलन
- 2015 जलयुक्त शिवार अभियान
- 2018 महिला सशक्तिकरण आंदोलन ("We Can" और Me Too),
- 2020 किसान विरोध आंदोलन

इन आंदोलनों ने समाज में राजनीतिक चेतना और सक्रियता को बढ़ावा दिया है। ये GR और कानून नीतिगत सुधार के साथ-साथ समाज के विभिन्न वर्गों के लिए न्याय और समानता लाने में सहायक रहे हैं।

परिशिष्ट २ : पंचवर्षीय योजनाओं में महाराष्ट्र का योगदान

पंचवर्षीय योजनाएं भारत के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण योजनाएं होती हैं, जिनका उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था, सामाजिक कल्याण, और बुनियादी ढांचे में सुधार करना है। महाराष्ट्र का इन योजनाओं में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है, जो राज्य के औद्योगिक, कृषि, और सामाजिक क्षेत्र के विकास में सहायक है। यह योगदान सामाजिक क्षेत्र के मजबूत संगठन से हुआ यह कहना उचित होगा।

- 1. औद्योगिक विकास:** महाराष्ट्र में औद्योगिकीकरण की गति तेज़ रही है, विशेषकर मुंबई, पुणे, और नागपुर जैसे शहरों में। राज्य ने उत्पादन, निर्माण, और सेवा क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का एक बड़ा हिस्सा बनाता है। MIDC हर ज़िले में पहुंच गयी।
- 2. कृषि:** राज्य ने कृषि क्षेत्र में कई सुधार किए, जैसे सिंचाई परियोजनाओं, जलसंचय योजनाओं और उन्नत कृषि तकनीकों का उपयोग। महाराष्ट्र देश में गन्ना, कपास, और फल-फूल उत्पादन में अग्रणी राज्य है।
- 3. समाज कल्याण:** महाराष्ट्र ने पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान शिक्षा, स्वास्थ्य, और ग्रामीण विकास के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए, जिससे राज्य के सामाजिक संरचनाओं में सुधार हुआ और नागरिकों के जीवन स्तर में वृद्धि हुई।
- 4. संवेदनशील क्षेत्र में निवेश:** महाराष्ट्र ने अपनी योजनाओं के माध्यम से बुनियादी ढांचे जैसे सड़क, रेल, जल आपूर्ति और ऊर्जा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण निवेश किया, जिसका राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
- 5. ऊर्जा:** महाराष्ट्र देश के प्रमुख ऊर्जा उत्पादक राज्यों में से एक है, और राज्य ने पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान किया है, जिससे पूरे देश की ऊर्जा आवश्यकता को पूरा करने में मदद मिली।

इस प्रकार, महाराष्ट्र का पंचवर्षीय योजनाओं में योगदान राष्ट्रीय विकास की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, विशेष रूप से औद्योगिक और कृषि विकास, सामाजिक कल्याण, और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में मिला सहयोग यह महाराष्ट्र राज्य के लिए ही नहीं परंतु देश के लिए भी महत्वपूर्ण रहा है ।

कार्यकर्ताओंकी संक्षिप्त जानकारी

(महाराष्ट्र के प्रमुख नेतृत्व और उनके कार्यों के बारे में, जानकारी देने हेतु कुछ कार्यकर्ताओं का उल्लेख संक्षिप्त रूप से किया गया है। जिन व्यक्ति/संस्था तथा घटना का उल्लेख सामाजिक क्षेत्र के जेष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा, सामान्य कार्यकर्ताओं द्वारा अथवा अवगत साहित्य और इंटरनेट संकलन द्वारा प्राप्त हुआ है। संकलक यह पूर्णतः मान्य करता है कि, इसके सिवा भी अनेक नाम



और जानकारी होगी, इसका उल्लेख इस साहित्य में समाविष्ट करने हेतु हम उत्सुक है। उचित स्रोतों द्वारा मिली हुई जानकारी विशेष रूप से विस्तारित करने में संकलक विशेष रुची रखता है, अधिक जानकारी का स्वागत पूर्वक समावेश होगा।)

परिशिष्ट ३ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक नेता और कार्यकर्ता

	विचारक / संसाधन व्यक्ति - जिन्होंने नीतियों, रणनीतियों और जमीनी स्तर के काम और आंदोलनों को प्रभावित किया; उनमें से अधिकांश ने अपने स्वयं के संगठनों की स्थापना और नेतृत्व किया)	सामाजिक कार्यकर्ता जिनके जमीनी स्तर के काम ने कई लोगों को प्रेरित किया और उससे दोहराने आगे के अन्य लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया गया	आंदोलन के नेता जिनकी पक्षधरता और नेटवर्किंग ने परिवर्तनकारी बदलाव लाई
	<ul style="list-style-type: none"> • इंदुताई पटवर्धन • आप्पासाहेब पवार, • आप्पा पेंडसे • डॉ. मणीभाई देसाई , • डॉ. शिवाजीराव पटवर्धन, • डॉ. वि. म. दांडेकर, • डॉ घारे • डॉ.. मोहन धारिया, • आनंदराव पाटील • डॉ. बानू कोयाजी, • डॉ. एस. डी. कुलकर्णी, • डॉ. दादा गुजर • डॉ. व्ही. डी. देशपांडे • डॉ अनिल / • डॉ. सुनंदा अवचट • विलास चाफेकर, • डॉ दी. व्ही. गोखले • रा वि भुस्कुटे, • श्री ग माजगावकर • डॉ रजनीकांत आरोळे • राजेश कुरुविला 	<ul style="list-style-type: none"> • सिंधुताई सपकाळ, • विपुला कादरी • डॉ अहंकारी • सुनील देशपांडे • प्रेमा गोपालन, • ख्रिस्तोफर बेनिंजर , • सुनील पोटे • रजनी करकरे देशपांडे, 	<ul style="list-style-type: none"> • दत्ता देसाई, • दत्ता सावळे , • दत्ता सामंत, • मृणाल गोन्हे, • नरेंद्र दाभोलकर, • विद्या बाळ • विजय कान्हेरे • विद्युत भागवत • शोभा भागवत • एकनाथ आव्हाड, • संजय संगवई, Bhai रजनीकांत,

	<p>विचारक / संसाधन व्यक्ति - जिन्होंने नीतियों, रणनीतियों और जमीनी स्तर के काम और आंदोलनों को प्रभावित किया; उनमें से अधिकांश ने अपने स्वयं के संगठनों की स्थापना और नेतृत्व किया)</p>	<p>सामाजिक कार्यकर्ता जिनके जमीनी स्तर के काम ने कई लोगों को प्रेरित किया और उससे दोहराने आगे के अन्य लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया गया</p>	<p>आंदोलन के नेता जिनकी पक्षधरता और नेटवर्किंग ने परिवर्तनकारी बदलाव लाई</p>
	<ul style="list-style-type: none"> • मिनी बेदी, • डॉ. दयालचंद • डॉ अभय बंग & डॉ राणी बंग • डॉ प्रकाश & मंदाकिनी आमटे • डॉ विकास & आमटे, • विजय जावंधिया, • अनिल शिदोरे, • शिरीष जोशी, • मिनार पिंपळे, • मिलिंद बोकील • सीमंतिनी खोत • संदीप काळे, • कोल्हे • सातव • पापळकर 	<ul style="list-style-type: none"> • डॉ सुधाताई कोठारी, • गिरीश प्रभुणे, • डॉ सतीश & शुभदा गोगुलवार • डॉ शाम अष्टेकर • अंजली कानिटकर • अनिता गोखले, • कांचन परुळेकर, • दिलीप कुलकर्णी • नसीमा हरजूक, • नीलिमा मिश्रा • निरुपमा देशपांडे • अनिल काळे, • अरुण शिवरकर, • प्रमोद झिंजाडे, • मंगला दैठणकर, • रमेश भिसे • हरीशचंद्र सुडे, • भीम रासकर, • शाम अष्टेकर 	<ul style="list-style-type: none"> • मेधा पाटकर, • नीलम गोन्हे, • ललित बाबर, • भाई जगताप, • विवेक पंडीत, • उल्का महाजन • राजन इंदुलकर, • गीताली,

आंतरराष्ट्रीय मॅगसेसे अवॉर्ड से सन्मानित महाराष्ट्र के जेष्ठ समाजसेवी

1. Vinoba Bhave – Community leadership – 1958
 2. Chintaman Deshmukh – Government services – 1959
 3. Dr. Manibhai Desai – Public service – 1982
 4. Dr. Muralidhar Amte – Public service – 1985
 5. Pandurang Athavale – Community leadership – 1996
 6. Dr. Mandakini and Dr Prakash Amte – Community leadership – 2008
- More than 10% (6 out of 50) awards have gone to pioneering work in Maharashtra, no other state can boast this treat!

परिशिष्ट ३ : महाराष्ट्र के प्रभावी सामाजिक नेता और कार्यकर्ता

विचारक / संसाधन व्यक्ति - जिन्होंने नीतियों, रणनीतियों और जमीनी स्तर के काम और आंदोलनों को प्रभावित किया; उनमें से अधिकांश ने अपने स्वयं के संगठनों की स्थापना और नेतृत्व किया)	सामाजिक कार्यकर्ता जिनके जमीनी स्तर के काम ने कई लोगों को प्रेरित किया और उससे दोहराने आगे के अन्य लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया गया	आंदोलन के नेता जिनकी पक्षधरता और नेटवर्किंग ने परिवर्तनकारी बदलाव लाई
<ul style="list-style-type: none"> • इंदुताई पटवर्धन • आप्पासाहेब पवार, • आप्पा पेंडसे • डॉ. मणीभाई देसाई , • डॉ. शिवाजीराव पटवर्धन, • डॉ. वि. म. दांडेकर, • डॉ घारे • डॉ.. मोहन धारिया, • आनंदराव पाटील • डॉ. बानू कोयाजी, • डॉ. एस. डी. कुलकर्णी, • डॉ. दादा गुजर • डॉ. व्ही. डी. देशपांडे • डॉ अनिल / 	<ul style="list-style-type: none"> • सिंधुताई सपकाळ, • विपुला कादरी • डॉ अहंकारी • सुनील देशपांडे • प्रेमा गोपालन, • ख्रिस्तोफर बेनिंजर , • सुनील पोटे • रजनी करकरे देशपांडे, 	<ul style="list-style-type: none"> • दत्ता देसाई, • दत्ता सावळे , • दत्ता सामंत, • मृणाल गोन्हे, • नरेंद्र दाभोलकर, • विद्या बाळ • विजय कान्हेरे • विद्युत भागवत • शोभा भागवत • एकनाथ आव्हाड, • संजय संगवई, Bhai रजनीकांत,

	<p>विचारक / संसाधन व्यक्ति - जिन्होंने नीतियों, रणनीतियों और जमीनी स्तर के काम और आंदोलनों को प्रभावित किया; उनमें से अधिकांश ने अपने स्वयं के संगठनों की स्थापना और नेतृत्व किया)</p>	<p>सामाजिक कार्यकर्ता जिनके जमीनी स्तर के काम ने कई लोगों को प्रेरित किया और उससे दोहराने आगे के अन्य लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया गया</p>	<p>आंदोलन के नेता जिनकी पक्षधरता और नेटवर्किंग ने परिवर्तनकारी बदलाव लाई</p>
	<ul style="list-style-type: none"> • डॉ. सुनंदा अवचट • विलास चाफेकर, • डॉ दी. व्ही. गोखले • रा वि भुस्कुटे, • श्री ग माजगावकर • डॉ रजनीकांत आरोळे • राजेश कुरुविला 		
	<ul style="list-style-type: none"> • मिनी बेदी, • डॉ. दयालचंद • डॉ अभय बंग & डॉ राणी बंग • डॉ प्रकाश & मंदाकिनी आमटे • डॉ विकास & आमटे, • विजय जावंधिया, • अनिल शिदोरे, • शिरीष जोशी, • मिनार पिंपळे, • मिलिंद बोकील • सीमंतिनी खोत • संदीप काळे, • कोल्हे • सातव • पापळकर 	<ul style="list-style-type: none"> • डॉ सुधाताई कोठारी, • गिरीश प्रभुणे, • डॉ सतीश & शुभदा गोगुलवार • डॉ शाम अष्टेकर • अंजली कानिटकर • अनिता गोखले, • कांचन परुळेकर, • दिलीप कुलकर्णी • नसीमा हरजूक, • नीलिमा मिश्रा • निरुपमा देशपांडे • अनिल काळे, • अरुण शिवरकर, • प्रमोद झिंजाडे, • मंगला दैठणकर, • रमेश भिसे • हरीशचंद्र सुडे, • भीम रासकर, • शाम अष्टेकर 	<ul style="list-style-type: none"> • मेधा पाटकर, • नीलम गोन्हे, • ललित बाबर, • भाई जगताप, • विवेक पंडीत, • उल्का महाजन • राजन इंदुलकर, • गीताली,

	<p>विचारक / संसाधन व्यक्ति - जिन्होंने नीतियों, रणनीतियों और जमीनी स्तर के काम और आंदोलनों को प्रभावित किया; उनमें से अधिकांश ने अपने स्वयं के संगठनों की स्थापना और नेतृत्व किया)</p>	<p>सामाजिक कार्यकर्ता जिनके जमीनी स्तर के काम ने कई लोगों को प्रेरित किया और उससे दोहराने आगे के अन्य लोगों द्वारा मार्गदर्शन किया गया</p>	<p>आंदोलन के नेता जिनकी पक्षधरता और नेटवर्किंग ने परिवर्तनकारी बदलाव लाई</p>

डॉ. बानू कोयाजी: महिला और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवा ; KEM, पुणे

- प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं को सुलभ बनाया। वडू ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्र को मॉडेल केंद्र बनाया; और PHC कैसा हो, इसकी रूपरेखा बनाई; MPW (Multi -Purpose Worker) और VHW (village Health Worker) के जिम्मेवारियों को निश्चित किया, उनके प्रशिक्षण का ढांचा बनाया ; दूर-दराज के गांवों में रहने वाले, समाज के निचले वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों तक स्वास्थ्य सेवा से कैसे पहुंचे इसकी पूरी सिस्टम, सरकार के लिये भी मार्गदर्शक सूची बनी। उनका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा को हर गांव तक पहुंचाना था।

डॉ. दादा गुजर: महाराष्ट्र आरोग्य मंडल, पुणे

- शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, महिलाओं और बच्चों के सशक्तिकरण सहित विभिन्न क्षेत्रों में फैला हुआ काम है। विशेष रूप से जमीनी स्तर की पहल के माध्यम से ग्रामीण महाराष्ट्र में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और वंचित समुदायों के लिए बेहतर जीवन स्थितियों और अवसरों की वकालत करने में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए जाना जाता है।

डॉ. मणीभाई देसाई: Bharatiya Agro Industries Foundation, बाएफ, उरली कांचन, पुणे

- गांधीवादी विचारों पर आधारित ग्रामीण विकास कार्यक्रम। दुधारू गाय का नस्ल उत्पादन बढ़ाने हेतु संकरीकरण तकनीक भारत में लाया, और पुरे देशमे फैलाया, पानी के लिए कम्यूनिटी लिफ्ट इरिगेशन, चारा निर्मिती, एक एकड गरीबी रेखा के उपर लाने वाला वाडी (आगरो होरटी फॉरिस्ट्र) मॉडेल, ये सारे रक्षत्रित तथा राज्य स्तर की योजने बन गई ।

डॉ. मोहन धारिया: वनराई, पुणे

- जल संरक्षण और पर्यावरण सुधार में अग्रणी। पर्यावरणवाद के लिये राजनीति की राजनेता थे। उन्होंने पर्यावरण और सामाजिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए विभिन्न पहलों में शामिल थे। क्षारोपण, जल संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने पर केंद्रित था। पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देने में उनके काम और ग्रामीण विकास में उनकी भागीदारी ने उन्हें व्यापक सम्मान दिलाया।

डॉ. शिवाजीराव पटवर्धन: तपोवन, अमरावती

- १९५० में 'विदर्भ महारोगी सेवा मंडल तपोवन' यह एक आवासीय सेवा आश्रम की स्थापना की, जो कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए समर्पित था। उन्होंने लगभग ६५,००० कुष्ठ रोगियों को न केवल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई, बल्कि उन्हें व्यवसायिक शिक्षा देकर आत्मनिर्भर बनने में सहायता की। इसके साथ ही उन्होंने करीब २०,००० अनाथ, निराश्रित और आदिवासी बच्चों का पालन-पोषण किया, उन्हें शिक्षित किया और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य बनाया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया।

अंजली कानिटकर, आरोहन, पालघर

- महाराष्ट्र सरकार में सामाजिक लेखा परीक्षा की निदेशक हैं और सरकार की मनरेगा, वृद्धावस्था और विधवा पेंशन और आवास योजनाओं के सामाजिक लेखा परीक्षा के संचालन में शामिल हैं। तीन बार मुंबई विश्वविद्यालय की सीनेट के लिए शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से चुनी गईं और अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय के कामकाज में सक्रिय रूप से योगदान दिया। उन्होंने

विश्वविद्यालय में यौन उत्पीड़न के खिलाफ समिति में भी काम किया है और विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों और उच्च शिक्षा संस्थानों में लैंगिक समानता के मुद्दों को संबोधित किया है।

डॉ विनायक विश्वनाथ तथा आप्पा पेंडसे - ज्ञान प्रबोधिनी ; १९६२, पुणे ;

- युवा व्यक्तियों में नेतृत्व क्षमता को पहचानने और विकसित करने पर केंद्रित काम; साथ ही उनमें देशभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे मूल्य विकसित करने का काम करती है। पेंडसे का मानना था कि शिक्षा समाज परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है, और उन्होंने बुद्धिमत्ता और चरित्र के विकास पर जोर दिया. आप्पा पेंडसे का कार्यक्षेत्र ग्रामीण विकास, महिलाओं को सशक्त बनाने, धर्मों के बीच सद्भाव बढ़ाने और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता फैलाने तक फैला हुआ था। ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल, नेतृत्व शिविर और सामाजिक पहलों का संचालन करती है, जो "सेवा के माध्यम से नेतृत्व" के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

डॉ मुकुंद अनंत घारे;अध्यक्ष अफार्म (Association for Renewal in Maharashtra)

- एक प्रतिष्ठित हाइड्रो-जियोलॉजिस्ट, परिसर, रेडआर इंडिया, मराठमोली, सहजीवन इकोलॉजिकल सोसाइटी, ड्रॉप के अध्यक्ष;, इसके अलावा पानी से संबंधित अनुसंधान और नीति में बड़ा योगदान दिया; महाराष्ट्र में जल आपूर्ति कार्यक्रमों को लागू करने के लिए ग्रामीण विकास क्षेत्र और सरकारी निकायों में उनका तकनीकी मार्गदर्शन अद्वितीय है, जिसे उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और गोवा में अनुकूलित किया गया। वह यूनिसेफ, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ और विश्व बैंक द्वारा नियुक्त अनुसंधान टीमों और टास्क फोर्स का भी हिस्सा थे; जल संसाधन विकास एजेंसियों के राष्ट्रीय संघ (सिंचाई मंत्रालय के तहत पंजीकृत) के सचिव के रूप में कार्य किया; राष्ट्रीय पेयजल प्रौद्योगिकी मिशन के सदस्य,

विलास चाफेकर: जाणीव संघटना / वंचित विकास ; पुणे

- युवाकोंको समाजसेवा के लीये प्रेरित, संगठीत और प्रशिक्षित किया । उनका मुख्य ध्यान सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण और गरीबों के लिए बेहतर जीवन स्थितियाँ बनाने पर था। उन्होंने ने कए कार्यकर्ता तय्यार कियए, जो आज दलितों, आदिवासियों और अन्य पिछड़े वर्गों के लिए काम कर रह है। शहरी बस्ती और गावोमे बच्चो को जीवन कौशल्य बंधने के लीये अभिरुचि वर्ग चलटीए, अऔर चलनेवले कए युवा तैयार किये , एचआयव्ही एड्स से बाधित बच्चो के लीये एक केअर सेंटर बनाया, हातगाडी (ठेला) चलाने वालोंकी संगठन बनई, - ये केवळ जारिये तही - युवाओं समाज में जागरूकता फैलाने और समाज के निचले वर्गों को सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षित करना ये उनक अभियान था।

अनिल शिदोरे - ग्रीनअर्थ और मैत्री , पुणे

- विकास क्षेत्र में 35 वर्षों से अधिक का विविध अनुभव है। विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक विजेता है, उन्होंने ने विभिन्न क्षेत्रों में काम किया है, जैसे कि वयस्क शिक्षा, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, स्वास्थ्य, शिक्षा, मानवाधिकार, राहत और पुनर्वास, अनुदान प्रबंधन, सामाजिक संचार, स्वच्छता आदि, विभिन्न भूमिकाओं में और विभिन्न संगठनों के साथ। जीवन ने हमेशा अनिल के लिए असामान्य मोड़ लिए हैं और आज वह सक्रिय राजनीति के माध्यम से परिवर्तन की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

अरुण शिवकर - SAKAV, OXFAM Australia

- विशेष रूप से गरीब समुदायों को हमें कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आदिवासियों से संबंधित, जैसे कि कटकरी और ठाकर, इनके बारे में... आदिवासी इस क्षेत्र के उच्च जातीय लोगों के बंधुआ श्रमिक दूर-दूर के क्षेत्रों में कोयला बनाने के उद्योग में स्थलांतर कर रहे थे। दूसरा गरीब समुदाय छोटा सीमांत किसान समुदाय था... और वे भी प्रभावित हो रहे थे क्योंकि... वहां कृषि भूमि नष्ट हो चुकी थी... तो इस पृष्ठभूमि में, हमने यह सोचा कि ऐसे लोगों को गरीबी और बहिष्करण से बाहर निकालने के लिए एक संस्था होनी चाहिए और इसलिए 1994 में हमने SAKAV संस्था की स्थापना की।

आदी

पटेल

<https://www.haqrc.org/late-adi-patel/>

अनिल काळे - Gramayan / AFARM, पुणे

- शहरी और ग्रामीण बाल प्रायोजन और बाल-केंद्रित सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में अनुभव; HIV/AIDS रोकथाम और समर्थन कार्यक्रमों में अनुभव; जल संरक्षण और जल आपूर्ति योजनाओं में अनुभव। ग्रामायन में, 1974 से ग्रामीण विकास में काम कर रही स्वैच्छिक संगठनों को नेटवर्किंग और प्रशिक्षण समर्थन; 1978 से सामुदायिक सिंचाई और सामुदायिक कृषि परियोजनाओं में अनुभव; सामाजिक रूप से पिछड़े समुदायों के पुनर्वास; जलाशय विकास और पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं में अनुभव।

एकनाथ आव्हाड : परभणी

- विद्यार्थी चळवळ, विधायक संसद' से काम की शुरुआत; अस्पृश्यता और जातिवाद के खिलाफ उन्होंने संघर्ष किया; 1980 से वेठबिगारी, पोतराज जैसी प्रथाओं के खिलाफ संघर्ष शुरू किया;

भूमिहीन दलितों को गायरान ज़मीन पर कब्जा करके खेती करने का साहस दिया। इसके लिए गायरान सभाएं आयोजित कीं। भूमिहीन महिलाओं के लिए उन्होंने बचत समूह बनाए। सावित्रीबाई फुले म्यूच्युअल बेनिफिट ट्रस्ट स्थापित करके महिलाओं को ऋण प्रदा

इंदुताई पटवर्धन

- एक प्रमुख समाजसेविका थीं और आनंदग्राम की संस्थापिका, जो महाराष्ट्र के डुडुळगांव में स्थित है। उन्होंने कुष्ठरोगियों के जीवन में आनंद और dignity को वापस लाने के लिए अपना समर्पित जीवन बिताया। इंदुताई ने 1970 के दशक में आनंदग्राम की स्थापना की, जहाँ उन्होंने कुष्ठरोगियों को न केवल चिकित्सा सहायता दी, बल्कि सामाजिक और मानसिक सहारा भी प्रदान किया। उनके द्वारा शुरू किया गया आनंदग्राम कुष्ठरोगियों और उनके परिवारों के लिए एक सुरक्षित आश्रय बना, जहाँ वे समाज में अपनी पहचान और सम्मान के साथ जी सके। इंदुताई का समाज कल्याण में योगदान विशेष रूप से स्वास्थ्य देखभाल और कुष्ठरोग उन्मूलन के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण था। 8 फरवरी 1999 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनका योगदान आज भी आनंदग्राम के माध्यम से जीवित है।
- https://www.mymahanagar.com/editorial/daily-special/great-social-worker-dr-indutai-patwardhan-in-marathi/742866/#goog_rewarded

उल्का महाजन

- उल्का महाजन ने 1989 में रायगड जिले के आदिवासी क्षेत्रों में काम करना शुरू किया। आदिवासियों पर उपासमारी की स्थिति आ गई थी, और वे अपनी ज़मीनों पर काम करने के लिए वेठबिगारी करने लगे थे, जिससे वे लंबे समय तक शोषण का शिकार हो रहे थे। उल्का महाजन पिछले लगभग दो

दशकों से 15,000 परिवारों और करीब 75,000 लोगों के लिए संघर्ष कर रही हैं। उनका मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी ज़मीन के अधिकार दिलवाना, उनका पुनर्वास करना, खेतिहर मजदूरों को संगठित करना, ईट भट्टों में काम करने वाले मजदूरों और प्रवासी मजदूरों का संगठन बनाना, आदिवासी महिलाओं को सहारा देना, रायगड जिले के दलितों को पानी का समान अधिकार दिलवाना था। इसके अलावा, वह रायगड में एसईजेड (विशेष आर्थिक क्षेत्र) और दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे के खिलाफ भी संघर्ष करती रही हैं।

<https://thinkworks.in/speakers/ulka-mahajan/>

कांचन परुळेकर

- डॉ. व्ही.टी. पाटील उर्फ काकाजी, कोल्हापूर के पूर्व सांसद और पूर्व विधायक, ताराराणी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर और मौनी विश्वविद्यालय, गारगोटी के संस्थापक और अध्यक्ष थे। वे एक प्रसिद्ध सामाजिक नेता और मार्गदर्शक सामाजिक कार्यकर्ता थे। उनकी पत्नी सौ. सरोजिनीदेवी पाटील भी एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं, और उन्होंने 1968 में "सरोजिनीदेवी विश्वनाथ विश्वस्त मंडल, कोल्हापूर" नामक एक अनोखे ट्रस्ट की स्थापना की। ताराराणी विश्वविद्यालय में लड़कियों की शिक्षा और समाज में महिलाओं के विकास के लिए उनके मन में गहरी इच्छाशक्ति और प्रेरणा थी, जिसके कारण उन्होंने अपनी सारी संपत्ति ट्रस्ट को दान में दे दी। महिलाओं के कल्याण के लिए किया गया यह महान बलिदान 'स्वयंसिद्धा' नामक एक अनोखे प्रकल्प का जनक बना, जिसकी शुरुआत मई 1992 में हुई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य महिला विकास है, जिसे पारंपरिक और गैर-पारंपरिक शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इस प्रकल्प के कारण 2920 लड़कियों को लाभ हुआ है।

Crispin Lobo, Social Center, ahmednagar

- लगभग 32 वर्षों तक ग्रामीण विकास क्षेत्र में विभिन्न स्तरों पर काम किया - जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन, कार्यक्रम प्रबंधन से लेकर नीति संलग्नता तक। 1993 में WOTR की सह-स्थापना करने के अतिरिक्त, उन्होंने 3 अन्य गैर-लाभकारी संस्थाओं की भी सह-स्थापना की - 2002 में समपदा ट्रस्ट (ST), 2013 में समपदा एंटरप्रेन्योरशिप एंड लाइवलीहुड फाउंडेशन (SELF) और 2007 में संजीवनी इंस्टीट्यूट ऑफ एम्पावरमेंट एंड डेवलपमेंट (SIED)। इन संस्थाओं ने मिलकर भारत के 9 राज्यों में 4.3 मिलियन से अधिक लोगों के जीवन पर प्रभाव डाला है।

<https://www.linkedin.com/in/crispinolobo/?originalSubdomain=in>

गंगाधर गाडे

- गंगाधर गाडे हे एक भारतीय राजकारणी आणि आंबेडकरवादी राजकिय-सामाजिक कार्यकर्ते आहेत. ते रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडियाचे माजी नेते असून पॅंथर रिपब्लिक पक्षाचे संस्थापक व अध्यक्ष आहेत. ते महाराष्ट्राचे माजी मंत्री आहेत. ते एक लोकप्रिय बौद्ध नेता आहेत. ते मराठवाडा विद्यापीठाच्या नामांतर आंदोलनाचे एक प्रमुख नेते होते. ७ जुलै १९७७ रोजी दलित पॅंथरचे सरचिटणीस गंगाधर गाडे यांनी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे नाव मराठवाडा विद्यापीठाला द्यावे, अशी सर्वप्रथम मागणी केली होती.इ.स. १९९४ मध्ये, मराठवाडा विद्यापीठाचे नाव बदलून 'डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ' असा नामविस्तार केला गेला.

गिरीश प्रभुणे

- प्रभुणे यांनी १९७० च्या दशकाच्या सुरुवातीला सामाजिक कार्यकर्ते म्हणून आपल्या कारकिर्दीला सुरुवात केली. १९७२ च्या महाराष्ट्रातील दुष्काळात त्यांनी सुरुवातीला श्रीकांत जी. माजगावकर

यांच्यासोबत ग्रामायण एनजीओमध्ये काम करायला सुरुवात केली. त्यांनी आशिधार नावाचे नियतकालिकही चालवले, परंतु या प्रयत्नामुळे ते कर्जबाजारी झाले.

- आज, विकास क्षेत्र में, वह सामुदायिक स्वास्थ्य की रोकथाम और आत्म-सहायता और आत्म-शासन के आंदोलन के माध्यम से समुदायों को सशक्त बनाने के विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से MBBS की पढ़ाई की है। वह राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर प्रगतिशील संगठनों के साथ एक सलाहकार, प्रशिक्षक या बोर्ड सदस्य के रूप में जुड़े हुए हैं।

<https://www.arogyasathi.org/aboutus-page>

दत्ता सामंत

- दत्त सामंत एक प्रमुख श्रमिक संघ नेता थे जिन्होंने मुंबई के कपड़ा मिल मजदूरों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया, विशेष रूप से 1982 के हड़ताल के दौरान, जिसमें 2 लाख से अधिक मजदूर शामिल थे। उन्होंने बेहतर वेतन, बेहतर कामकाजी परिस्थितियाँ और कुछ दमनकारी कानूनों को हटाने के लिए संघर्ष किया, और श्रमिकों के अधिकारों के लिए एक शक्तिशाली आवाज बने। उनके नेतृत्व में एक साल लंबी हड़ताल हुई, जिसने शहर की कपड़ा उद्योग को गंभीर रूप से प्रभावित किया। हालांकि हड़ताल अंततः विफल हो गई, लेकिन इसने उनके मजदूरों की भलाई और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को उजागर किया। सामंत का कार्य संघीय सक्रियता से परे था, क्योंकि वे राजनीति में भी सक्रिय थे, वंचित समुदायों के अधिकारों का समर्थन करते थे और सामाजिक परिवर्तन के लिए वकालत करते थे।

डॉ. मोहन धारिया

- मोहन धारिया एक पूर्व केंद्रीय मंत्री, वकील और समाजसेवी थे। अपने अंतिम दिनों में वे पुणे में रहते थे। धारिया एक पर्यावरणविद थे और उन्होंने एक गैर-सरकारी संगठन "वनराई" चलाया। वे पुणे लोकसभा क्षेत्र से दो बार लोकसभा के सदस्य चुने गए, पहली बार 1971 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) के सदस्य के रूप में और राज्य मंत्री बने, और फिर 1977 में भारतीय लोक दल के सदस्य के रूप में चुने गए, जब वे मोरारजी देसाई मंत्रालय में केंद्रीय वाणिज्य मंत्री बने। इसके पहले, वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में दो बार राज्यसभा के सदस्य रहे, पहली बार 1964-1970 तक और फिर 1970-1971 तक।

रेणू गावस्कर

- गेली 35 वर्षे सामाजिक कार्यात कार्यरत समाजातील वंचित मुलांच्या सर्वांगीण विकासासाठी प्रयत्नशील, व्यसनासक्त व्यक्ती व त्यांचे कुटुंबिय यांसाठी मुक्तांगण व कृपा फाऊंडेशन या संस्थामार्फत समुपदेशनाची सेवा, शिक्षक- पालक यांसाठी कार्यशाळा.
<https://www.globalswasthyam.com/speakers/renu-gavaskar/>

डायगो डिसोझा

- जनसेवा मंडळ, महाराष्ट्र जनसेवा मंडळ, महाराष्ट्राशी संबंधित होते. Fr. डायगो, दुसऱ्या लाटेत मरण पावला. तो 50 ख्रिश्चन पिता होता आणि त्याचे कुटुंब नव्हते. जनसेवा मंडळात ते ५ वर्षांहून अधिक काळ कार्यरत होते. 22 एप्रिल 2021 रोजी COVID-19 दरम्यान समाजाची सेवा करणाऱ्या CSO चा कार्यकारिणी आम्ही गमावला. जनसेवा मंडळ, महाराष्ट्राकडे कोणतीही गट आरोग्य विमा पॉलिसी नाही किंवा त्यांच्या कोणत्याही कर्मचाऱ्यांचा कोणताही आरोग्य विमा नव्हता.

नसीमा हुरजूक

- अपने गुरु 'बाबूकाका दीवान' से प्रेरित होकर, नसीमा हुजरूक ने अपने समान विचारधारा वाले दोस्तों के साथ विकलांगों की मदद के लिए 1984 में ' हेल्पर्स ऑफ द हैंडीकैप्ड, कोल्हापुर ' नामक एक संगठन शुरू किया, फिर 3 दिसंबर, 2020 को विश्व विकलांगता दिवस के अवसर पर , "साहस विकलांगता अनुसंधान" एवं केर फाउंडेशन, कोल्हापुर" एक नई संस्था की स्थापना की बनाया इस नए संगठन के माध्यम से महाराष्ट्र और पड़ोसी राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में समाज के वंचित वर्गों को पहले से भी बड़े पैमाने पर बुनियादी सहायता प्रदान की जा रही है और उन्हें विभिन्न कौशल प्रशिक्षण प्रदान करके आत्मनिर्भर बनने में भी मदद की जा रही है।

नीलम गोहे

- नीलम गोरे 'स्त्री आधार केंद्र' (SAK - महिला विकास केंद्र) की संस्थापक ट्रस्टी और वर्तमान अध्यक्ष हैं, जिसे 1984 में स्थापित किया गया था। SAK का उद्देश्य लिंग समानता पर आधारित समाज का निर्माण करना है और यह एक मजबूत 'नीति वकालत' संगठन भी है। नीलम गोरे ने गुजरात और महाराष्ट्र में भूकंप, बाढ़, सूखा, बम विस्फोट जैसी आपदाओं में प्रभावित महिलाओं को सहायता प्रदान की, 1985-1994 के बीच महाराष्ट्र में भूमिहीन श्रमिकों के अधिकारों के लिए काम किया, दलितों और घुमंतू जनजातियों के विकास आंदोलन में भाग लिया, महिलाओं और लड़कियों की तस्करी के खिलाफ काम किया, अत्याचार और घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं को कानूनी सहायता दी, महिला संबंधित कानूनों पर कार्यशालाएं आयोजित की, और सरकारी आवासीय विद्यालयों में आदिवासी लड़कियों के लिए सुरक्षित वातावरण बनाने का कार्य किया।

https://en.wikipedia.org/wiki/Neelam_Gorhe

नीलिमा मिश्रा

- नीलिमा मिश्रा महाराष्ट्र राज्य की एक समाजसेवी हैं, जिन्हें 2011 में उभरते नेतृत्व के लिए रामन मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त हुआ। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने डॉ. कालबाग के मार्गदर्शन में विग्यान आश्रम, पाबल में कार्य किया। 2005 में डॉ. जगन्नाथ वाणी की मदद से उन्होंने भगीनी निवेदिता ग्रामीण विज्ञान निकेतन की स्थापना की। नीलिमा का मुंबई के केयरिंग फ्रेंड्स और दिल्ली के लेट्स ड्रीम फाउंडेशन से भी संबंध है। उन्होंने अपना पुरस्कार राशि भगीनी निवेदिता ग्रामीण विज्ञान निकेतन को दान की, जो माइक्रो-फाइनेंसिंग के माध्यम से गरीब महिलाओं की मदद करता है। 2013 में उन्हें सामाजिक कार्य के लिए पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नरेंद्र दाभोलकर - अखिल भारतीय अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति (ABANS)

- सामाजिक न्याय आंदोलनों में सहभागी, डॉ. बाबा आढव का "एक गांव, एक पनथा" (एक गांव - एक कुआं) पहल। धीरे-धीरे, दाभोलकर ने अंधविश्वास उन्मूलन पर ध्यान केंद्रित किया और से जुड़ गए। 1989 में उन्होंने महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति (M.A.N.S) की स्थापना की और अंधविश्वासों के खिलाफ अभियान चलाया, जिसमें उन्होंने झूठे तांत्रिकों और तथाकथित 'चमत्कारी इलाज' का दावा करने वाले बाबाओं का सामना किया। उन्होंने देश के 'गॉडमेन' और स्वघोषित हिंदू साधुओं की आलोचना की, जो चमत्कार करने का दावा करते थे। वे परिवर्तन नामक एक सामाजिक केंद्र के संस्थापक सदस्य थे, जो सतारा जिले में स्थित है और जो समुदाय के हाशिए पर रहने वाले सदस्यों को सुरक्षा, सम्मान और समृद्धि के साथ जीवन जीने के लिए सशक्त बनाने का काम करता है। वे भारतीय तर्कवादी सनल एदामारुकू के निकट सहयोगी थे। दाभोलकर प्रसिद्ध मराठी साप्ताहिक "साधना" के संपादक भी थे, जिसकी स्थापना सने गुरुजी ने की थी। वे भारतीय तर्कवादी संघों के महासंघ के उपाध्यक्ष भी रह चुके थे।

गोविंदराव पानसरे

- गोविंदराव पानसरे ने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य किए। उन्होंने 'राष्ट्र सेवा दल' के स्थानीय शाखा से जुड़कर समाजवाद के विचारों को अपनाया और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (CPI) में शामिल हुए। पंढरपूर ने जाति-विरोधी विवाहों को बढ़ावा देने के लिए एक संगठन चलाया। उन्होंने 'पुत्रकामेष्टि यज्ञ' जैसी धार्मिक परंपराओं का विरोध किया, जो पुरुष संतान की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं। साथ ही, उन्होंने टोल करों के खिलाफ भी आंदोलन किया और नाथूराम गोडसे की महिमा का विरोध किया, जो गांधी जी के हत्यारे थे।

प्रमोद झिंजाडे

- विधवा प्रथा निर्मूलन मोहिमेला महाराष्ट्रात चालना देणारे प्रमोद झिंजाडे हे करमाळ्याचे ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ते आहेत. त्यांनी 'महात्मा फुले समाज सेवा मंडळ' या नावाने एनजीओ १९८२ साली स्थापन केली. अन्याय, अत्याचार रोखला आहे आणि न्याय प्रस्थापित केला आहे. प्रमोद झिंजाडे ही शाहू-फुले-आंबेडकर यांच्या विचाराने प्रेरित झालेली व्यक्ती. प्रमोद झिंजाडे यांनी त्यांच्या पश्चयात स्वतःच्या पत्नीने कुठलेही विधवेचे अनिष्ट नियम पाळू नयेत आणि त्यांच्यावर कोणी लादू नयेत म्हणून लग्नाच्या ४४ वर्षांनंतर हा निर्णय बॉन्ड पेपर वर लिहून ठेवला आहे.

प्रेमा गोपालन

- प्रेमा गोपालन (1955/1956 – 29 मार्च, 2022) एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थीं। उन्होंने 1984 में क्षेत्रीय संसाधन केंद्रों को बढ़ावा देने के लिए समाज (SPARC) की सह-स्थापना की। इसके बाद, उन्होंने स्वयम शिक्षण प्रयोग (SSP) की स्थापना की और 20 वर्षों से अधिक समय तक इसके कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्य किया, जो गरीब ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता योजनाओं में समर्थन प्रदान करता था। वह बिहार, गुजरात, केरल, महाराष्ट्र और तमिलनाडु में आपदा राहत कार्यों

के लिए भी प्रसिद्ध हैं। गोपालन को संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम से पुरस्कार प्राप्त हुए थे। 29 मार्च 2022 को एक छोटी सी बीमारी के बाद 66 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। https://en.wikipedia.org/wiki/Prema_Gopalan

बानू कोयाजी

- बानू जहांगीर कोयाजी (7 सितंबर 1917 – 15 जुलाई 2004) एक भारतीय चिकित्सक और परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण की कार्यकर्ता थीं। वह पुणे के किंग एडवर्ड मेमोरियल अस्पताल की निदेशक थीं, और महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में समुदाय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के कार्यक्रमों की शुरुआत की, जो भारत का तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। उन्होंने संघीय सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य किया और एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ बन गईं।
- https://en.wikipedia.org/wiki/Banoo_Jehangir_Coyaji

मंगला दैठणकर

- मंगला दैठणकर महाराष्ट्र की एक समाजसेवी हैं, जो सामाजिक क्षेत्र में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और सामुदायिक विकास जैसे मुद्दों पर सक्रिय रूप से काम किया है। उनका कार्य वंचित समुदायों के जीवन स्तर को सुधारने पर केंद्रित है, और उन्होंने सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न grassroots पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि उनके कार्य के बारे में सार्वजनिक जानकारी सीमित है, लेकिन उन्हें महाराष्ट्र में सामाजिक कारणों के प्रति उनकी निष्ठा और समर्पण के लिए पहचाना जाता है।

मिनार पिंपळे

- मिनार पिंपळे एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं और 'युवा' (Youth for Unity and Voluntary Action) के संस्थापक हैं, जो भारत में असहाय समुदायों को सशक्त बनाने के लिए काम करता है। उनका कार्य मानवाधिकार और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है, खासकर शहरी और ग्रामीण गरीबों के बीच। पिंपळे की संस्था प्रशिक्षण, वकालत और वित्तीय सहायता प्रदान करने में मदद करती है, विशेष रूप से हाशिए पर स्थित समूहों के लिए। इसके अलावा, वे विभिन्न वैश्विक मंचों पर सक्रिय हैं और एमनेस्टी इंटरनेशनल में एक नेतृत्व की भूमिका निभाते हैं, जहां वे क्षेत्रीय संचालन का नेतृत्व करते हैं। पिंपळे महिलाओं के सशक्तिकरण और युवा विकास जैसे पहलों में भी योगदान दे चुके हैं।

मंदाकिनी आमटे

- मंदाकिनी आमटे, बाबा आमटे की बहु, महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अपने पति डॉ. वसंत आमटे के साथ मिलकर आनंदवॉन समुदाय में कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उन्होंने ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया। साथ ही, वे समाज के पिछड़े वर्गों के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में निरंतर प्रयासरत रहीं।

मेधा पाटकर

- मेधा पाटकर एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने विशेष रूप से पर्यावरण और सामाजिक न्याय के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने नर्मदा बचाओ आंदोलन (NBA) की शुरुआत की,

जो नर्मदा बांध के निर्माण के खिलाफ था और इसके कारण होने वाले आदिवासी लोगों और पर्यावरण पर असर के खिलाफ संघर्ष किया। पाटकर ने भूमि अधिकारों, जल संसाधनों, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए भी काम किया है। उन्होंने राष्ट्रीय जन आंदोलनों के गठबंधन (NAPM) के माध्यम से गरीब और वंचित समुदायों के अधिकारों के लिए कई अभियानों में भाग लिया। उनका संघर्ष और नेतृत्व समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरणादायक है।

महेंद्र जीज

- महेंद्र तुर्कीया महाराष्ट्र के एक प्रमुख समाजसेवी और परोपकारी हैं। उन्हें महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, एकनाथ शिंदे द्वारा उनके उत्कृष्ट समाजसेवी कार्यों के लिए सम्मानित किया गया। तुर्कीया ने "भारत टैक्सपेयर वेलफेयर प्लेटफार्म फाउंडेशन" की स्थापना की, जो टैक्सेशन, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, और ग्रामीण विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करता है। उनकी अगुवाई में, इस फाउंडेशन ने जरूरतमंद समुदायों की सहायता की है और विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के दौरान मदद प्रदान की। उनका कार्य पर्यावरणीय स्थिरता, कौशल विकास, और गरीबी उन्मूलन के क्षेत्रों में भी व्यापक रूप से फैला हुआ है, जो उनकी समाज पर गहरे प्रभाव को दर्शाता है।

मिलिंद बोकील

- मिलिंद बोकील महाराष्ट्र के एक प्रमुख समाजसेवी, लेखक और कार्यकर्ता हैं, जिनकी सामाजिक योगदान विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक न्याय और समानता के लिए समर्पित है। उन्होंने दलित समुदायों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और संसाधनों तक पहुंच में सुधार करने के लिए कई पहल की हैं। वे "मूलनिवासी अधिकार" और "महिला सशक्तिकरण" जैसे मुद्दों पर सक्रिय रूप

से काम करते हैं। इसके अलावा, मिलिंद बोकील ने समाज के वंचित वर्गों के उत्थान के लिए विभिन्न आंदोलनों का नेतृत्व किया है और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ अपनी आवाज उठाई है। वे अपने लेखन के माध्यम से भी सामाजिक मुद्दों पर लोगों को जागरूक करते हैं।

मृणाल गोरे

- मृणाल गोरे महाराष्ट्र की एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता और राजनीतिज्ञ थीं। उन्हें "पानीवाली बाई" के नाम से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने गोरेगांव, मुंबई क्षेत्र में पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। वे 1961 में नगर निगम की सदस्य चुनी गईं। गोरे सामाजिक कारणों से गहरे जुड़ी हुई थीं, जिनमें 1972 में महंगाई विरोधी आंदोलन और गोवा मुक्ति संग्राम शामिल थे। वे संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन का भी हिस्सा थीं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से अभियान चला रही थीं। समाजवादी पार्टी की सदस्य के रूप में उन्होंने विधायक और संसद सदस्य के रूप में कार्य किया। गोरे ने आवास अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया, जिसके परिणामस्वरूप संगर्ष नगर आवास कॉलोनी का निर्माण हुआ। उनका कार्य आज भी सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण के क्षेत्र में कई लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

मुकुंद घारे

- डॉ. मुकुंद आनंद घारे, एक प्रतिष्ठित जलविज्ञानी थे, जिन्होंने महाराष्ट्र में ग्रामीण विकास क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जल आपूर्ति कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में स्थानीय सरकारों के साथ मिलकर काम किया, और महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश और गोवा में जल संसाधन प्रबंधन के लिए शोध और नीतियों का विकास किया। वे 'पारिसर' (पुणे) और 'रेडर इंडिया' जैसी संस्थाओं के अध्यक्ष रहे, जो पर्यावरणीय मुद्दों और आपदा प्रबंधन पर काम करती हैं। वे 'सहजीवन

इकोलॉजिकल सोसाइटी' और 'असोसिएशन फॉर एग्रीकल्चरल रिन्यूल इन महाराष्ट्र' के अध्यक्ष भी थे।

ललित बाबर

- ललित बाबर महाराष्ट्र के एक अनुभवी सामाजिक कार्यकर्ता हैं, जिनके पास सामाजिक विकास क्षेत्र में 30 वर्षों से अधिक का अनुभव है। उनका कार्य मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि अधिकार और सूखा निवारण पर केंद्रित है। वह विकास सहयोग प्रतिष्ठान के कार्यकारी समिति के सदस्य हैं, जो सतत विकास पहलों के लिए समर्पित एक संगठन है। 2017 में, बाबर ने महाराष्ट्र राज्य सरकार से "वतन" भूमि की पुनः प्राप्ति के प्रयासों का नेतृत्व किया, जो ऐतिहासिक रूप से अनुसूचित जातियों (SCs) और घुमंतु जनजातियों (NTs) को उपनिवेशी शासन के दौरान दी गई थी। बाबर डॉ. आंबेडकर शेती विकास व संशोधन संस्थान (ASVSS) से भी जुड़े हुए हैं, जहां वह वकालत और नेटवर्किंग प्रयासों में योगदान करते हैं।

शकुंतला पराजपे

- शकुंतला पराजपे (1896-1991) महाराष्ट्र की एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता, लेखिका और महिलाओं के सशक्तिकरण की समर्थक थीं। परिवार नियोजन के क्षेत्र में उनके अग्रणी कार्य के लिए वे जानी जाती हैं, और उन्होंने महिला और बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार लाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन (ILO) जैसे संगठनों के साथ सहयोग किया। उनका समर्थन शिक्षा और सामाजिक सुधार तक विस्तारित था, और उन्होंने मराठी और अंग्रेजी में व्यापक रूप से लेखन किया, जिसमें समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। उनके महत्वपूर्ण योगदानों को देखते हुए, उन्हें 1966 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। अपने सामाजिक कार्य के अलावा, शकुंतला एक

प्रसिद्ध लेखिका और अभिनेत्री भी थीं, जिनके कार्य अक्सर सामाजिक न्याय के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाते थे। वह अभिनेत्री और गणितज्ञ दुर्गा खोते की माँ थीं, और उनकी विरासत आज भी भारत में सामाजिक सुधार और महिलाओं के कल्याण के प्रयासों को प्रेरित करती है।

सुनील पोटे – युवामित्र

- सुनील पोटे महाराष्ट्र के एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता थे और "युवामित्र" संस्था के संस्थापक थे। उन्होंने युवा सशक्तिकरण, शिक्षा, और सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी संस्था ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और समाजिक जागरूकता के लिए कई पहलें की। उन्होंने हमेशा युवाओं को समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित किया। कोविड-19 के कारण उनका निधन हुआ, लेकिन उनके कार्यों का प्रभाव आज भी जारी है।

सिंधुताई सपकाळ

- सिंधुताई सपकाळ, जिन्हें "अनाथों की माँ" के रूप में जाना जाता है, महाराष्ट्र की एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता थीं। 14 नवंबर 1948 को वर्धा में जन्मी सिंधुताई ने व्यक्तिगत कठिनाइयों का सामना किया, जिसमें गर्भवती अवस्था में पति द्वारा त्याग दिया जाना शामिल था। इन चुनौतियों के बावजूद, उन्होंने अपने जीवन को अनाथ और परित्यक्त बच्चों की देखभाल और समर्थन में समर्पित किया। सिंधुताई ने कई अनाथालयों और आश्रयों की स्थापना की, जहां अनगिनत बच्चों को आश्रय, शिक्षा और भावनात्मक समर्थन प्रदान किया गया। उन्होंने महिलाओं और हाशिए पर रहने वाले लोगों के अधिकारों के लिए भी आवाज उठाई, और सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक शक्तिशाली आवाज बन गईं। अपने जीवनकाल में उन्होंने 750 से अधिक पुरस्कार प्राप्त किए, जिसमें 2021 में पद्मश्री भी शामिल है। सिंधुताई की विरासत उन हजारों बच्चों के माध्यम से जीवित

रहती है, जिन्हें उन्होंने पाला, और उनका जीवन लोगों को सामाजिक कल्याण और समानता के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है। उनका निधन 4 जनवरी 2022 को हुआ, और उन्होंने महाराष्ट्र में सामाजिक क्षेत्र पर एक अमिट प्रभाव छोड़ा।

सुधाताई कोठारी

- डॉ. सुधा कोठारी महाराष्ट्र की एक प्रमुख सामाजिक क्षेत्र की नेता हैं, जिन्हें महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास में उनके महत्वपूर्ण योगदानों के लिए जाना जाता है। वह चैतन्य की संस्थापक हैं, जो महाराष्ट्र में समुदाय आधारित सूक्ष्म वित्त संस्थाओं के क्षेत्र में अग्रणी संस्था है। डॉ. कोठारी का कार्य महिलाओं के लिए स्वयं सहायता समूहों (SHGs) को बढ़ावा देने पर केंद्रित था, जिसका उद्देश्य बचत की आदतों को बढ़ावा देना और महिलाओं की वित्तीय और सामाजिक स्वतंत्रता के लिए एक मंच तैयार करना था। चैतन्य के माध्यम से, उन्होंने महाराष्ट्र में पहला स्वयं सहायता समूह महासंघ, ग्रामीण महिला स्वयंसिद्धा संघ (GMSS) की स्थापना में भी मदद की, और ग्रामीण महिलाओं की वित्तीय और सामाजिक क्षमताओं को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सुचित्रा मोर्डेकर

- सुचित्रा मोर्डेकर महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र में एक सक्रिय व्यक्ति हैं, जो विशेष रूप से विकलांगता पुनर्वास के क्षेत्र में अपने कार्य के लिए जानी जाती हैं। वे कोल्हापुर स्थित "हेल्प फॉर द हैंडीकैप्ड" जैसे संगठनों के साथ जुड़ी रही हैं, जहां उन्होंने सामाजिक कारणों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके अलावा, वे संगीत शिक्षा में भी सक्रिय हैं और उन्होंने हल्की शास्त्रीय संगीत को बढ़ावा देने के लिए "कलांजलि" संस्थान की स्थापना की है। उनके प्रयासों को "तरुण भारत" और अन्य संगठनों से कई पुरस्कार मिल चुके हैं।

संदीप काले

- संदीप काले महाराष्ट्र में राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (NCP) के साथ अपने जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं। मई 2023 में, जब उन्होंने NCP नेता शरद पवार को पार्टी प्रमुख पद से इस्तीफा देने के उनके निर्णय पर पुनर्विचार करने के लिए खून से पत्र लिखा, तो वे सार्वजनिक रूप से पहचाने गए। काले की भावनात्मक अपील में पवार को अपने मार्गदर्शक के रूप में संबोधित किया गया और इस्तीफा देने की घोषणा को पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए "अनाथ" छोड़ने के रूप में वर्णित किया गया। हालांकि, उपलब्ध जानकारी के आधार पर, महाराष्ट्र में सामाजिक क्षेत्र से जुड़ा कोई प्रमुख सार्वजनिक व्यक्ति संदीप काले के नाम से नहीं पहचाना जाता है।

सीमंतिनी खोत

- सीमंतिनी खोत के पास विकास क्षेत्र में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है, जिसमें से उन्होंने 20 वर्षों तक NGO क्षेत्र में जमीनी स्तर पर विकास परियोजनाओं के कार्यान्वयन में योगदान दिया है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों को परामर्श देने में 6 वर्षों से अधिक का समय बिताया है। वह सुजलोन में वैश्विक CSR प्रमुख के रूप में कार्य कर चुकी हैं। टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज से शहरी और ग्रामीण सामुदायिक विकास में शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने खाद्य सुरक्षा, भूमि उपयोग और सामुदायिक विकास से लेकर आत्मनिर्भरता तक कई सामाजिक पहलों का नेतृत्व करने के लिए 50 से अधिक देशों की यात्रा की है।

वि. म. दांडेकर

- वी. एम. दांडेकर महाराष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं, जिन्हें विशेष रूप से ग्रामीण विकास और सामाजिक कल्याण में उनके योगदानों के लिए जाना जाता है। वह गरीबी उन्मूलन, ग्रामीण विकास और सतत आजीविका जैसे मुद्दों पर शोध और वकालत में सक्रिय थे। दांडेकर का कार्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों की स्थितियों को सुधारने के लिए नीतियों और रणनीतियों को आकार देने में प्रभावी रहा है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। उनके योगदानों का महाराष्ट्र और उससे बाहर सामाजिक विकास पहलों पर स्थायी प्रभाव पड़ा है।

विलास चाफेकर

- विलास चाफेकर महाराष्ट्र के एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और हाशिए पर रहने वाले समुदायों, जैसे कि भूमिहीन मजदूरों और घुमंतु जनजातियों, के आर्थिक उत्थान में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने बहुत कम उम्र में ही सामाजिक कार्य शुरू किया और छात्रों, सड़कों पर रहने वाले बच्चों, और वेश्याओं के बच्चों के साथ काम किया। उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि में पुणे विश्वविद्यालय से शिक्षा विज्ञान में पीएचडी शामिल है, हालांकि उनका शोध प्रबंध कभी प्रस्तुत नहीं किया गया। चाफेकर को सामाजिक सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में उनके कार्य के लिए भी पहचाना गया और उन्हें कई पुरस्कार मिले, जैसे समाज शिल्पी पुरस्कार और समाज भूषण पुरस्कार। वह अनौपचारिक शिक्षा पहलों में गहरे रूप से शामिल थे और महिला सशक्तिकरण और HIV/AIDS जागरूकता जैसे कार्यक्रमों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने वंचित विकास संगठन की स्थापना की, जो आज भी उनके सामाजिक परिवर्तन की विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

विजय जावंधिया

- विजय जावंधिया महाराष्ट्र के सामाजिक और कृषि क्षेत्रों में एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं। वह एक कृषि कार्यकर्ता हैं और शेतकारी संघटना के संस्थापक सदस्य हैं, जो एक प्रभावशाली किसान संगठन है। उन्होंने किसान अधिकारों और कृषि नीति जैसे मुद्दों पर सक्रिय रूप से काम किया है, जिसमें फसल बोनस जैसी वित्तीय लाभों के लिए वकालत करना भी शामिल है। उनका विशेषज्ञता वैश्विक आर्थिक प्रभावों का कृषि क्षेत्र पर विश्लेषण करने तक भी फैली हुई है।

विजय कान्हेरे

- विजय कान्हेरे महाराष्ट्र के एक प्रभावशाली सामाजिक कार्यकर्ता और कार्यकर्ता थे, जो विशेष रूप से श्रमिक सुरक्षा और स्वास्थ्य (OSH) के क्षेत्र में अपनी भूमिका के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी समुदायों के अधिकारों के लिए काम किया और धुले में भूमि अधिकारों के संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके महत्वपूर्ण कार्यों में श्रमिक संघटन की स्थापना और उसके विकास में मदद करना, और वस्त्र मिलों, सीवरों और नगरपालिका श्रमिकों के लिए सुरक्षा मानकों को बेहतर बनाने के प्रयास शामिल हैं। कान्हेरे ने मुंबई में एक OSH प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और रोजगार संबंधित बीमारियों से पीड़ित श्रमिकों के लिए मुआवजा प्राप्त करने में मदद की।

विनायक विश्वनाथ पेंडसे

- आप्पा पेंडसे, महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद और विचारक थे। उन्होंने 1962 में पुणे में ज्ञान प्रबोधिनी की स्थापना की। यह संस्था युवा व्यक्तियों में नेतृत्व क्षमता को पहचानने और विकसित करने पर केंद्रित है, साथ ही उनमें देशभक्ति, सामाजिक जिम्मेदारी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे मूल्य विकसित करने का काम करती है। पेंडसे का मानना था कि शिक्षा

समाज परिवर्तन का एक शक्तिशाली साधन है, और उन्होंने बुद्धिमत्ता और चरित्र के विकास पर जोर दिया। आप्पा पेंडसे का कार्यक्षेत्र ग्रामीण विकास, महिलाओं को सशक्त बनाने, धर्मों के बीच सद्भाव बढ़ाने और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता फैलाने तक फैला हुआ था। ज्ञान प्रबोधिनी स्कूल, नेतृत्व शिविर और सामाजिक पहलों का संचालन करती है, जो "सेवा के माध्यम से नेतृत्व" के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

विवेक पांडे

- विवेक पांडे महाराष्ट्र के एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता और कार्यकर्ता हैं, जिन्हें आदिवासी समुदायों और समाज के पिछड़े वर्गों के लिए उनके काम के लिए जाना जाता है। वह शोषित जन आंदोलन समिति (SJAS) के संस्थापक हैं, जो आदिवासियों के कल्याण और अधिकारों के लिए काम करता है, विशेष रूप से भूमि अधिकारों, बंधुआ मजदूरी उन्मूलन, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल जैसे मुद्दों पर केंद्रित है। पांडे ने महाराष्ट्र में बंधुआ मजदूरों की रिहाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आदिवासी अधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनों के कार्यान्वयन के लिए आंदोलनों के अग्रणी रहे हैं। उनके प्रयासों से आदिवासी समुदायों के लिए अवैध अतिक्रमण से भूमि की पुनः प्राप्ति संभव हुई है। पांडे सामाजिक न्याय की वकालत करने और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के उत्थान में भी सक्रिय रहे हैं।

वैशाली पाटील

- वैशाली पाटील महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले की एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वे ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के लिए सक्रिय रूप से काम करती हैं। अंकुर ट्रस्ट नामक एनजीओ की प्रमुख के रूप में, वे शिक्षा और जन-जागरूकता के माध्यम से हाशिए पर मौजूद समुदायों, खासकर महिलाओं, को सशक्त बनाने और सामाजिक असमानताओं को कम करने

का प्रयास करती हैं। वे "वुमेन्स काइट फेस्टिवल" जैसे सामाजिक आयोजनों के लिए भी जानी जाती हैं, जो महिलाओं को लैंगिक समानता के लिए खड़े होने, अपने अधिकारों को समझने और जीवन का जश्न मनाने के लिए प्रेरित करता है। इस पहल ने सैकड़ों महिलाओं को आकर्षित किया है, जिनमें आदिवासी क्षेत्रों की महिलाएं, दैनिक मजदूरी करने वाली महिलाएं, और विशेष आवश्यकताओं वाली लड़कियां भी शामिल हैं। यह आयोजन प्रतीकात्मक रूप से लिंग-आधारित भेदभाव के खिलाफ महिलाओं की आवाज को मजबूत करता है।

व्ही. डी. देशपांडे

- वी. डी. देशपांडे महाराष्ट्र में एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने विशेष रूप से पिछड़े वर्गों और ग्रामीण समुदायों के उत्थान के लिए कार्य किया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए, विशेष रूप से महिलाओं और वंचित वर्गों के लिए। वे भूमि सुधार और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ भी सक्रिय थे। देशपांडे जी ने समाज के निम्न वर्गों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की।

-

कार्यकर्ता दाम्पत्य का महाराष्ट्र के स्वयंसेवी क्षेत्र में योगदान

- महाराष्ट्र में समाजसेवा की परंपरा गहरी और प्रेरणादायक है। इन दंपतीने सामाजिक क्षेत्र में बहुत योगदान दिया है। समाजसेवी विचार और आचारो से प्रणीत यह सहजीवी क्षेत्र के लिये है। इनमे से कुछ कार्यकर्ताओ की आगे की पिढी भी समाजकार्य में अग्रेसीत है, और निरंतर कार्य कर रहे है। इन परिवारो ने कार्य का विशिष्ट विषय, क्षेत्र, परिस्थिती को अग्रणी मानकर अपनी सेवा देकर विकासात्मक कदम उठाया है। उनके कार्य राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर समाजसेवा की मिसाल बन गए हैं। महाराष्ट्र के समाजसेवी घरानों ने राज्य और देश की सेवा में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। ये परिवार केवल एक ही व्यक्ति की प्रेरणा तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने अपनी भावी पीढ़ियों को भी समाजसेवा के लिए प्रेरित किया। इन घरानों की परंपरा ने समाज में गहरी छाप छोड़ी है और यह दर्शाया है कि एक परिवार किस प्रकार समाज में व्यापक बदलाव ला सकता है। इन्हे सही मायने में ज्योतिराव और सावित्रीबाई फुले के सामाजिक तथा वैचारिक वारीस माना जा सकता है।

समाजसेवी दंपतियों का समर्पित परिणामकारक काम

- महाराष्ट्र मे 'पती-पत्नी' योंने साथ साथ ध्येयवादी काम करने के उदाहरण बहुत है । उनक काम अधिक सकारात्मक परिवर्तन लाया है। इनका योगदान विशेष रूप से स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, और सामाजिक न्याय के क्षेत्रों में उल्लेखनीय रहा है। लोगोंका,, खास कर महिला वर्ग का प्रतिसाद मिलने मे इससे असानी होती है । काम करते हुए भी एक-दुसरे से विचारोंका आदान प्रदान भी होता है । इन दंपतियों के कार्यों ने न केवल स्थानीय जिलों में बल्कि राज्य स्तर पर भी सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया है। इनमेसे कुछ उल्लेखनीय नाम यह प्रस्तुत किये है

पद्मश्री बाबा आमटे तथा साधना आमटे, (आनंदवन, वरोरा, चन्द्रपूर)

- कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास के लिए "आनंदवन" की स्थापना; कुष्ठ रोगियों के उपचार, पुनर्वास और सशक्तिकरण के लिए समर्पित एक आश्रम। उनको कृषि, लघु उद्योग और संरक्षण के कार्यक्रम शामिल किया ; विकलांग लोगों की सेवा की गई। इसकाम के अलावा, पर्यावरणवाद और धार्मिक सहिष्णुता के लीये भी काम, उनके बेटे, प्रकाश और विकास आमटे, अपनी तिसरी पिढी सहित उनके काम हुनर को आगे बढ़ाते हुए स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में काम किया। "लोक बिरादरी" हेमलकसा आदिवासियों के उत्थान के लीये आज भी काम कर जरा है ।

डॉ अभय आणि डॉ राणी बंग (सोसायटी फॉर एज्युकेशन, अॅक्शन अँड रिसर्च इन कम्युनिटी हेल्थ सर्च, गडचिरोली):

- रानी और अभय बंग ने में सामुदायिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए काम किया। उनके प्रयासों ने शिशु मृत्यु दर को कम किया और आदिवासी स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत किया। **सर्च संस्था, गडचिरोली** की स्थापना डॉ. अभय और डॉ. रानी बंग ने 1986 में की। यह संस्था शिशु मृत्यु दर कम करने के लिए "होम बेस्ड न्यूबॉर्न केयर" मॉडल, आदिवासी स्वास्थ्य सुधार, शराबबंदी अभियान, महिला व बाल स्वास्थ्य, और मानसिक स्वास्थ्य पर काम करती है। इसे WHO और यूनिसेफ से मान्यता मिली है। उनके सुपुत्र डॉ. आनंद तथा अमृत बंग सामाजिक क्षेत्र में कार्यरत है।

डॉ. रजनीकांत और डॉ मेपल आरोळे, (सर्वसमावेशक ग्रामीण आरोग्य प्रकल्प) जामखेड, अहमदनगर :

- जामखेड मॉडल के प्रणेता के रूप में जाने जाते हैं। अपने जीवन को गरीब और वंचित ग्रामीण समुदायों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। अहमदनगर जिले के जामखेड में एक अनूठे स्वास्थ्य मॉडल की स्थापना की, जिसे **"जामखेड मॉडल" के नाम से जाना जाता है। इस परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ और प्रभावी बनाना था। उन्होंने इस मॉडल के माध्यम से

स्वास्थ्य सेवाओं को प्राथमिक स्तर पर समुदायों तक पहुंचाया और महिलाओं को **स्वास्थ्य कार्यकर्ता (Village Health Workers)** के रूप में प्रशिक्षित किया। डॉ. मेपल आरोळे (जो अमेरिकी मूल की थीं) ने भारतीय ग्रामीण समाज को गहराई से समझा और डॉ. रजनीकांत के साथ मिलकर वंचित समुदायों के जीवन को बेहतर बनाने का कार्य किया। उनकी समर्पित सेवाओं के लिए उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार और सम्मान मिले।

डॉ. प्रकाश आमटे और डॉ. मंदाकिनी आमटे (लोकबिरादरी प्रकल्प, हेमलकसा, गढ़चिरौली)

- वे स्थानीय आदिवासियों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने वाले अस्पताल का संचालन करते हैं। साथ ही, लोग जो घायल वन्य जीव लेकर आते हैं, उनका भी उपचार करते हैं। इस परियोजना के माध्यम से हर साल लगभग 40,000 लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की जाती हैं। लोकबिरादरी प्रकल्प के आश्रमशाला में 600 से अधिक छात्र पढ़ते हैं, जिनमें आवासीय और बाहरी छात्र शामिल हैं। उनके समाज सेवा कार्य के लिए, उन्हें 2008 में 'कम्युनिटी लीडरशिप' के लिए मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मानित किया गया। नवंबर 2019 में, बिल गेट्स के हाथों उन्हें आईसीएमआर (भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद) जीवन गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह दाम्पत्य पद्मश्री बाबा आमटे तथा मंदाताई आमटे के सुपुत्र तथा स्नुषा है।

डॉ अनिल अवचट- डॉ सुनंदा अवचट (मुक्तांगण, पुणे) :

- नशा मुक्ति और मानसिक स्वास्थ्य के लिए "मुक्तांगण" पुनर्वास केंद्र की स्थापना। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता फैलाने, और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए संशोधनात्मक विपुल लेखन किया। उन्हें महत्वपूर्ण पुरस्कारासे नवाजा गया है। उनकी दोनो सुपुत्री मुक्ता पुणतांबेकर आणि यशोदा वाकणकर भी सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है ।

मनीषा गुप्ते आणि रमेश अवस्थी : मासूम पुणे

- 1970 के दशक से के मध्य से महिला आंदोलन, स्वास्थ्य और नागरिक अधिकार आंदोलनों में भी सक्रिय रहे। सूखाग्रस्त ग्रामीण क्षेत्र में काम, वे सलाहकार, प्रशिक्षक या बोर्ड सदस्य के रूप में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जन-समर्थक और प्रगतिशील संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। उन्होंने महिलाओं के स्वास्थ्य, महिलाओं के खिलाफ हिंसा, कामुकता और अल्पसंख्यक अधिकारों से संबंधित अभियानों में भाग लिया है और उन्हें बढ़ावा दिया, नीतिगत मुद्दों पर भी काम किया है। ग्रामीण समुदायों (माइक्रोक्रेडिट सहित) के आर्थिक सशक्तीकरण, बाल श्रम को संबोधित करने और अल्पसंख्यक अधिकारों को आगे बढ़ाने में सामुदायिक स्तर पर अपने हस्तक्षेप के माध्यम से विकास क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। वे राष्ट्रीय स्तर पर गैर सरकारी संगठनों की भागीदारी समीक्षा और क्षमता निर्माण में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं।

क्रिस्टोफर बेनिंजर और अनिता गोखले: द सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज एंड एक्टिविटीज, CDSA : पुणे

- यह संस्था शोध और पोस्ट-ग्रेजुएट शिक्षा के लिए प्रसिद्ध है और पुणे, भारत में स्थित है। क्रिस्टोफर एक वास्तुशिल्पकार और शहरी नियोजक थे, जबकि अनिता भूगोलतज्ञ और सतत विकास योजनाकार थीं। उन्होंने 1976 में CDSA की स्थापना की। यह संस्था विकेंद्रीकृत योजना, सूक्ष्मस्तरीय योजना और जलसंधारण प्रबंधन के क्षेत्र में मार्गदर्शक कार्य के लिए पहचानी जाती है। इस संस्था ने विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र, भारत सरकार के विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों, श्रीलंका सरकार, भूटान के शाही सरकार, एशियाई विकास बैंक और एशिया के विभिन्न देशों के लिए नीति विश्लेषण का कार्य किया है।

विवेक और विद्या पंडित (श्रमिक संगठन, वसई)

- वसई के दहिसर गांव के गरीबों को मदद करके विकास कार्य शुरू किया। 1982 में उन्होंने श्रमिक संगठन नामक संस्था की स्थापना की। उन्होंने कई मजदूरों को गुलामी से मुक्ति दिलाई। उनके उल्लेखनीय कार्य के लिए 1999 में उन्हें अंतरराष्ट्रीय गुलामी विरोधी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2009 में महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में उन्होंने वसई निर्वाचन क्षेत्र से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में शिवसेना के समर्थन से विजय प्राप्त की। वर्तमान में वे महाराष्ट्र सरकार की राज्यस्तरीय आदिवासी क्षेत्र पुनरावलोकन समिति के अध्यक्ष हैं और उन्हें राज्यमंत्री का दर्जा प्रदान किया गया है।

डॉ शशिकांत आणि डॉ शुभांगी अहंकारी , Halo Medical Foundation, अणदूर, सोलापूर

<https://www.linkedin.com/in/shashikant-ahankari-43759911/?originalSubdomain=in>

- ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावी और सस्ती स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। प्राथमिक और द्वितीयक स्वास्थ्य सेवाओं के साथ-साथ कई सामाजिक पहल शुरू कीं। इनमें स्वास्थ्य बीमा, स्वयं-सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण मंच, सतत खेती, और विज्ञान शिक्षा जैसे कार्यक्रम शामिल हैं। डॉ. अहंकारी और उनकी संस्था को महिला सशक्तिकरण के लिए **महाराष्ट्र फाउंडेशन पुरस्कार** सहित कई सम्मान प्राप्त हुए हैं।

नितीन परांजपे और अनिता बोरकर (अभिव्यक्ती, नाशिक)

- दोनों सामाजिक विकास के लिए कार्यरत हैं और अभिव्यक्ति मीडिया फॉर डेवलपमेंट संस्था के सह-संस्थापक हैं। इस संस्था के माध्यम से उन्होंने पिछले 35 वर्षों से अधिक समय तक विभिन्न

सामाजिक मुद्दों पर काम किया है। मिडीया के विविध माध्यमों द्वारा उन्होंने संस्था के उद्देश्य और नीतियों की रूपरेखा तैयार की, मानव संसाधनों को सशक्त किया, निधि जुटाई, और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित अंतरसंस्थागत संस्कृति विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया। अनिता बोरकर वर्तमान में ASPBAE नामक अंतरराष्ट्रीय संगठन में कार्यरत हैं, जहां वे युवाओं और वयस्कों के शिक्षा, शिक्षा नीति की वकालत, और समुदाय के लिए परिवर्तनकारी शिक्षा पद्धतियों पर काम कर रही हैं। उनका कार्य सतत आजीविका, लिंग समानता, समावेशी शिक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर केंद्रित है। इस दंपति का कार्य लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय, और शिक्षा क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए पहचाना जाता है।

स्व. डॉ. द्वारकादास और डॉ. शैला लोहिया: (मानवलोक, अंबेजोगाई) :

- यह सेवाभावी दंपति पिछले कई दशकों से ग्रामीण और वंचित समुदायों के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक उत्थान के लिए कार्यरत थे। मुख्य रूप से मराठवाड़ा क्षेत्र में काम किया, जो अकाल, सूखा और गरीबी से ग्रस्त था। यहां के किसानों और गरीबों को सहायता प्रदान करने के लिए उन्होंने विभिन्न कार्यक्रम चलाए। उस कार्यक्षेत्र में उनके योगदान - ग्रामीण विकास और सूखा राहत कार्य, स्वास्थ्य और शिक्षा, महिला सशक्तिकरण, कृषि और आजीविका आदी क्षेत्र में कार्य किया। इस धरोहर का आज भी उनके सुपुत्र अनिकेत लोहिया सक्षमता से वहन कर रहे हैं।

निरुपमा देशपांडे और स्व. सुनील देशपांडे (सम्पूर्ण बांबू केंद्र (SBK) मेळघाट) :

- जो सामाजिक कार्यकर्ताओं सुनील और निरुपमा देशपांडे द्वारा स्थापित किया गया था, 90 के दशक के मध्य में मेळघाट वन के लावडा आदिवासी गांव से शुरू हुआ था। सम्पूर्ण बांबू केंद्र (SBK) बांस क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं पर काम कर रहा है, जैसे कारीगरों के कौशल उन्नयन से लेकर कम लागत वाले बांस के आवास निर्माण और डिजाइनिंग तक, साथ ही बांस से बने हस्तशिल्प उत्पादों का विपणन

भी कर रहा है। सम्पूर्ण बांस केंद्र का 'विश्वकर्मा विद्यालय' मेलघाट आदिवासी क्षेत्र में, जो महाराष्ट्र के एक आंतरिक क्षेत्र में है, प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के माध्यम से पर्यावरण मित्र और सतत ग्रामीण रोजगार उत्पन्न करने का लक्ष्य रखता है, जहां इस प्रकार का प्रशिक्षण पहले उपलब्ध नहीं था।

डॉ. सतीश गोगुलवार आणि शुभदा देशमुख ("आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी गडचिरोली):

- संस्था पिछले 35 वर्षों से महिलाओं, आदिवासियों, किसानों और कमजोर वर्ग से संबंधित समुदायों के मुद्दों को "हम अपना रास्ता खुद ढूँढेंगे" के दृष्टिकोण के माध्यम से हल करने में सक्रिय रूप से काम कर रही है। इस संस्था की स्थापना 1984 में डॉ. सतीश गोगुलवार और शुभदा देशमुख ने की थी, जो गांधीवादी और विनोबा के दृष्टिकोण से प्रेरित थे। उनका मानना था कि स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान केवल दवाइयों तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह 'जीवन की संपूर्णता' में होना चाहिए। दोनों का उद्देश्य 'स्वास्थ्य क्रांति' के लिए रचनात्मक कार्य करना था, जिसमें आजीविका, जल, महिला सशक्तिकरण जैसे जीवन के अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को भी शामिल किया गया। संस्था का नाम 'आम्ही आमच्या आरोग्यासाठी' (हम अपने स्वास्थ्य के लिए) उनके इस उद्देश्य को प्रतिबिंबित करता है। यह

"महाराष्ट्र भूषण" स्व. सुनील पोटे और मनीषा (युवा मित्र, नाशिक) :

- युवाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान करना था। संस्था ने नाशिक और आसपास के क्षेत्रों में युवाओं के बीच शिक्षा और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए कई परियोजनाएं शुरू की हैं। "महाराष्ट्र भूषण" पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इसके अलावा, उन्हें कई अन्य

पुरस्कारों और सम्मानों से भी नवाजा गया है। सुनीलजी का देहांत २०२० में हुआ, सद्यस्थिती में उनकी पत्नी मनीषाताई पोटे द्वारा संस्था का कार्य सुचारु और गुणवत्तापूर्ण गती से शुरू है।

स्व. डॉ. नरेंद्र और वासंती दाभोलकर , (अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति, पुणे) :

- सामाजिक सुधार आंदोलन में अत्यंत महत्वपूर्ण हस्तियां थीं। डॉ. दाभोलकर ने 1989 में महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति की स्थापना की। यह संगठन तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था। उन्होंने समाज में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र और चमत्कारों के नाम पर किए जाने वाले शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी पहल पर महाराष्ट्र सरकार ने *अंधश्रद्धा निर्मूलन अधिनियम* पारित किया। वासंती दाभोलकर, डॉ. नरेंद्र की जीवन संगिनी, इस अभियान में उनकी सशक्त सहयात्री रहीं। उन्होंने डॉ. दाभोलकर के कार्यों में हर संभव योगदान दिया और संगठन के कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 20 अगस्त 2013 को डॉ. नरेंद्र दाभोलकर की पुणे में गोली मारकर हत्या कर दी गई, लेकिन उनके विचार और आंदोलन आज भी लाखों लोगों को प्रेरित करते हैं। वासंती दाभोलकर ने इस संघर्ष को जारी रखा और उनकी विरासत को मजबूती से आगे बढ़ाया। यह दंपति न केवल महाराष्ट्र बल्कि पूरे भारत में तर्कशीलता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतीक बन चुका है।

डॉ. रवींद्र और स्मिता कोल्हे; (वैद्यकीय सेवा, बैरागड, अमरावती मेलघाट) :

- महाराष्ट्र के सबसे पिछड़े और वंचित आदिवासी समुदायों की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। यह सेवाभावी दंपति 1985 से मेलघाट (जिला अमरावती) में कार्यरत है। मेलघाट क्षेत्र, जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ गरीबी, कुपोषण और स्वास्थ्य समस्याओं के लिए कुख्यात है, उनके समर्पित प्रयासों का केंद्र बना। डॉ. रवींद्र कोल्हे ने नागपुर मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस किया और इसके

बाद आदिवासी समुदायों की सेवा करने का निर्णय लिया। डॉ. स्मिता कोल्हे, उनकी पत्नी, भी एक जेष्ठ चिकित्सक हैं और उनके मिशन में कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। इस दंपति ने बेहद साधारण जीवन जीते हुए, नाममात्र शुल्क (पहले ₹1 और अब ₹2) में आदिवासी समुदाय को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराईं।

मिनार पिंपले और अल्पा (युथ फॉर युनिटी और वालंटरी एक्शन YUVA मुंबई)

- शहरी और ग्रामीण गरीबों के लिए मानवाधिकार और सतत विकास के लिए काम करता है। वे अमनेस्टी इंटरनेशनल में ग्लोबल ऑपरेशंस के वरिष्ठ निदेशक हैं और ऑक्सफेम इंडिया के संस्थापक अध्यक्ष भी रहे हैं। इसके अलावा, मिनारजी यूनाइटेड नेशन्स मिलेनियम कैंपेन और एशियन कोएलिशन फॉर हाउजिंग राइट्स (ACHR) जैसी वैश्विक संस्थाओं में भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई हैं।

इस विशेष अध्ययन के लिए महाराष्ट्र के सामाजिक संगठन संगठनों से गूगल फॉर्म के माध्यम से जानकारी उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। तदनुसार, हम महाराष्ट्र से प्राप्त प्रतिक्रिया के अनुसार प्राप्त सूचनाओं का संग्रह संलग्न कर रहे हैं। इसके अलावा, दर्पण पोर्टल के माध्यम से प्राप्त सूचनाओं का संग्रह भी संलग्न किया जा रहा है।

— https://docs.google.com/spreadsheets/d/1_NT85M6-pXFDIKW8X4fRHsd5osvsMR5S/edit?gid=61380916#gid=61380916

Podcast लिंक

महाराष्ट्र में सेवा संगठनों को ध्यान में रखते हुए एक विशेष पॉडकास्ट बनाया गया था। इस पॉडकास्ट के दौरान मुख्य रूप से लगभग नौ विषयों पर स्वैच्छिक क्षेत्र के योगदान, इतिहास और अपेक्षाओं को दर्ज किया गया। इसका शीर्षक 'ये तन बना बदलेगा' था और निम्नलिखित विषयों पर क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ साक्षात्कार आयोजित किए गए।

विषय और लिंक निम्न प्रकार से हैं

<https://drive.google.com/drive/folders/1dB8brGYk5KS15EejX31SHpbl-458IIQ7?usp=sharing>

1. स्वयंसेविक क्षेत्र का इतिहास - मिनीताई बेदी
2. महाराष्ट्र राज्य में स्वयंसेवी क्षेत्र का संगठन- सीमंतिनी खोत
3. सामाजिक कार्य का वैचारिक आयाम -डॉ. निवेदिताताई भिड़े
4. स्वयंसेवी क्षेत्र आंदोलनों का योगदान - ललित बाबर
5. महाराष्ट्र का सामाजिक क्षेत्र और नेटवर्क का योगदान - दत्ता पाटील
6. स्वयंसेविक क्षेत्र की स्वयं सिद्धता व योगदान - विश्वनाथ उर्फ अण्णा तोड़कर
7. एफपीओ: स्वयंसेवी क्षेत्र का विकसित परिक्षेत्र - अमित नाफड़े
8. समाजसेवी परिवार की दूसरी पीढ़ी - अनिकेत लोहिया
9. स्वैच्छिक क्षेत्र में नई पीढ़ी के नए संगठन- अमेय जोशी

परिशिष्ट ४ : संदर्भ सामग्री / दस्तावेज

- Dynamics of Socio-economic Development in Maharashtra^
<http://www.isas.org.in/jisas/volume/13-%20DYNAMICS%20OF%20SOCIO%20ECONOMIC%20DEVELOPMENT%20IN%20MAHARASHTRA.pdf>
- SHG Maharashtra - <https://ncwapps.nic.in/pdfReports/SHG-Maharashtra.pdf>
- Maharashtra's Economy: Myth and Reality - <https://www.jstor.org/stable/4401384>
- [DIRECTORATE OF ECONOMICS AND STATISTICS, PLANNING DEPARTMENT, GOVERNMENT OF MAHARASHTRA, MUMBAI](#)
- Euro Asia Research and development - <https://euroasiapub.org/>
- [Impact of Drought on Environmental, Agricultural and Socio-economic Status in Maharashtra State, India](#)
- [Socio-economic impact of drought in eastern part of satara district of Maharashtra](#)
- Economic impact of drought on agrarian society: The case study of a village in Maharashtra, India
<https://www.sciencedirect.com/science/article/abs/pii/S2212420923003928>
- Drought and its Impact on Crop Production And Socio-Economic Condition of Farmers: A Case Study of Washim, Maharashtra.
<https://www.ijfmr.com/papers/2023/5/7724.pdf>
- [Drought Impacts and Adaptation Strategies for Agriculture and Rural Livelihood in the Maharashtra State of India](#)
- [Study of socioeconomic status of farmers in drought prone regions of Maharashtra, India- A Case Study | International Journal of Current Research](#)
- Impact of Drought on Environmental, Agricultural and Socio-economic Status in Maharashtra State, India https://www.hrpub.org/journals/article_info.php?aid=5332
- Darpan NGO search - [Search for a NGO - Darpan](#)
- Magsaysay Awards: <https://unacademy.com/content/railway-exam/study-material/general-awareness/overview-of-n-ramon-magsaysay-award-winners-from-india/>

सामाजिक संस्था संगठनों के कार्यकर्ताओं के अभ्यास लिए विविध विषयों पर
विशेष लेख

(उपलब्ध साहित्य साधनों द्वारा प्रस्तुत लेख समाविष्ट किये गए हैं, सभी लेखलेखकों के अनुमति से प्रसारित हो रहे हैं। यह एक पूर्व प्रसिद्ध है। लेखन साहित्य पर लेखक का मूल अधिकार रहेगा। इसी प्रकार के अन्य अभ्यासपूर्ण साहित्य का स्वागत और समावेश निश्चित रूप से किया जायेगा

।)

LIVING ON THE MARGINS:
TRIBAL DEVELOPMENT IN 2020

Ms. Anjali Kanitkar

Background

The College of Social Work has the unique distinction of initiating field action projects in rural areas, despite being a College located in the centre of a metropolis like Mumbai.

One such project initiated in 1982, was Vana Niketan in the Murbad *tahsil* in Thane district. This project soon became an independent, autonomous organization and has been working in the area for the last two decades, strongly advocating for the right of the tribal communities to survive with dignity. Recently in 2006, the College decided to once again intervene in a rural area- in Thane district again, but in a *tehsil* called Mokhada. I have been fortunate to be connected to both these initiatives, albeit in different capacities. Vana Niketan was a stone's throw away from where I was working after graduating from the Tata Institute of Social Sciences and striking out on my own in a project for tribal development. Several of us working on similar issues often came together then, for collective actions for tribal rights and for heated discussions on the propriety of accepting foreign funds, partnering with the government, and other such momentous issues. AROEHAN (Activities Relate to the Organization of Education, Health and Nutrition) was initiated by the College in 2006 at the initiative of some faculty members and I volunteered to steer the project as its Director until I retired from my position in College in 2016. What follows are my own musings and misgivings, built up over the past three decades of actively engaging with rural issues and with organizations that have been involved in making a difference to the lives of the rural poor in the state and around Mumbai

in particular. Despite the intervening span of more than two decades between the two field action projects, on entering Mokhada I realized that the situation of tribal communities in the hinterland of Mumbai had not undergone much change (see Bijoy, 2003). Despite the passage of sixty years since Independence, the need for evolving multi-pronged interventions to address the situation of hunger deaths still existed in this tehsil - a mere three and a half hour's drive away from a mega-city that was aiming to become a 'world-class city' (GOM, 2004). As the project evolved, the contradictions faced by a community living on the margins of development became more apparent and the interventions that began with generating health awareness among adolescent tribal girls branched out to include interventions in rainwater harvesting; agriculture and allied activities, and activities to influence governance at the village and tehsil levels. The interventions that emerged have arisen from understanding the dynamics of existence of the people and their aspirations that were influenced by their proximity to developed towns and cities. The cadre of activists and volunteers built by AROEHAN, and who in turn are shaping its vision in the area, are all youth (most from tribal communities themselves) in their early and mid-twenties, trying to reconcile the contradictions of the harsh realities of their daily existence and the 'development' manifested by the sprawling mega-city nearby.

Some facts will explain these contradictions: there are several village hamlets in this *tehsil* which have not seen electricity to this day. There are several villages where women have to trek for 2-3 kilometres in the months between February to June to fetch drinking water. The first sonography machine in the area was installed in September 2016 through the intervention of AROEHAN and Siemens India Limited. Children drop out of school to migrate with their parents during the non-monsoon seasons in search of work. The rudimentary agriculture activities in the area are rain-based, rendering the small and marginal farmers owning only 0.81

hectares per capita jobless after harvesting the *kharif* (monsoon) crop. Life is thus a never-ending struggle for survival for most of the population who hover just below the official Poverty Line. Government records say that seventy percent of the 92% tribal population of the area is Below Poverty Line (GOM, 2004).

The tribal communities which comprise of almost the total population of the region have lost the quintessential characteristics of being tribal over the past several decades due to modernization and assimilation with other communities in the surrounding area(s). Their indigenous art is now relegated to museums and art exhibitions, appropriated by market-savvy entrepreneurs and limited to a few of the tribal individuals and families who have found access to markets. Their group and community dances which signify the changes in seasons and in life cycles, are now showcased for visitors (benefactors) to the village, for official government programmes and at urban programmes where one laments the loss of heritage and tradition in the contemporary world.

What is, a matter of serious concern, however, is the loss of indigenous sources of livelihood without the generation of new sources for survival. Loss of forest cover due to the proximity of the city and the increasing need for timber and fuel coupled with deterioration of agricultural land due to years of cultivation without rejuvenation, has rendered both these sources inadequate to sustain the population. The continuous loss of topsoil due to heavy rains and the lack of attempts at conserving either water tables or the fertility of the land, has added to this deterioration. While government effort towards the universalization of education and of provision of health services to all, have also reached these communities, they have failed to open doors to the new world for this population because there is no employment at the end of the education they have received. Nor do the basic health services compensate for the fundamental deficiencies that arise out of a poor and insufficient diet. Unfortunately in our

country, the dual system of provision of essential services to all, result in the poor having poor services. The schools and primary health centres in the area leave much to be desired. Education in these schools have helped reduce illiteracy rates which were a mark of the earlier generation of tribals in the area. However, it has not necessarily taken the younger generation to further studies or to better employment. In fact, they are now bereft of either inclination or skills for agriculture and without newer skills that would allow them to be absorbed in the new market. The region is hilly, with poor infrastructure, acute water scarcity for part of the year (though it has heavy rainfall during the four months of June-September), and an erratic electricity supply. As such, it is not an investor's paradise and therefore, the chances of the establishment of small or medium scale industries is low. As there is not much 'revenue' in such areas, it also has does not have much political clout to draw revenue from outside. Mokhada and its surroundings thus strike me as a landscape trapped in a time-warp between the old and new world; communities trying to survive in an environment which has lost its 'agrarian' characteristic and yet, is not completely urban.

The only potential that it seems to have now is proximity to Mumbai and to another growing city Nasik. Additionally, the satellite towns of Dahanu on the coast and the Wada-Bhivandi industrial area on its south-east are potential areas for urbanization. Land is its prime asset and the tribal communities are soon likely to lose this asset to urban investors- to second homes of the upwardly mobile urban middle class or to acquisition by the government for increasing connectivity to the satellite towns. It is in this scenario that AROEHAN has been attempting to reduce malnutrition; conserve rainwater; improve agriculture; stem migration; improve education and health facilities, and generally facilitate a convergence between the people's aspirations of development and the government's target of development.

Intervention

[A report of the death of 169 tribal children in one month that were attributed to malnutrition jumpstarted AROEHAN's beginning. (see Khandare, Siriguri, Rao, Venkaiah Reddy & Rao, 2008). We entered Mokhada with a clear focus – take up one part of the tahsil which fell into the “most vulnerable” category, work closely with the Primary Health Centre and the Integrated Child Development Scheme (ICDS) there through the medium of the Auxiliary Nurse Midwife (ANM) and the Anganwadi worker (AWW), and demonstrate how malnutrition can be dealt with efficiently through ANC/PNC interventions, community awareness and monitoring, and through increasing the rate of attended child-births. We assumed that five years would be a good enough time to make a difference in the situation. As field action projects of the College depend largely on faculty and student intervention, it would not be practical to be too ambitious, taking into consideration the distance from Mumbai and the hardships – considerations which we had not encountered back in 1982 when Vana Niketan had been launched.

Indigenous Backdrop to Community Organization

The models of community organization (CO) that were models for us were in the vicinity- in nearby districts which had been fighting for tribal rights and development for the past few decades. Personally, it was a throwback to those heated discussions we had in the 80s:

Sangharsh vs Rachna - Confrontation vs Development.

These two strands of community work had emerged by the late 70s in a decade marked by unrest, by agitations against established ways of thinking and established norms of practice- be they about gender, caste or peasant rights. This was a decade which saw youth organizing against the ‘old guard’ on social, cultural and political fronts globally. In India, we too, witnessed the emergence of movements for women's rights (see Guha, 1974), dalit rights

(see Omvedt, 1995), tribal rights and movements for conserving the environment in various parts of the country. This was the decade when women across the country raised their collective voices against inequality, dowry deaths, rape, and other forms of gender oppression and stood up to be counted as significant contributors to household and national wealth; this was the decade of the Dalit Panthers signalling the existence of the ‘depressed classes’ as a force to be reckoned with, of Dalit identity establishing itself in literature, poetry and culture (see Murugkar, 1991). This too, was the decade of the Chipko and Silent Valley movements which brought environmental issues on the national agenda. It was this decade which saw ‘new wave’ parallel cinema showcase the stark life of the rural, oppressed poor and bring to the big screen the harsh realities of caste, class and gender inequalities. Trade unions like the Chhattisgarh Mukti Morcha and the Jharkhand Mukti Morcha brought forward issues that went beyond labour rights. Deeper in the forests, this was the post Naxalbari phase of organizing tribals and peasants for ‘liberation’ from oppression through guerrilla warfare.

This decade of unrest also spilled over into the political mainstream with the call for Sampurna Kranti (Total Revolution) given by the veteran Gandhian leader Jay Prakash Narayan. This idea of revolution and change fired the imagination of urban and rural youth and brought them out of the classrooms in what they saw as the ‘second freedom struggle’ against the oppressive authoritarian rule of capital backed by feudal power, supported by an autocratic state manifested by the single-handed control that the then Prime Minister Indira Gandhi held in her party and in Government.

This socio-political backdrop had an inevitable impact on the development sector of the time. While the earlier approach to tribal development stemmed from the five principles listed by Nehru (1958), promoting ‘peaceful co-existence’ of a community with its environs, avoiding the introduction of too many outsiders into tribal areas, calling upon them to

‘sacrifice’ when it came to the greater cause of nation-building through infrastructure development projects, the post 70s interventions brought to the fore that ‘peaceful co-existence’ is a sham- a façade to hide the continuous exploitation that takes place due to the constant extraction of natural resources from the forests in the name of national development. It also raised the issue of whether tribal areas can be kept away from the penetration of markets, whether tribal communities should remain untouched like ‘museum art’ or whether they should join the ‘mainstream’ and receive the benefits of all the services that other communities were privy to.

By the early 80s, we had moved away from the British-oriented terminology of ‘tribal’, ‘backward castes’, ‘Scheduled Castes and Scheduled Tribes’, to the more indigenous terms- ‘*dalits*’ for the Scheduled Castes and ‘*adivasis*’ for the Scheduled Tribes (see Burman, 2009). Adivasis referred to the fact that they were the original peoples inhabiting the land – an argument which was at the centre of all struggles of the displaced that were to follow. The conscious shift in terminology also signified the upsurge of “subaltern” politics and the increasing acceptance that marginalized sections of society had a voice and ‘their own agency’. It also led to the establishment of culture and identities as an important factor in all discourse (see Kaviraj, 2009).

Rachna versus Sangharsh

The development sector had started talking in terms of people’s participation in development taking cue from Paulo Freire’s concept of conscientization (Freire, 1970). There were organisations that believed in mobilizing people for their rights engaging in confrontation tactics vis-à-vis the local oppressors like the landlord who appropriate the land of the poor; the bonded-labour keeper; the farmer who did not give minimum wage; the moneylender who usurped, and an equally oppressive state which supported these very power-holders by not

intervening on behalf of the oppressed. They raised people's awareness to fight for their rights and educated them about what the Constitution stood for; what the laws of the land said and what their entitlements as citizens were. In doing so, they imparted political education without aligning with political parties of the day. In fact, by default, they were all anti-establishment and against all the contemporary political dispensations which had failed to usher in the promised equality and freedom that the nationalist struggle of Independence had envisioned. "*Kon mhantey gorey geley? Kaale maalak gorey zaale!*"¹ was a common slogan at the rallies/*morchas* of these organizations implying that colonialism and feudalism remained even though the masters may have changed. Elite colonial rulers had left behind an elite ruling class who continued to discriminate against the others. Such organizations shunned institutional funding from all sources - government, private, indigenous or foreign. They believed that such funding would impede or possibly derail the cause.

Rajni Kothari, renowned political scientist, theorist, academic and a member of the Planning Commission, who founded the Centre for the Study of Developing Societies [CSDS] in 1963 and also Lokayan- a forum of activists and intellectuals, termed such organizations 'non-party political formations' in his book *Politics in India* (1970). These organizations were political in practice and intent but which did not identify or align themselves with any political party. They grew as autonomous people's organizations and developed later as people's movements or new Social Movements. Several strands of assertions and interest groups came into this fold – the women's movement, the civil liberties movement, ecological struggles, dalit struggles, tribal movements and farmers' movements.

¹ Translation: "Who say the Whites have left? Black Masters have become White"

On the other hand, there were organizations which engaged in developmental programmes, bringing children of the oppressed to schools; improving health status of these communities through various programmes,; promoting agriculture, animal husbandry, dairy development, poultry and goat rearing with a view to augmenting income and facilitating the poor to access government schemes and programmes that were meant for 'poverty-reduction'. These were akin to the early community development programmes that had sprung up in various parts of the country in the 1930s and 40s, the most famous ones being the Sri Niketan and the Etawah, Firka and Nilokheri experiments where experts brought in their knowledge to improve health, education, sanitation, irrigation and other aspects of community life to uplift the 'backward' and poor communities in a largely agrarian society. Such organizations needed funds and donations to sustain their programmes and staff and thus were not averse to accepting funds from donor agencies and private sources. In fact, funds from individuals, private trust and non-government sources were preferred because they did not have the same red tape that was inevitable in accessing government funds and also because, these organizations had arisen in the first place, to plug the gaps in government outreach since they did not believe in the efficiency and efficacy of the government in caring for the vulnerable populations (see Tandon, 2005).

By the mid-80s we had moved into a clear division between the two approaches to organizing communities for development. The 'developmental' group disapproved of the constant confrontation that the 'activist-led' social action groups engaged in describing it as being futile and not benefitting the oppressed population they professed to be advocating on behalf of. The social action groups were dismissive of the 'fund-driven development' of so-called 'voluntary' agencies and viewed them as being proponents of the very same status-quo they sought to change. They felt that helping people to survive without changing power

equations was akin to strengthening these power equations. In fact, the very terminology was different. Action-oriented groups did not like to be described as non-government organisations (NGOs) or voluntary agencies (Volags); they preferred to be known as social action groups, or pressure groups. They had radical stands, were led by radical activists and not by a group of do-gooders or social workers who (they felt) had no ideology *per se*, but were driven only by altruistic goals and were taken in by the devious façade of a welfare state.

Some organizations accepted both these strands – one engaging in community development work and the other developing as a trade union of the landless and asset poor. This facilitated them to straddle both worlds – organize their communities to fight against oppressive power structures and against the state when it came to issues of rights and entitlements; and at the same time, also collaborate with the state in extending services to the communities and officiate on various committees to help initiate new programmes and monitor existing ones while accepting funds from diverse sources.

‘NGO-ization’ of Development

These differences continued into the 90s and are seen even today in the development sector. The 90s saw additional factors impacting the sector. What was earlier a struggle against a state seen as anti-poor, gradually became a struggle against global capital which was responsible in withering away of the welfare façade of the state. The movement’s concerns were often seen as transcending the boundaries of the nation-state. The development debates raised by the Narmada Bachao Andolan and other action groups in the late 80s, infused all discourse against liberalization and privatization of the economy. The emergence of the New Right in the economy; the disintegration of the Soviet Union; growing Islamaphobia across the globe and concomitant growth of majority militancy were all significant factors that impacted the development sector in the 90s. In rural areas, this was manifested in the post-Mandal rise

in caste-based consciousness accompanied by an increase in atrocities against dalits; in the rise of Hindu militancy and the demolition of the Babri Masjid; in the New Economic Policy and the rolling back of the welfare state which exemplified the pro-active and aggressive acquisition of tribal and agricultural land by the state in favour of private capital. All of this resulted in stronger identity-based politics across all sectors.

Simultaneously, there arose movements for better governance, for freedom of information, for transparency and accountability. Citizen action for better governance was on the rise prompted by new forms of activism in the age of technology and social media. Somewhere in the mid-90s, the lines between the two approaches of Sangharsh and Rachana became blurred with many Sangharsh-based action groups drawing various kinds of support for research, publicity, activists, and so on from NGOs. Organizations which were essentially 'non-party' realized that to bring change to people's lives, you need to engage with political processes. Several veteran activists either jumped into active electoral politics by contesting elections as candidates or toying with the idea of doing so. Several came together to discuss the formation of a new political front as a vehicle for people's politics in the legislature. This thinking was probably the reason why several stalwarts from the people's movements and NGOs alike, threw their weight behind Anna Hazare's Anti-Corruption Campaign and Kejriwal's Aam Aadmi Party in its early days, rather than with the organized left parties and their trade unions.

Thus the Sangharsh vs Rachana debate became more of a Sangharsh **and** Rachana front with the general understanding that both approaches were important and necessary as long as people were at the centre of the participatory democracy. We were now all Civil Society Organizations (CSO) engaged in keeping people's issues on the forefront of public agenda, organizing interest groups across various dichotomies (also through social media) to influence

an increasingly receding welfare state for better governance, transparency and accountability in the manner in which the state dispensed its goods and services. Irrespective of whether we were for-profit or non-profit, we all wanted right to information, better governance and efficient management systems. We were mostly engaged in issues of education; health; clean cities and environment; issues of the elderly, the destitute and homeless populations; peoples' movements for the displaced; for civil liberty and human rights and in advocacy and research to support these issues.

While we did get a set of progressive laws at the turn of the millennium, the process of depoliticizing the demand for development had set in. 'Development' was what everybody wanted and was not the issue of the marginalized and the excluded alone. It was this same depoliticised 'development' plank that saw people of all political hues put their weight behind the present Prime Minister and his party and gave them such a massive victory in the 2014 general elections.

In 2013, the Companies Act saw the additions of several new provisions that brought newer players into the development sector and subsequently, further changes and challenges in the understanding of development and how it should be brought about. What was earlier a manifestation of the altruistic inclinations of some industries and their contribution to nation-building in the post-Independence era has today become a mandatory expression of the responsibility of business towards the society in which it flourishes. This new entry goes by the name of Corporate Social Responsibility (CSR). The entry of business and money in the sector has changed the nature of the development sector. Newer managerial techniques, insistence on quantifiable methods of goal-setting and measurement of outputs and outcomes, time-bound interventions with measurable activities, an exit policy that is mapped out even before the intervention starts, Management Information Systems (MIS) that get more

complicated by the day in its aim to simplify everything- are all things that social workers in CSOs have to grapple with today. The nuances of human interaction and dynamics are often lost in this measurable, quantifiable data and at best reduced to case stories or showcased success stories. Like the colleges of social work which, at the turn of the millennium, began tailoring their courses to include these new managerial skills and re-vamping their field work experiences to include CSR field placements, CSOs too had to change their functioning style. They are now more tech-savvy, emphasizing their 'evidence-based' work and have ceased to talk in the generalized terms of 'awareness and empowerment'. In fact, it is only such organizations who have mastered these arts which survive and thrive in the non-profit sector. Thus, while on the one hand several CSOs are combating the encroachment of private capital and industry on the habitat, natural resources and livelihoods of people, other CSOs are engaged in activities of 'development' with these very actors. In 2006 when AROEHAN started, it had all this rich background to learn from. The question was what and which road to take.

The First Decade

Every time I went to Mokhada-Jawhar, all the struggles of various social action groups, autonomous movements and voluntary organizations came to me in a flash-back. The young team I had with me and the team which gradually built the organization- comprised of tribal and non-tribal youth ranging between the ages of 25 to 35 years. They brought home to me in various ways the fact that they did not carry the weight of history on their shoulders the way I did. What mattered to them was their present and their future and not discussions about how the development sector had evolved in the past three decades. The intervention therefore, pretty much evolved from their aspirations and understanding of the people and their issues. As we grew, we came to accept a few non-negotiable principles of functioning. Otherwise, the

approach to work was eclectic and emerged from whatever the team felt was the most optimum intervention at the time.

As mentioned earlier, AROEHAN was established as a Field Action Project (FAP) of the College of Social Work, Nirmala Niketan in July 2006 in response to the news of a spate of malnutrition deaths of tribal children in the area. Beginning with a modest aim to limit its intervention to the PHC area with the most number of malnourished children and demonstrate change in the levels of malnutrition, the project took the United Nations Millennium Development Goals as its inspiration.

The exercise of Micro Planning (MP) conducted throughout the taluka in all the 226 hamlets showed us the larger picture: that malnutrition was a low-ranking priority for the villagers. For them, employment and water scarcity was more important, followed by connectivity, education and health. So, having started with working on improving access to health services and promoting health awareness among adolescent girls both in and out of schools, AROEHAN went on to connect education to health status; rainwater harvesting to better functioning of schools and later, to improving agricultural productivity in the area. We realized that all this can be sustained only if people “own” these interventions. This led to the work on governance. Today AROEHAN focuses on health, education, livelihood and governance. Governance is the overarching link for the other three thematic areas.

AROEHAN initially grew in a sporadic manner. The initial hesitation to expand activities stemmed from the fact that it was a College project, largely depended on students who were placed for field work and who agreed to stay on after they graduated. Since there was no certainty as to who would guide the project, finances were also raised on a need-basis or in a project-linked manner. Programmes and staff got added to the project when there was a possibility of funds. For instance, though we saw the need for water harvesting, we could not have gone ahead with the work had a renowned Public Sector company not stepped in with its financial support. Similarly, we initiated some work in the ashram schools but support from a Foundation set up by a multinational bank ensured that the intervention in schools became more directed and consistent.

The dilemma of whether to accept such funding was a moot point because it was clearly not possible to move ahead with tasks at hand without funds.

This mode of functioning however, led to several moments of anxiety and time-lapse in project periods. Youth who had participated in our early MP processes and had now joined as part of our team, looked to AROEHAN as an entity much beyond a source of income. They were with us not so much for the jobs, but for what we could do together to change lives. However, they had to be supported through regular salaries.

We therefore set out with the aim of rewriting the Mokhada story and ushering in people-centred development to this tehsil which is literally and figuratively ‘on the margins of development’.

To all of us in AROEHAN, it was clear that if we want Mokhada to be a ‘zero-malnutrition tehsil’, we had to approach our goal with an integrated approach to intervention. Since malnutrition is not the only, or the most important aspect of people’s lives, we needed to look at their major concerns. Piecemeal interventions get piecemeal results. Though we

may be able to work with the health service delivery system and positively impact the levels of malnutrition in Mokhada, we will not be able to sustain these changes or give people better access to health if we do not impact their educational status. For both health and education to be significant in people's perception, their economic stability is of prime importance. There is data to show that once there is economic stability in life, people strive to improve their general standard of living. In Mokhada, 54% of the population depend on agriculture for their main occupation and source of income, though the landholdings average at barely 0.81 hectares per capita. Therefore, increasing agricultural income is essential if economic status of the families is to improve. Similarly, as there are many landless households in the tehsil who migrate seasonally in search of survival, securing their income through exploring other livelihood sources also becomes imperative.

AROEHAN has thus concluded that the roadmap to positive change in Mokhada and in the neighbouring tribal belt (in the absence of any government/private investment in building labour-intensive industry in the area), is to improve agricultural productivity and reduce migration. Generating income through improving agriculture and allied activities, exploring newer livelihood sources and sustaining these through connecting them to government programmes, thus becomes imperative. From a modest beginning in three hamlets of one village, to covering more than 21 villages with sub-surface bunds, cordons, small check dams and gabion bunds, we have today reduced the number of thirst days that people experienced earlier. From bringing together an initial group of seven enterprising small farmers, today we reach approximately 600 small and marginal farmers across the tehsil and help them with technical inputs for second crops in the non-monsoon period. A tehsil which was known for rain-fed paddy agriculture, barely enough to sustain the farmer's family through the year, is today known for the vegetables and flowers that it brings to the local markets in the *rabi* season.

AROEHAN has also initiated systems of crop and financial management that helps the farmers to rotate crops and save money to re-invest for the next season. Several farmers' groups are now looking at other ways in which to augment their income. Connecting landless villagers to the farmers' collectives has resulted in extending the benefits of these interventions to more families in the village. We have seen and measured that these villages now have fewer families who migrate and for a lesser number of days.

A major partnership with a multinational company also facilitated the setting up a solar grid in a village which had never seen electricity. The ensuing change that came to the lives of people due to solar-based irrigation and access to clean, filtered drinking water set us to adding these interventions as part of our integrated approach.

We are aware that we are doing what the state ought to be rightfully doing for its people. Therefore, we try to engage relevant departments and the statutory bodies in the effort to ensure that people get their entitlements and services due to them. The range of activities that we are currently engaged in include on the one hand organizing special nutrition for severely underweight children; installing sonography machines in the government hospital for better ante-natal care to advocating for gram sabhas to pass resolutions banning under-age marriages in their village. We also work at creating water bodies in the village and installing solar-based irrigation units to collaborating with the government to initiate sustainable water solutions in the tehsil. Our activities include tree plantation programmes, agriculture, horticulture, sericulture and bee-keeping activities and attempts to increase bio-diversity and availability of occupations in the area. Over the last decade, AROEHAN has grown from a small field project of a college to an organization that has immense credibility and support in the area, both from the community and government officials' perspectives. It has also faced the wrath of local politicians, corrupt officials and others whose vested interests in the economy of the area are disturbed by the organization's presence and its interventions.

Conclusion

Looking back on the last ten years and given my own understanding of the community organization scenario, I often wonder if what we have initiated in Mokhada is the best way to bring change. My own misgivings about CSR, institutional funding and the sustainability it proposes to bring, rear up their head ever so often. However, I also see that the poor cannot be asked to wait endlessly for change to happen. They need to see a difference in their lives here and now.

With the state retreating from its avowed duty of welfare for the greater common good, I believe that seeking funding from such sources becomes inevitable for organizations like AROEHAN. How does one access these funds and yet retain focus on the organization's goals? How does one not become a donor-driven organization but remain relevant to the people and their aspirations is probably the single factor that makes an organization different from the others doing similar work.

Recently, there were many reports of malnutrition deaths. Mokhada was again in the news. We at AROEHAN were happy that these deaths had not happened in any of our intervention villages. We are geared towards scaling up our interventions to ensure that development is equitably distributed across the rural countryside and does not create mere oasis in a desert.

References:

- Bijoy, C. R. (2003). *The Adivasis of India; A History of Discrimination, Conflict and Resistance*, Mumbai: *PUCL Bulletin*, February.
- Burman, R. J. J. (2009). Adivasi: A contentious term to denote tribes as Indigenous peoples of India, *Mainstream*, Vol XLVII (32). Retrieved from <https://www.mainstreamweekly.net/article1537.html>.
- Freire, P. (1970). *Pedagogy of the Oppressed*. New York: Seaburry Press.
- Government of Maharashtra (GOM). (2004). *Transforming Mumbai into a World- Class City: First Report of the Chief Minister's Task Force*, Maharashtra: Government Press.
- Guha, P. (1974). *Towards equality: Report of the Committee on the Status of Women in India*. New Delhi: Government of India, Ministry of Education and social Welfare.
- Kaviraj, S. (2009). *The post-colonial state: The special case of India*. Retrieved on May 9, 2017 from <https://criticalencounters.net/2009/01/19/the-post-colonial-state-sudipta-kaviraj/>
- Khandare, A. L., Siriguri, V., Rao, A., Venkaiah, K., Reddy, G. & Rao, G. S. (2008). Diet and nutrition status of children in four tribal blocks of Thane district, Maharashtra, *Pakistan Journal of Nutrition* 7 (3): 485-488.
- Kothari, R. (1970). *Politics in India*. New Delhi: Orient Longman.
- Murugkar, L. (1991). *Dalit Panther movement in Maharashtra: A sociological perspective*; Mumbai: Sangam Books Limited.

- Nehru, J. (1958). Preface. In E. Verrier, *A philosophy of NEFA*. Delhi: Gyan Books Pvt. Ltd.
- Omvedt, G. (1993). *Reinventing revolution: New social movements and the socialist Tradition in India*. UK: Routledge.
- Omvedt, G. (1995). *Dalit visions*. Mumbai: Sangam Books Publishers.
- Tandon, R. (2005). In defence of NGOs: Business standard. Retrieved from http://www.business-standard.com/article/opinion/rajesh-tandon-in-defence-of-ngos-105102401012_1.html

सार्वजनिक भागीदारी के लिए रणनीतियाँ

Mr. Datta Patil

समग्र सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में उन लोगों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है जिनके आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उत्थान के लिए हम काम करते हैं। यदि वे किसी भी कारण से शामिल नहीं हैं, तो वे प्रक्रियाएँ टिकाऊ नहीं हैं।

मानव समाज में एक बात जो हम नोटिस करते हैं वह यह है कि ' गरीब समाज संगठित नहीं होता है। करने को कई काम हैं. लेकिन वह समाज संगठित नहीं है इसलिए उसे कोई लूटता या लूटता नहीं है . चूंकि

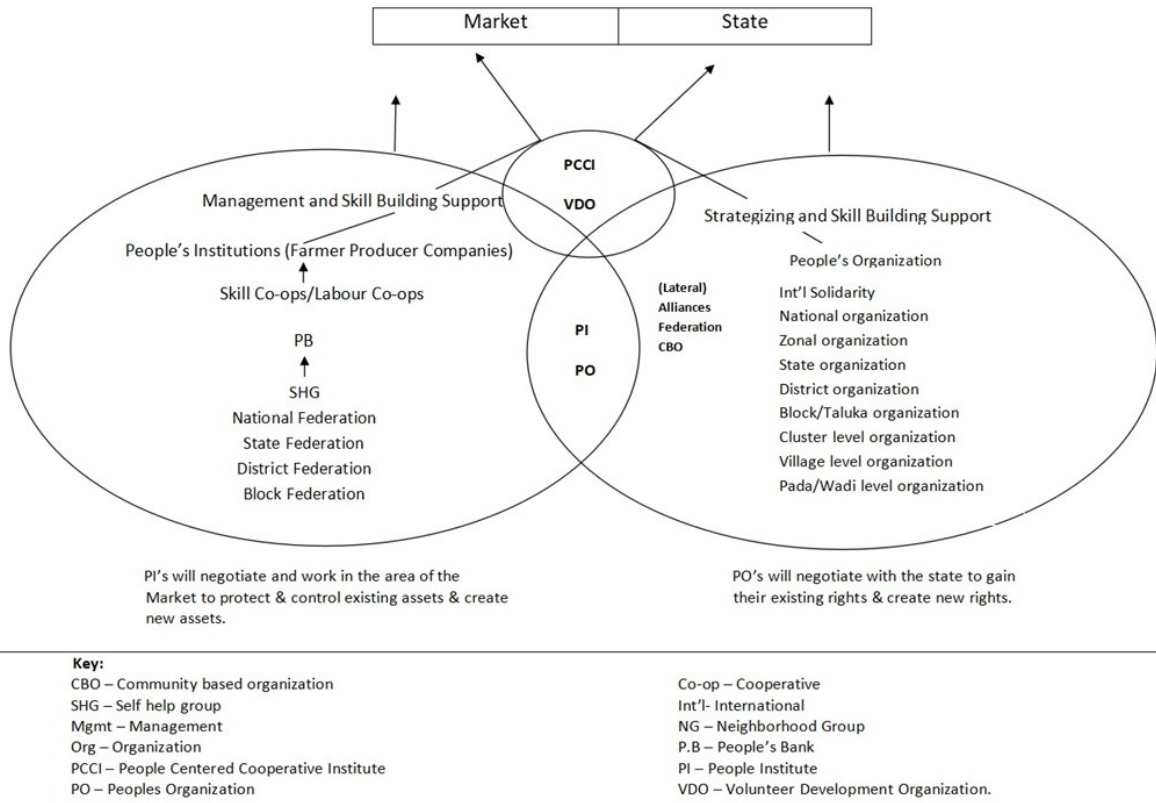
उसके पास कोई शक्ति नहीं है , इसलिए वह इसका विरोध नहीं कर सकता। लेकिन एक संगठित समाज आर्थिक रूप से कमजोर होते हुए भी संगठन के बल पर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ सकता है ।

हम यह भी जानते हैं कि किसी व्यक्ति या समूह का विकास कोई दूसरा नहीं कर सकता। जिस व्यक्ति/समूह का विकास अपेक्षित है वह इस प्रक्रिया के केंद्र में होना चाहिए । लेकिन ऐसा अपने आप नहीं होता.

जिस समूह में दैनिक प्रश्न होते हैं वह इसका आदी और अभ्यस्त है। लेकिन वे अमानवीय हैं , कई लोग यह भी नहीं सोचते कि उस संदर्भ में स्थिति बदलनी चाहिए। ऐसे समय में, उन्हें अपने मुद्दों से अवगत कराना, बदलाव लाने के लिए समाधान योजना से अवगत कराना, उन्हें स्वयं कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करना , संगठित प्रयास की शक्ति है । उन्हें अपना संगठन और संगठन बनाने में समझना और उनकी मदद करना बहुत महत्वपूर्ण है ।

ऐसे संगठित समूह को दिशा, मार्गदर्शन, शिक्षा दी जा सकती है, उनकी समस्याओं को कैसे हल किया जाए, उसके लिए कौन से कौशल की आवश्यकता है, किस शिक्षा की आवश्यकता है, किस दृष्टिकोण को विकसित करने की आवश्यकता है, किससे मदद लेनी है आदि।

इसके लिए लोगों को अपने जन संगठन और जन संगठन बनाने के लिए प्रेरित करना जरूरी है .



इससे पहले, उनसे इस बारे में चर्चा करें कि स्थानीय लोगों को क्या-क्या समस्याएँ होंगी, उन समस्याओं की प्रकृति क्या है, उन समस्याओं का कारण कौन/कौन है। उन समस्याओं का मूल कारण क्या है, समाधान क्या हैं, उन समाधानों को पहले क्यों लागू किया गया था, लागू किए गए समाधानों में कौन शामिल था, क्या कोई नई समाधान योजनाएँ हैं, ज्ञान, कौशल, मानसिकता, कार्यान्वयन के लिए लोगों का विश्वास तैयार करना है इन्हें और इन सबको एक साथ करने पर लोगों की मानसिकता बनाना जरूरी है।

जनसंगठन और जनसंगठन में बहुत अंतर है . जैसा कि नीचे दिए गए चित्र में दिखाया गया है, समाज में तीन महत्वपूर्ण तत्व हैं। 1. शासन-प्रशासन 2. बाजार व्यवस्था एवं 3. सामान्य जनता। उपरोक्त तीन में से दो पूरी तरह से संगठित हैं इसलिए वे असंगठित तत्वों को निचोड़ते हैं, स्थान देते हैं और उन्हें महत्व

देते हैं। दरअसल, वे जो कुछ भी करते हैं वह इन आम लोगों के आधार पर ही होता है। और इसीलिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

यदि आम जनता को बाजार व्यवस्था में अपनी जगह बनानी है तो सार्वजनिक संस्थाओं की स्थापना करनी होगी। सार्वजनिक संस्थान अपना ताकत बनाएं . जैसे गरीब किसानों को अपनी कृषि उपज का उचित मूल्य न मिलने और कर्ज के बोझ के कारण आत्महत्या करने के बजाय , हम एक साथ मिल सकते हैं, एक किसान उत्पादक कंपनी बना सकते हैं और अपनी उपज को बाजार में अधिक कीमत पर बेच सकते हैं या हम कच्चे माल का प्रसंस्करण कर सकते हैं और उच्च दरों पर लाभ यहाँ सार्वजनिक संगठन ऐसा कहता है। बचत समूह, ऊर्जा समूह, सहकारी ऋण संस्थाएँ, पीपुल्स बैंक जैसे कई रूपों में लोग संस्थाएँ बना सकते हैं । सार्वजनिक संगठन मुख्य रूप से बाज़ार व्यवस्था के साथ बातचीत करेंगे। मौजूदा संपत्तियों को सुरक्षित करना और बाजार स्थितियों के साथ नई संपत्तियां बनाना समानीकरण सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा किया जाएगा । सार्वजनिक संस्थान कानूनी स्थिति बनेगी. वे किसी मौजूदा कानून के तहत पंजीकृत होंगे , उनके पास संपत्ति, पूंजी, पैसा होगा। नियम नियम एवं शर्तों के अधीन होंगे और नियमों से बंधे होंगे ।

बनाए रखने के लिए संघर्ष करने और आम लोगों को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए सरकारी तंत्र के साथ बातचीत करने के लिए नए अधिकार बनाने के लिए जन संगठन बनाए जाने चाहिए । जैसे महिला विकास परिषद या युवा संगठन, महिला मंडल जैसे जनसंगठन स्थापित करना जरूरी है । संगठनों और संगठनों को स्थापित करना आसान है, लेकिन यह उस व्यक्ति पर निर्भर करता है जो संगठन या संगठन का नेतृत्व करता है और उन्हें अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बनाए रखता है । उसके लिए हमारे जैसे संगठनों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण आयोजित करने होंगे । उनका लगातार मार्गदर्शन करना होगा. यह निश्चित है कि एक निश्चित अवधि के बाद वे संस्थाएँ अपने पैरों पर खड़ी हो जाएँ ।

युवा ग्रामीण एसोसिएशन का मानना है कि हमारे जैसे संगठनों की मूल भूमिका लोगों का मार्गदर्शन करना और उनकी विकास प्रक्रियाओं में उनका मार्गदर्शन करना है। और इसलिए जहां भी हम किसी परियोजना पर काम कर रहे हैं, लोगों को उनकी समस्याओं और विकास प्रक्रिया की प्रकृति के इर्द-गिर्द संगठित करना चाहिए, लोगों को उनके संगठनों या संगठनों में एक साथ लाना चाहिए और उनका लगातार मार्गदर्शन करना चाहिए।

शाश्वत शेतकारी परिषद, महिला विकास परिषद जैसे जन संगठनों ने कई तरह से खुद को लाभान्वित किया है और अभी भी कर रहे हैं। नागपुर शहर में भी हजारों महिलाओं ने अपने स्वयं सहायता समूहों को एकजुट किया और दो महिला सहकारी ऋण संस्थानों की स्थापना की और करोड़ों रुपये का ऋण दिया अदला-बदली। 3 किसान उत्पादक संगठन अलग-अलग स्थानों पर बाजार व्यवस्था के साथ बातचीत कर रहे हैं।

इस रणनीति का उपयोग करते हुए, सभी कार्यकर्ताओं को उन सभी गांवों में आशा लोक संस्था और लोक संगठन की स्थापना करके युवा ग्रामीण की ओर से काम करना चाहिए जहां वे काम कर रहे हैं।

Asserting Livelihood WITH Dignity -
of Nomadic AND Denotified Tribes in Maharashtra

Mr. Mohan Surve

Introduction and Background

1. Brief Introduction of an organization as it stands today

Vikas Sahyog Pratishthan (VSP) is a non-profit voluntary organization. 'Vikas Sahyog Pratishthan' means Development Collaboration Foundation. The name conveys commitment of an organization in a collaborative approach with all stakeholders to work towards development.

This organization is established in 1990 to bring together grassroots organization and build their capacities in addressing developmental issues of the marginalized communities in the Maharashtra State, India. As of now VSP is known for facilitating institutional capacities of many social organizations, training numbers of social activists, initiating issue base networks, advocating for policy recommendations, and evolving demonstrative development models.

Development is human rights and as per the groundbreaking UN declaration on the right to development proclaimed in 1986 that development is a right that belongs to everyone. Everyone is "entitled to participate in, contribute to, and enjoy economic, social, cultural and political development, in which all human rights and fundamental freedoms can be fully realized". With this context VSP consider development is to be inclusive for all and sustainable across generations.

Therefore in social space VSP intervene for ensuring sustainable and inclusive development by adhering to social justice principles. VSP makes an effort to empower weaker communities with the collaborations of grassroots organizations and advocate inclusive policies with the respective Government systems.

Thus VSP works on the issues of disadvantaged communities; supports the grassroots organizations that are working for welfare and developmental issues of deprived communities in Maharashtra State. VSP primarily works with all socio-economically marginalized communities such as Scheduled Castes (SC), Scheduled Tribes (ST), Other Backward Communities (OBC), and it also works with Nomadic Tribes (NT) and Denotified Tribes (DNT) communities.

2. Rationale for selecting the community for work

VSP has been helping smaller organizations and activists in rural Maharashtra to provide a support local work with disadvantaged communities and to facilitate advocacy for pro people policies with respective Government authorities networking with them on common issues of concerns. In a year 1994 Mr. Balkrishna Renke had approached VSP with an idea of establishing a rehabilitation model for single and destitute women from the Denotified Tribes communities. He himself has been from the Gondhli[1] community. He has completed his education in BSc (Chemistry) and after 8 years of service in forensic science department i.e. since 1970 he devoted his life for fighting for the causes of NT DNT people. His observations were that these communities do not exist on any entitlement paper, they do not own ration cards, they do not feature on voters list, and they do not get subsidized homes from the government schemes for underprivileged. His conclusion was they quite simply, do not exist.

VSP has started to work on the issue of these communities due to the insistence and leadership of Mr. Renke, as well as it was found that many representatives of various associated grassroots organizations participating in the programs or consultations organized by VSP have always raised the issues of NT/ DNT communities incurring in the field. Sharing of terrible incidences by them such as atrocities cases by Police on the community members, exploitations of women, religions superstition, displacement of their communities etc. has moved the VSP members to do respond on the field situation. Base on the consultations with various dialogues with field activists the focus of work is evolved to address Livelihood and Dignity issues of deprived communities. In this perspective VSP has worked intensively on the issues of NT / DNT communities along with its associated organizations in a network mode.

In collaboration with the organization of Mr. Renke namely 'Social Development Research Institute' (SDRI) in year 2001 VSP has initiated a livelihood experiment at village Bhogaon in Sholapur, a semi-arid region in Maharashtra. This livelihood experiment was evolved as a settlement model for the pastoral tribes so they can settle down and also base on this demonstration to advocate a policy with the State Government for a land to rehabilitate Denotified tribes. This livelihood experiment was 12 Gunthe[2] nature farming model experiment (inspired from Japanese scientist Masanobu Fukuoka's book one straw revolution) that looked at small scale, high-yield farming with minimum inputs to prove that poor communities can be self sufficient with even small amounts of land.

This engagement and further exploration led towards the initiating further activities such as capacity building of the leaders from the NT / DNT communities, initiating alliances to advocate entitlement issues such as food security, land, water, forest, employment, crematory ground, etc. Later this process of work is expanded to the other locations in Maharashtra State, and type of social interventions.

a. Description of the historical, social, political context of the social realities

The Nomadic and Denotified Tribes are National tribes, however in each State of India the communities are identified as per the policy of the respective State Government. The Nomadic and Denotified tribes constitute about five million of population in Maharashtra and about 60 million all over India. In overall India there are 313 Nomadic Tribes and 198 Denotified Tribes[3].

The problems of NT DNT communities in Indian context are deeply rooted from pre-colonial period. The issues are like no counting in census; there is no uniformity in the country about its classification and enumeration. The DNT are deprived of central political reservations and concessions although in some states they get the state facilities. The DNT are not categorized as a class under the constitutional schedules like the Scheduled Caste (SC) and Scheduled Tribes (STs). Some of them have been included in the respective State list of SC and STs, but there is no uniformity across the country.

In Maharashtra DNT and NT are categorizing as A, B, C, D. In Maharashtra State the Denotified Tribes and Nomadic Tribes are known as Vimukta Jati & Nomadic Tribes (VJNT). 11% seats are reserved for the VJNTs (A 3.5%, B 2.5%, C 3%, D 2%) in the State Sector. The de-notified tribes were originally listed as 'Criminal Tribes' but the Criminal Tribes Act of 1952 repealed the notification and recognized as 'de-notified' tribes. These were reclassified as 'habitual offenders' in 1959, which gives police to right to investigate them as suspects and examine if they have criminal tendencies. Due to these factors the communities are excluded from the mainstream development.

In the context of Maharashtra State the current National Commission of Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Commission (appointed in January 2015), Chaired by Bhilku Idate the communities identified the NT and DNT tribes in the list of Maharashtra[4] are as follows.

Denotified Tribes

1. Berad, 2. Bestar, 3. Bhamta, 4. Kaikadi, 5. Kanjar bhat, 6. Katabu, 7. Banjara 8. Rajparadhi. 9. Rajput-Bhamta, 10. Ramoshi, 11. Vadar, 12. Waghari 13. Chhapparbandh, 14. Bedar/ Bedaras, 15. Lodha/ Lodhi

Nomadic Tribes

1. Bajania, 2. Barda, 3. Badaga Jangam, 4. Bestar, 5. Bhand, 6. Bhartari, 7. Birhul, Birhor, 8. Charan, 9. Chenna- Dasar, Holaya- Dasar, Holey Dasari, 10. Chitodia, Chitodia Vaidu, Chitodia Lohar, 11. Garoda, Garo, 12. Gowari, 13. Gowali, 14. Hardas, 15. Jhadi, 16. Kathputliwale, 17. Khivat, Khiwari, 18. Mala Dasari, 19. Mala Masti, 20. Mukri, 21. Nat, 22. Pardhi, 23. Sapera, 24. Sindhollu, Chindollu, 25. Thakar, 26. Vaghari

As mentioned above even in Maharashtra State they are divided into several sub-castes and are included under different categories of reservations in different states / central level thus they do not have a inform identity. Most of these communities travel from one place to the other for their survival. Continuous wandering poses challenges regarding stability, shelter and livelihood. As a result they have to live in inhuman conditions and suffer from stigma of criminality, nomadism and atrocities from other communities and police.

Most of the tribes are deprived of their traditional occupations due to various new laws that are enforced. However due to lack of livelihood opportunities they are forced to beg, steal or undertake sex work. Moreover, they are excluded from the processes of development, political participation and inclusive growth as a result of the challenges they face due to their status. Collection of data about the NT/DNT communities is a very difficult task as they travel from one place to the other and do not have a permanent settlement.

Due to the wandering traditions of above communities over hundreds of years without any ostensible means of livelihood under the influence of the caste system, and the stigma of criminality attached to them they are forced to live under sub human conditions. It will be impossible for these tribes to enjoy human rights or the civil rights available to the citizens of India unless there is a positive intervention of the government in the form of Constitutional safeguards.

b. Purpose/ goals/ objectives of work

Through various consultative events VSP has identified purpose for work for Nomadic and Denotified communities by considering inputs from collaborating grassroots organizations. The overall purpose is to address the issues of Livelihood and Dignity of these communities at local level and in Governments policies.

The objectives for this work are as below.

- To generate awareness on human rights and legal provisions and to link with legal assistance so they would voice against exploitation by police and lawyers.
 - To empower women and youth from the communities through training and social mobilization so they take steps against injustice done to them, take action in ensuring food security and income stability.
 - To establish relevancy of education to their survival and social struggle. The process of education ensured with livelihood options thus making members self-sufficient rather than dependent.
 - To advocate use of Employment Guarantee Scheme implemented by Government for creating private assets for families of Nomadic and Denotified Tribes.
 - To provide training and mentoring support to the leaders to provide clear vision and strategies in solving community issues.
 - To create awareness and dialogue with policy makers so the rights of NT and DNT communities over the natural resources such as land and water are recognized.

2.1 Theoretical perspective

As a social development organization VSP felt it is important to work with NT DNT communities as a whole section from a policy improvement perspective as they are the most vulnerable population groups in Indian Society. Again in the view of defending human rights and social justice the women, children and aged person from these communities need to be protected more as they live in inhuman condition and face tortures of varied types.

The overall society needs to recognize them as citizens of this country in complete manner; they need opportunities of living life with dignity and exercising rights of development. Ultimately this is in the benefit for the wider good as prosperity grows in societies which are inclusive and respects developmental spaces for each other.

The multipronged perspective is adopted by understanding ground realities.

- The issue of Nomadic and Denotified Tribes population is not only of Livelihood and dignity but it is about identity, citizenship. In identity the concerns are whether their culture, their art, music, pursuit are recognized in a proper perspective. In Indian context citizenship to them means provisioning with Voter id issued by Election Commission, Aadhar Card (Unique Identification No.), Job Card under National Rural Employment Guarantee Scheme. Such documents are instrumental to social security such as health or welfare schemes such as entitlement for housing.
- In Maharashtra State only certain sections of NT DNT communities are united, so their concerns are known to public but the situation of many communities is not known in society. Thus to reach out with different communities speak to them understand their past and the challenges they are facing. Base on understanding facilitate actions that would empower them on their issues that are scattered in various locations, which are engaged in various occupations, represents diverse socio-cultural, lingual background.
 - Comparing to common habitation pattern the communities from Nomadic and Denotified are different, further these communities own identity are distinct from other NT / DNT communities in terms of cultural, social, political in which the language, music, art, livelihood skills etc. thus evolving Community Focus and ownership in planning and implementing the actions was critical. Therefore identifying leadership from the respective communities and facilitating them in leading community

actions has been a prime focus. Apart from this make special effort to take proactive action in consciously involving women to bring gender equality and collective approach.

- The intention of abilities enhancement of community members is that they run the activities themselves and sustain it in future. VSP has been stressing consciousness and actions of the community members particularly youths and women. The position has been to build the capacities of the community groups and local Institutions so they take continuous initiatives.
- Build network of the community base organisations so they take collective actions. Also a position to build alliances with other civil society organisations, academic institutions that are mutually expressing solidarity in the areas of environmental and sustainable development, Gender equality, Social Justice, Human rights and political empowerment.
- In the context of making policy recommendations the challenge is that there is no separate information about them in census record, and with most of the communities they don't have any government document which proves them that they are habitant or they are a citizen of India so evolving documentation and make representation with authorities as well as in media. Integration of the technology for effective data management, reporting, communication etc. which will help in the activities and while doing representations with stakeholders.
- Building Empowering and Inclusive Work Culture within working team and with the stakeholder in creating trusting environment to ensure open communication, teamwork, and respect for diversity. Evolve frank evaluation processes to emphasize that when there are setbacks or breakdowns learn from them to build robust effective strategies. Thus building professional approaches within organisational processes.

2.2 Strategies / approaches of organizing used and your rationale

The following strategies adopted to empower communities and their organizations so they raise voices in bringing positive changes. And to bring improvements in related policies advocate with the authorities, academicians, politicians and media.

I. Assisting leaders from the various NT DNT communities in facilitating their own communities and voicing community related issues through local actions.

The Primary Stakeholders are the members from the communities however to sustain relationship with them local leaders are required. Respective local communities do not accept other people from other communities as they are generally suspicious; get threatened about people from other communities. The language of a particular community, occupation, migration pattern, power dynamics within hamlet and with other villager's etc. matters a lot in deciding leadership. Thus finding the potential youth and women leaders from communities and provide them short term as well as long term training so they become the local resource for the communities. Ongoing information

and handhold support is being provided to the identified leaders on how to solve local issues such as case of atrocities, preparing documents for the entitlement of schemes.

II. Information and Trainings to the grassroots organizations so they work effectively in their field intervention areas with NT DNT communities.

The organizations are supported to work with NT DNT communities by enhancing their understanding through providing opportunities to participate in consultations, seminars, information and special trainings. In the process VSP has nurtured their organizations so they would support the communities to lead their own struggles from front.

III. Build State level network of community organizations and individuals so they articulate policy demands, and make representations with respective authorities.

To bring an understanding and consensus on a vision on how to reach out significant number of districts, to include communities of diverse background in common organizational process, to identify solutions and taking actions together several interactive sessions and workshops were held at several places with many organizations. Base on those deliberations it was decided to form State Level network called 'Lokdhara'. Network helped to articulate policy demands and make representation with respective authorities. The positions have been evolved through consultations, seminars and roundtables to recommend changes at the policy, implementation and at the societal level.

IV. Create an alliance with likeminded organizations and institutions for strengthening pressure in recommending favorable policies.

The issues of these population groups are being understood by other Civil Society organizations, Institutions in a solidarity perspective so partnering with them. It involved sharing information, collaboration with each other to achieve the broader purpose. VSP has partnered with some International NGOs, Trusts, Foundations etc. which have been instrumental in accessing financial support for projects interventions and knowledge base support. Collaborations with Academic Institute have been helpful in doing research in the field and articulating policy drafts. A number of subject experts and national activists have played significant roles of giving inputs and providing directions. They also played the role of critiquing and ensuring that the movement is on track. As a result of these alliances the issue has been understood from the empowerment and developmental perspective rather than just welfare.

V. Evolve alternative development models that could be replicated by communities and can be adopted in development policies of the Government.

While working on the issue VSP felt importance of developing models in livelihood, education and in cadre development focusing character of these communities. Models are evolved in consultation with communities and experts.

In Livelihood, for Land base livelihood a nature farming model on small plot (that is on 1/4th acre of land) that fulfils the family needs by adopting technique of Low External Input for Sustainable Agriculture, Parisar Bag model (Organic Nutrition Garden), In livestock poultry and goatery models coordinated through Local Self Help Group model, Agro-processing units such as Dal Mil processing unit, Agro services through local Youth Volunteer such as sprinklers, spiral separator on rental basis etc. are developed.

In education, Age Appropriate learning Model for the children identified who are having educational deficit through base-line assessment and the progress is being assessed through mid-line and end-line assessment. Social and financial inclusion is being imparted with the support of local government schools. In the process local youth are trained in the educational pedagogy and supported to facilitate learning in drought prone villages.

In Cadre Development: Yearlong Fellowship to nurture leaders from identified communities, Cadre development trainings. Reflect circles to raise critical understanding on the issues by community reflection mechanism etc.

Those models are shared and replicated in more locations with NT DNT communities. These models are suggested to policy makers to adopt for the benefits of the poor.

VI. Working with the related authorities and policy influencers.

On behalf of State Network and sometimes as an independent organizations worked with different authorities who have important stake in influencing decisions and policies.

- State and Central governments (These hold the stake as they make policies, but can neither be considered foes nor friends as the whole effort for policy change is targeted at the governments. However, it takes a lot of time and energy in convincing the governments to take any action in favor of the NT/ DNTs) and change the policies. Whenever VSP and its associates approached Government we found the decision makers have been buying time as for them it was conflict with the interests of other established communities or their political stands.
- Ministry of Social Justice & Empowerment have been helpful as this Ministry works for social justice and empowerment of the minorities yet, NT/DNT is not their only priority and hence it took a lot of time to convince the ministry.
- National Commission for De-notified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (NCDNT). This Commission is chaired by Mr. Balkrishna Renke so they have been as an instrument to suggest recommendations to the Central and State Governments.
- Experts, academicians and researchers and policy analyst have been continuously participated in collective dialogue to push the policy recommendations with policy influencers.

2.3 Skills and processes of organizing followed

In the process of organizing the NT DNT communities the skills and processes are required in the context of purpose that is evolved and challenges in that context. Here the challenge was to organize them that are

scattered in different locations and keep them together as they are from diverse background. The other challenge is to influence policy makers that are generally ignorant about the situation of NT DNT communities. The skills and processes reflected in the process of organizing are as follows.

- Skills of the field activist are essential to understand communities and their ability to instill trust within so they engage further in mobilization process. The challenge is to converse them in their language and in their context. Often in local situation their habitation is considered as a group of encroachers, criminals and threat to mainstream communities. The NT DNT communities are fearful of others so in such background it is important for the field activist to be nonjudgmental and facilitate empowering dialogue where they can fight with outsiders and insiders. The outsiders for the community are the village administrative authorities, Police, School etc. where building confidence to relate with them is essential. Also Inside within community they need to work on some cases like incidences such as violence on women from the family members or control by Jaatpanchayat (caste group) where they need to be supported to solve issues internally.
- The field activist are not readily available they need to be prepared. Thus training and cadre facilitation skill is needed. From the perspective of gender sensitivity and women empowerment women activists are needed to bring in the cadre. Cadre need to train on how to do the primary survey for gathering some community details, doing fact finding with certain documentation in cases like any atrocities etc.
- The other interesting area is of Leadership development of the community members. This is very critical to connect with the dynamics of a communication and convert a positive organizational atmosphere. Abilities are required to involve community members in the activities that are planned internally or externally. Internal activities such as running meeting, facilitating reflect circles etc. which would enhance learning and actions would be planned. The external activities which are being organized with the participation of the communities to voice out issues and demands. Activities like Protests, Demonstrations, Public hearing where the processes should be such that community leaders take lead and represent their positions.
- In building network higher organization skills are needed. This requires strong desire and passion to convey communities to come out of shell of their own sub caste and take broad positions together to advocate the wider issues of a community. The credibility of leading person and transparent review mechanism helps. In building coalitions and alliances with likeminded individual and organization need an extrovert and broad approach.
- The knowledge base work means articulation and documentation skill are very crucial. If the organizer has such skill then it gives a great recognition as an individual and to the collective. It creates good impact in present engagement and future possibilities. Studies and Research helped in advocating the issue. While doing primary survey a challenge is to develop a good volunteer base that can connect to the people and operate as team, go to the communities when they are available especially it is difficult to track people when they migrates for work. To do the secondary studies readiness is required from researcher to follow up with ample of various information sources because the data is inadequate on these communities. In certain cases it also requires to engage people who can articulate about the subject matter.
- For a policy dialogue with Government departments and other concerned systems efforts and skills needed to connect with local, State and National level of Governments. Needs skills to engage media representatives, academic scholars etc. However this part is tough because generally representatives from the mainstream section try to neglect thus along with skill of persons it is important to create pressure by organizing programs in public domain and consistently try to engage.

Impact of any social, economic, political and policy changes

In the Maharashtra context there have been caste base movements within NT DNT communities such as organization of Wadar or Ramoshi communities separately. The leadership of such caste base organizations has been in their comfort zone, the political agenda of each section has been separate, and these organizations have been politically affiliated to different political parties. So to overcome the dynamics of these organizations as a strategy we had to make constant effort to reach the newer leadership rather than established one.

In Maharashtra State the positive aspects is a history of resistance and social movements. One of the significant examples of such movement is of Dalit movement. For the struggle of NT DNT the Dalit movement is an inspiration and even source of some of the leaders which later took up issues of NT DNT communities.

Dalit movement is generally classified into reformative and alternative movements. The former tried to reform the caste system to solve the problem of untouchability. The alternative movement attempts to create an alternative socio-cultural structure by conversion to some other religion or by acquiring education, economic status and political power. It was an important to understand that this history has been reflective in the organizational processes of NT DNT.

In the changing scenario where villages are shrinking and the urban areas are expanding at mega speed where it is difficult to think development of NT/DNT communities separately. In the process of shrinking villages mainly NT DNT communities are forced to migrate out of villages due to distress situation. In expanding urban spaces it is difficult to keep original identity and they have forced to being part of unorganized sector. Thus while building network effort is to do ensure connect with the representative of all sections.

There are newer Acts which are being introduced are difficult one for the NT, DNT communities such as The Forest Acts which are good for environment in general, restricts their traditional livelihoods like hunting and challenges their identities. So in the process of suggesting policies one has to careful to understand complexities of impact of one on the others.

Challenges of changes that posed for work

Overall it has been challenging to mobilize NT DNT population which is still in the clutches of Illiteracy, ignorance, blind faith, prejudices, poverty, and insecurity. The Jatipanchayats had their own dynamics and political agenda. Moreover their treatment of women was unjust and discriminatory. As NT/DNT community members migrate frequently, it has been difficult to organise them into certain structured activities like reflect circles. This affects the solidarity of the NT/DNT communities as a whole

The NT/DNT communities are always skeptical about anyone who makes an effort to come closer. If they find anyone has sophisticated language and dress etc. they don't mingle with them and consider as outsiders. Illiteracy and lack of education in the community leaders makes it difficult to communicate with them, sensitize them and convince them about the common perspectives. There is lack or shortage of motivated, committed and visionary leaders in the communities.

Organization building of NT/DNT communities at State Level has been a difficult task as the NT/DNTs are not a homogeneous group but a heterogeneous mix of a variety of different tribes. Unlike, other social groups, these communities have strong bond with their own castes, sub castes and tribes.

Building common understanding on the direction and position also has been a big challenge. The NT/DNTs are not categorized as a class under the Constitutional schedules. There is no uniformity across the country in which list/ category they are included. Enough information on NT/DNT is not available as there is lack of literature on the NT/DNT. It is difficult to identify solutions that are in tune with the life pressures of the NT/DNT.

How have you responded to these challenges? Overall successes achieved so far

Due to this above collective efforts attention and visibility is evolved in Maharashtra State on the issues of NT / DNT communities. To do this a network of likeminded organizations were created. This network 'Lokdhara' became a forum of the representatives from all over India. VSP has collaborated with this collective to strengthen this network which is working on issues of poverty and marginalization. Regional level Jan sunvai (public hearing) was conducted in Maharashtra State. To highlight issues of identity and dignity participated in various consultations such as Asian Social Forum, Hyderabad (2003), in World Social Forum, Mumbai (2004), and in the Maharashtra Social Forum, Ahemednagar (2007).

Similarly on 16th March 2005 The National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes (NCDNSNT) is set under Ministry of Social Justice and Empowerment, Government of India, to study various developmental aspects of denotified and nomadic or semi-nomadic tribes in India. Fortunately due to the earlier efforts of Lokdhara and VSP Mr. Balkrishna Renke has proved the credibility and he got appointed as a Chairperson. The Commission submitted its report on 2 July 2008 making several recommendations, which include that same reservations as available to Scheduled Castes and Scheduled Tribes be extended to around 11 crore people of denotified and nomadic or semi-nomadic tribes in India; it is also recommended that the provisions of the Scheduled Caste and Scheduled Tribe (Prevention of Atrocities) Act, 1989 be applicable to these tribes as well.[5]

As a strategy of community intervention VSP has identified community leaders and supported for a yearlong processes through Fellowship program. These Fellows in their respective community members to access the important documents such as ration card, job card and voter's ID, Community members received support/ assistance in accessing several government schemes, Land claim applications (of the encroached lands) were registered under various schemes. Community members learnt to raise their voice and fight for their Rights. They understood that representation in the bodies of local governance is an important weapon and can be used to get decisions in their favor. Community member successfully led several cases.

In field VSP has introduced innovative models related to the livelihood and education. The models VSP has developed are 12 Gunthe Nisarg Sheti (Nature Farming on 12 Gunthe), Parisar Bag (Organic Nutritive Backyard Garden), Poultry farming, Goats rearing etc. In Education VSP has evolved Learning Centres to promote quality education, financial literacy and saving in children. For the capacity building of grassroots leaders VSP had conducted the Training of Trainers on different themes such as Gender Sensitization, nature farming, quality education, leadership and personality development, strengthening local self institutes like School Management Committee, management of organisations like financial compliances and systems. Published booklets on the issues of NT/DNT, A shadow report on what are the policies and what is the situation was published.

Lessons learned

If community worker or the civil society organization (CSO) is outside of the community then there is difficulty in reaching out to the community members. There is non-acceptance to the community workers generally at family the head of the family as well at community level the Jatipanchayat (Caste based organization) opposes the entry of outsiders. Generally there is feeling of insecurity and suspicion. Mostly they have a feeling of threat from police, big landlords, and political leaders. The lesson we draw is to identify the potential community members especially youth to train them so they take a lead in taking community actions. VSP also made an effort to bring women community members in the cadre of leaders through leadership training. Young women were not willing to join even after lot of efforts this is due to their anxiety about criticism from the community members. Old and married women have participated in such training, but for that VSP had to evolve a special consideration particularly to allow their husband to accompany them in trainings.

Developing and sustaining Empowerment Processes has been difficult tasks. The reasons have been cases of distressed migration of families, displacement of settlements, and effect of any atrocities where the community members get affected. Overall loss of commons such as grazing land, forest and water bodies affect livelihood of the community including spaces for dwelling in transit. The town planning process affects hutments of the NT /DNT communities as the Government land is allocated for other purpose. In such cases it becomes difficult to keep up the spirit of community engagement, leadership development and the community actions towards development processes.

Local established village leadership, Police resists the involvement of NGO as they feels in the situation of any case they are being questioned by NGO. There has been risk to the life to the activists associated with organization as some times vested interest groups threaten the activist and community. As organization VSP bring forth a discussion of such possible dynamics and what could be the support mechanism. In case of any undue event VSP tries to connect with legal expert, doing follow up with the administrative systems, and using media to get support and justice.

In advocacy efforts the challenge has been to mobilise right type of people and creating a plan where everyone agrees to it. Budget has been always a matter of concern. The efforts have been to do the prior preparation on what are the possible solutions, discussing the plan of action in inclusive manner and taking actions on the commonly decided points only.

What to do differently? Why?

The overall issue needs to understand and approach differently, as per our understanding the prime issues are pertaining to the policy and practices. Considering estimated 13 crores of population is not properly protected under policies of Indian Government means the policies are not inclusive and even after 70 years of independence citizen are struggling to get democratic rights is a concern. The practices of these communities who are divided in 750 castes and 1620 sub-castes are inhumane, practices by other powerful communities and within the communities need to be addressed.

VSP would like to strengthen a process of change from within. It means supporting communities to find out multiple ideas for changing the situation. The unique skills such as art and culture can be converted as strong points. Organisationally we would be keen in developing further in livelihood and education as we feel these are the basic areas to work on.

The other area is to working overall societal perspectives, policies, programs so these communities are protected. The approach would be asserting stakes of the communities who have been serving others.

We would consider taking a nationwide a special drive to evolve a policy framework to address all rights of the communities as citizens like housing, health, education, protection from abuse etc.

There are areas which need to be taken as campaign itself like

- Demanding for uniform system of classification of these tribes.
- Inclusion of NT/DNTs in the same category of reservation lists at the central and state levels. (At present they are included in different categories e.g. the Banjara Improvement in the access to entitlements in terms of ration cards, job cards and other documents required for accessing various government schemes such as housing, land, MGNREGA or other livelihood options.
- Issue of Voters' ID cards to all community members and ensure that they are able to exercise their fundamental right to vote.
- Removal of the mandatory submission of non-creamy layer certificate while applying for professional courses or jobs etc.
- Provision for livelihood options and skill development opportunities.

Future vision of work

VSP has a vision that NT/ DNTs will have the required documents; they have access to education, free healthcare and even subsidized food grains from shops run by the Public Distribution System. The domicile is very important to claim the benefits of being citizen of India. Special consideration is required as the NT/ DNTs are constantly on the move due to type of their occupations. Many of them have started settling down for them advocating land rights or house titles. They will have permanent address and other documents so they can claim for development. They will have access to welfare schemes as through policy advocacy work they will have of their basic credentials and basic citizenry rights – such as voter's ID card and the right to vote. Special effort would be required to ensure that they are able to exercise their fundamental right to vote.

Some of the occupations they used to take up such as entertainers have become irrelevant in today's changing world, while some others like hunting, collecting fruits and seeds etc. have been banned by the new forest laws thus alternatives has to be thought. They need to supported and facilitated to adapt the changing job scenario with required education and development support. It will help to throw away the compulsions to beg, steal or become sex workers. Some demands which would be focussed such as removal of the mandatory submission of non-creamy layer certificate while applying for professional courses or jobs etc.

VSP looks forward for creating and popularizing more models of their Livelihood and development at larger scale in which their dignity is ensured, especially of women.

Optimum use of development schemes of the government so the NT/ DNTs are included in the developmental process and continue to come out of poverty, and becomes as empowered communities. In the process there will be assertion for gender justice, child friendly development scenario where there is no child trafficking, child labour etc.

[1] A caste or order of wandering beggars and musicians found in the Maratha Districts of the Central Provinces. The name is derived from the Marathi word *gondharne*, to make a noise.

[2] 12 gunthe : 121 square yards / approximate one-fourth acre piece of land.

[3] http://www.academia.edu/4294914/The_Contemporary_Challenges_to_De-Notified_and_Nomadic_Tribes_of_Maharashtra_in_India

[4] <http://socialjustice.nic.in/writereaddata/UploadFile/Draft%20List%20of%20Denotified%20Tribes%20for%20Mail.pdf>

[5] https://en.wikipedia.org/wiki/National_Commission_for_Denotified,_Nomadic_and_Semi-Nomadic_Tribes

Compassion to Social Responsibility: Bridging the Gap for a Better Society

Dr. Swati Dharmadhikari

Human civilization has always recognized the importance of giving back to society. The notion of charity, deeply rooted in ancient cultures, remains relevant today as a foundation for social welfare. Across generations and communities, surplus wealth and resources have been considered tools for alleviating the suffering of others. This transformation of compassion into structured social responsibility continues to shape the world we live in.

The Legacy of Charity

Since time immemorial, charity has been an integral part of various religions and cultures. Religious doctrines have emphasized helping the underprivileged, whether through monetary contributions or material aid. This altruistic principle—giving without expecting anything in return—is echoed in Hinduism, Buddhism, Jainism, and Islam, where it is prescribed that a certain portion of one's income or savings must be allocated to helping others.

For instance, Islam advocates dedicating 2.5% of one's total savings to charity (zakat). Globally, individuals often contribute 3-5% of their income to philanthropic causes. These acts, described by scholars like Sternberg as "altruism," symbolize selfless service where personal gain is absent, but societal benefit is profound.

The Transition to Responsibility

The idea of social responsibility has evolved over time. Historically, kings and affluent families were the primary benefactors for societal welfare. In medieval Europe, beggar shelters were established, and charitable donations were a common practice. However, with political transitions came a paradigm shift—the emergence of the "welfare state." Governments began assuming responsibility for vulnerable populations, embedding welfare policies within legal frameworks.

India's Constitution, for instance, enshrines provisions for the upliftment of marginalized groups. Specific schemes have been tailored for women, children, the elderly, the disabled, and economically disadvantaged sections. Despite these efforts, a significant challenge persists: ensuring these benefits reach the deserving.

Bridging the Gap: The Role of Social Workers

While policies exist, their implementation often falters, especially in rural areas where illiteracy and lack of awareness prevent individuals from accessing benefits. Social workers play a pivotal role in this regard. They act as facilitators, raising awareness, guiding individuals through bureaucratic hurdles, and ensuring that government schemes reach the intended beneficiaries.

An inspiring example is a disabled student struggling to commute to his college. With the intervention of social workers and his peers, he received a wheelchair and a special tricycle, transforming his life and enabling self-reliance. Similarly, social workers have helped distressed women find shelter, vocational training, and eventual independence, demonstrating the power of collective action.

From Welfare to Development

In modern times, the focus has shifted from mere welfare to sustainable development. Instead of offering temporary solutions like alms to a beggar, empowering individuals through skills and education ensures long-term self-reliance. This transformation aligns with the philosophy of Paulo Freire, who emphasized "conscientization," or raising awareness among the underprivileged about their rights and opportunities.

The Rise of Corporate Social Responsibility (CSR)

Recognizing the limitations of individual efforts, the Indian government introduced Corporate Social Responsibility (CSR) under the Companies Act 2013. Large corporations now contribute significantly to initiatives like education, healthcare, and gender equality. These investments are crucial for addressing systemic challenges, but their effective utilization remains paramount.

Social workers serve as the critical link between corporate funding and ground-level implementation, ensuring transparency and directing resources to where they are needed most. For instance, hospitals offering subsidies to economically disadvantaged patients rely on social workers to verify eligibility and allocate aid appropriately.

Compassion in Action

The journey from compassion to social responsibility reflects humanity's enduring commitment to the collective good. It is a reminder that acts of kindness—whether small gestures or large-scale initiatives—can transform lives. However, as society evolves, so must our approach. The emphasis should not only be on giving but also on empowering, ensuring that every individual has the opportunity to lead a dignified and self-reliant life.

In the words of Prime Minister Narendra Modi, there are only two types of people: those who need help and those who can offer it. It is through bridging this divide that we can create a just, equitable, and compassionate world.
